सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

डिजिटल हिंदी

आंचलिक कार्यालय, पटना

डिजिटल हिंदी

संरक्षक

बी.एस. हरिलाल
फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, पटना

संपादन एवं संकलन

के.एन. दूबे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), आंचलिक कार्यालय, पटना

सहयोग

हेमंत कुमार
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

रश्मि रंजन रश्मि
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, दरभंगा

रेवती कुमार
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, गया

विजय भूषण सिन्हा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, रांची

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

पटना अंचल

विषय सूची

रूपरेखा..... 04

भाषा और तकनीक 05

भाषा और भाषाई विकास यात्रा.....08

हिंदी भाषा शिक्षण और डिजिटल माध्यम.....65

डिजिटल हिंदी का भविष्य 73

हिंदी के विकास में वेब मीडिया का योगदान.....81

राजभाषा और प्रौद्योगिकी का क्षितिज.....84

हिंदी भाषा चुनौतियां और समाधान 90

यूनिकोड: तकनीक और भाषा का सेतु.....88

उपसंहार.....95

डिजिटल हिंदी (Digital Hindi)

रूपरेखा

आधुनिक युग तकनीक का युग है. रोबोटिक्स साइंस एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने विकास की गति को बेहद तेज कर दिया है. सूचना क्रांति के इस युग में पूरी दुनिया को एक साथ एक मंच पर ला खड़ा किया है. दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक लोग आपस में जुड़ गए हैं. डिजिटल युग यही है.

सूचना एवं संचार केवल विचारों को ही एक-दूसरे तक नहीं पहुँचाती है, बल्कि ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीक को भी एक समाज से दूसरे समाज तक ले जाती है. मानव सभ्यता के विकास में संचार-सूचना का बहुत बड़ा योगदान रहा है. जितनी गति से सन्देश का प्रसार होता है, विकास की रूपरेखा को भी उसी रूप में आकलित किया जा सकता है. शुरुआती दौर में, सन्देश पहुँचाने के लिए सन्देश-वाहक का उपयोग किया जाता था, जिसमें दूरी के हिसाब से कई-कई दिन लग जाते थे. सूचनाओं के आदान-प्रदान में समय लगने के कारण ज्ञान का प्रसार भी उस तेजी से नहीं हो पता था. कालांतर में, सड़क-परिवहन ने इस दूरी को कम किया तो आधुनिक युग में तकनीक-इंटरनेट ने पूरी दुनिया को एक 'क्लिक' पर ला खड़ा किया. अर्थात अब सेकेंड में आप दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक सन्देश भेज सकते हैं.

इस क्रन्तिकारी परिवर्तन ने भाषा को एक वृहत आयाम दिया. भाषागत विविधताओं को विराम मिला और एकरूपता को महत्त्व मिलने लगा. सांस्कृतिक रूप से भी विश्व ग्राम की संकल्पना साकार होने लगी और आज इसी कारण, सांस्कृतिक एवं ज्ञान के एकीकरण से आधुनिक

समाज एक साथ विश्व के सभी त्योहारों को मनाता है, घटनाओं पर प्रतिक्रियायें देता है. यही तो ग्लोबल विलेज है.

एक शहर से दूसरे शहर में विकास की गति का सबसे बड़ा वाहक तकनीक ही है. आज का युग तकनीक का है, जिसे "टेक्नोयुग" भी कह सकते हैं, हम प्रत्येक काम में टेक्नोलॉजी का प्रयोग करते हैं। हम अब टेक्निकली स्मार्ट बन गए हैं या कुछ इस रास्ते पर चल रहे हैं और इन सबमें हमारी नई पीढ़ी हमसे और तेजी से दौड़ रही है।

भाषा और तकनीक

तकनीकी विकास के मूल में संचार एवं सूचना की प्रमुखता होती है, जो भाषा रूपी साधन से ही संभव हो सकती है. तकनीक को थोड़ा भाषा के साथ जोड़कर देखते हैं। आज कल सभी कंप्यूटर में टाइपिंग आसानी से कर लेते हैं. अब हिंदी भाषा की बात कर लेते हैं. हिंदी भाषा की विशेषता यह है कि यह एक सर्वसमावेशी भाषा है, इसमें संस्कृत से लेकर भारत की प्रांतीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं के शब्दों को अपने अंदर समा लेने की क्षमता है। तकनीकी के इस युग में हिंदी ने भी अपने परंपरागत रूप को समय के अनुरूप ढाल लिया है। कंप्यूटर के साथ हिंदी भाषा ने अपना चोली–दामन का साथ बना लिया है. आज तकनीक के प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी को अपनाना आसान हो गया है। टायपिंग की सुविधा से लेकर वॉइस टायपिंग की सभी सुविधायें आज उपलब्ध हैं। आवश्यकता केवल इस नवीनतम तकनीक को हिंदी भाषा के उपयोगकर्ताओं को अपनाने की है। ओसीआर अर्थात ऑप्टीकल कैरेक्टर रेक्गीशन अर्थात प्रकाश द्वारा वर्णों की पहचान कर पुराने देवनागरी हिंदी टेक्स को युनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित करने की सुविधा से पुरानी किताबों का डिजीटलाइजेशन करने में सहायता हो रही है, इससे संस्कृत भाषा में लिखे गये लेख

सामग्री को आसानी से हिंदी के यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित किया जा सकता है। इससे पुराने शास्त्र, ग्रंथों के डिजीटलाइजेशन से ज्ञान के संवर्धन में भी दिशा मिल रही है। प्राचीन ग्रंथों की दुर्लभ प्रतियों का डिजीटलाइजेशन करने से उसमें उपलब्ध ज्ञान का फायदा सभी को होगा।

भारत सरकार ने हिंदी में विज्ञान तथा तकनीकी, साहित्य एवं शब्दावलियां उपलब्ध हों, इसलिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गयी है, जिसका कार्य ज्ञान–विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्रों में प्रयोग में आने वाले शब्दों का हिंदी पर्याय उपलब्ध कराने वाले शब्दकोशों का निर्माण करना है। यह आयोग ज्ञान–विज्ञान की लगभग सभी शाखाओं से संबंधित शब्दावलियों का निर्माण करती है। यह आयोग हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास और समन्वय से संबंधित सिद्धांतों का वर्णन और कार्यान्वयन का कार्य करता है। राज्यों में विज्ञान की विविध शाखाओं द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में किए गये कार्यों का राज्य सरकारों की सहमति से उनके अनुरोध पर शब्दावलियों को अनुमोदन भी प्रदान करती है। आयोग द्वारा तैयार की गई शब्दावलियों का आधार लेकर विभिन्न विषयों की मानक पुस्तकों और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दकोशों का निर्माण करना और उसका प्रकाशन करने का कार्य वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग करता है। साथ ही, उत्कृष्ट गुणवत्ता की पुस्तकों का अनुवाद भी किया जाता है।

हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में ऑनलाइन हिंदी पुस्तकों को पढ़ने की सुविधा, जैसे -गूगल बुक्स और कींडल बुक्स आदि ऑनलाईन सुविधाओं की सहायता से आप अपनी पुस्तक के कुछ अंश मुफ्त में अथवा पैसों का भुगतान कर अपने मोबाईल पर ही पढ़ सकते हैं। गूगल बुक्स पर

आप अपनी मनपंसद पुस्तकों के कुछ अंश पढ़ सकते हैं। इन पुस्तकों को आप कंप्यूटर, लैपटॉप पर गूगल डाउनलोडर की सहायता से पीडीएफ फाईल में डाउनलोड करके रख सकते हैं, उन्हें बाद में पीडीएफ फाईल में भी पढ़ सकते हैं। गूगल वॉइस सर्विस की सहायता से आप बोलकर टाइप होने वाली सुविधा से पाठ को पढ़कर टाइप करवा सकते हैं। इस सुविधा से हिंदी टायपिंग के लिए लगने वाले समय में बचत होती है। एन्ड्रॉइड मोबाइल पर हिंदी की ऑफलाइन शब्दावली का प्रयोग की सुविधा से अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों के हिंदी शब्दार्थ ढूँढने में भी सहायता मिलती है। इससे हिंदी के तकनीकी विकास को और भी गति मिलेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भोपाल में वर्ष 2015 में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में अपने वक्तव्य में कहा था कि, जो टेक्नोलॉजी के जानकार हैं, उनका कहना है कि आने वाले दिनों में डिजिटल वर्ल्ड में तीन भाषाओं का दबदबा रहने वाला है, अंग्रेजी, चाइनीज, हिंदी। जो भी टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए हैं, उन सबका दायित्व बनता है कि हम भारतीय भाषाओं को भी और हिंदी भाषा को भी टेक्नोलोजी के लिए किस प्रकार से परिवर्तित करें। जितनी तेजी से इस क्षेत्र में काम करने वाले विशेषज्ञ हमारी स्थानीय भाषाओं से लेकर हिंदी भाषा तक नए सॉफटवेयर तैयार करके, नए ऐप्स तैयार करके जितनी बड़ी मात्रा में लाएंगे, उतना अपने आप में भाषा का एक बहुत बड़ा बाजार बनने वाली है। अत: डिजिटल दुनिया में हम क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से जितना अधिक योगदान करेंगे़ वह हमारे देश की तरक्की और प्रगति के लिए उतना उपयोगी साबित होगा। तभी हम समस्त देशवासियों को समान अवसर उपलब्ध करा पायेंगे। जो इंटरनेट केवल अंग्रेजी में उपलब्ध होने के कारण मुट्ठी भर लोगों का पैरोकार बना हुआ है, वही जब भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होगा, तो समस्त भारतीयों के लिए बहुत कल्याणकारी साबित होगा। केवल भाषा के आधार पर किसी को ज्ञान को वंचित कर देना

किसी भी तरह से सही नहीं है। भाषा हमारे जीवन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। भाषा की ही वजह से मनुष्य और अन्य जीव-जंतुओं में अंतर है।

भाषा और भाषाई विकास-यात्रा

देखा जाए तो, हजारों वर्षों के ज्ञात मानव इतिहास में मनुष्य के साथ ही उसकी भाषाओं का भी विकास हुआ। इस विकास क्रम में मनुष्य की संपूर्ण प्रगति, ज्ञान और अनुभवों को भाषा के ही माध्यम से दर्ज किया गया है। हमारी भाषा हमारे पूर्वजों की विरासत और समाज की धरोहर होती है। यदि हमारी विरासत और धरोहर पर खतरा मंडराएगा तो निश्चय ही हमारे अस्तित्व पर भी खतरा आएगा। आज के दौर में भाषाओं को संरक्षित करना और बचाना एक बहुत बड़ी चुनौती बन गयी है। भूमंडलीकरण व उदारीकरण के इस दौर में पूंजीवाद सर्वाधिक ताकतवर होकर उभरा है। इस दुनिया के महत्त्वपूर्ण संसाधनों पर कुछ मुट्ठी भर लोगों का कब्जा और वर्चस्व स्थापित होता जा रहा है। उदारीकरण में यदि यह तथ्य पूंजी के लिए उचित है कि बड़ा लगातार बड़ा होता जा रहा है और छोटा या तो छोटा बने रहने के लिए अभिशप्त है या समर्पण करने के लिए बाध्य है तो यह स्थिति भाषाओं के लिए भी यथावत लागू होती है। पूंजीवाद ने भाषाओं को बहुत अधिक प्रभावित किया है। बड़ी भाषाओं के बढ़ते प्रभाव से छोटी भाषाएं अत्यधिक संकट में आ गयी हैं। विश्व में लगभग 5000-6000 भाषाएं बोली जाती हैं। एक सर्वे से पता चला कि विश्व की शीर्ष 25 भाषाओं को विश्व के आधे से अधिक लोग बोलते हैं। शेष आधे लोग शेष भाषाओं को बोलने वाले हैं। इनकी संख्या में भी लगातार कमी आती जा रही है । इस वजह से बहुत सारी भाषाएं संकटग्रस्त और लुप्तप्राय श्रेणी में आ गयी हैं। बहुत सी भाषाएं मर चुकी हैं और बहुत से मरने की कगार पर खड़ी हैं।

विविधताओं से भरी पूरी दुनिया में बहुभाषिकता की स्थिति में लगातार कमी आती जा रही है। भारत पूरी दुनिया में इससे सर्वाधिक प्रभावित है। भारत पूरी दुनिया में अपनी विविधताओं के लिए जाना जाता है। यह विविधता भाषा व संस्कृति के क्षेत्र में सर्वाधिक है। भारत की भाषाएं देश की धरोहर और विरासत हैं। भाषाओं के लुप्त होने से देश की भाषा रूपी अमूल्य धरोहर और पूर्वजों की विरासत पर गंभीर संकट आ गया है। 21वीं सदी में भाषाओं के विलुप्त होने की रफ्तार बहुत तेजी से बढ़ी है। इस संबंध में भाषिक जगत में 'सारे' नामक भाषा की चर्चा गरम है। पिछले वर्ष अप्रैल माह में अंडमान के दक्षिणी द्वीप में बोली जाने वाली सारे नामक यह भाषा अपनी अंतिम बोलने वाली महिला लीचो की मृत्यु के साथ ही लुप्त हो गयी। ग्रेट अंडमानी जनजाति की यह महिला विभिन्न गंभीर बीमारियों की वजह से मरी। अपने अंतिम दिनों में अपनी पीड़ा के साथ-साथ यह महिला अपनी भाषा के अपने साथ लुप्त हो जाने की पीड़ा से भी बहुत दुःखी रहती थी। इसका कारण यह था कि उसके समुदाय के लोगों ने अब अपनी मातृभाषा को छोड़कर अन्य दूसरी भाषाओं को अपना लिया था। लीचो की मृत्यु के साथ उसकी भाषा 'सारे' की मृत्यु की घटना कोई पहली घटना नहीं है। इससे पहले वर्ष 2010 में बो भाषा की मृत्यु उसकी अंतिम भाषाभाषी बोआ की मृत्यु के साथ हो चुकी है। वर्ष 2010 में अंडमान से खोरा भाषा भी लुप्त हो चुकी है। अभी वहाँ पर एक जनजाति भाषा 'जेरू' को बोलने वाले केवल तीन ही लोग बचे हुए हैं। इसके अलावा विश्व में ऐसी अनेक घटनाएं पूर्व में भी हो चुकी हैं। एटलस ऑफ वर्ल्ड लैंग्वेज इन डैंजर' की एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 1950 से इस विश्व में 230 भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं। वर्ष 2001 में इस एटलस का पहला संस्करण जारी किया गया था। उस समय लगभग 900 भाषाओं को विलुप्त होने के खतरे की श्रेणी में रखा गया था। वर्ष 2017 में छपे इसके एक संस्करण के अनुसार इस श्रेणी में अब भाषाओं की संख्या बढ़कर 2464 हो गयी है। दुनिया के 151 देशों

की भाषाएं संकट के इस दौर से गुजर रही हैं। इन आंकड़ों से समस्या की गंभीरता का पता चलता है। यूनेस्को ने भारत की 197 भाषाएं, संयुक्त राज्य अमेरिका की 191 भाषाएं, ब्राजील की 190 भाषाएं, चीन की 144 भाषाएं, इंडोनेशिया की 143 भाषाएं, मेक्सिको की 143 भाषाएं, रूस की 131 भाषाएं, आस्ट्रेलिया की 108 भाषाएं संकटग्रस्त सूची में चिह्नित किया है। इन आंकड़ों का विश्लेषण किया जाए तो पता चलता है कि भाषाओं के लुप्त होने की रफ्तार निकट भविष्य में बहुत तेज होने वाली है। यूनेस्को का आकलन है कि यदि भाषाओं के लुप्त होने की यही रफ्तार रही तो इस शताब्दी के अंत तक दुनिया भर से 50 से 90 प्रतिशत भाषाएं लुप्त हो जाएंगी। युनेस्को के अनुसार दुनिया भर में भारतीय भाषाओं पर संकट सबसे अधिक है। यूनेस्को की सूची के अनुसार अहोम, आंद्रो, रांगकास, सेंगमई और तोल्चा भारतीय भाषाएं अब तक मर चुकी हैं। भाषाओं की मृत्यु पहले भी होती थी, लेकिन 21वीं सदी जैसी भाषाओं की व्यापक विलुप्ति पहले कभी नहीं देखी गयी। पीपुल्स लिंग्विस्टिक्स सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा देश में विभिन्न राज्यों में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार पिछले 50 वर्षों में 220 भाषाएं मृत हो चुकी हैं। भारत में जन जातीय समुदाय, घुमंतू समुदाय और तटवर्ती समुदाय के लोगों की भाषाओं पर सर्वाधिक संकट है। बैंकों एवं अन्य सरकारी संस्थानों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के कारण हम राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। इससे हमारा व्यवसाय भी बढ़ा है। हम ग्राहकों के साथ उनकी भाषा में संवाद करते हैं और उन्हें अपनी सेवाएं हिंदी में उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं। उन्होंने कहा कि एक समय था जब हम तकनीकी खामियों का फायदा उठाते हुए हिंदी पत्राचार से मुख मोड़ते हुए, पुन: अंग्रेजी की ओर उन्मुख हो जाते थे, परन्तु आज यूनिकोड के आने के बाद हम तकनीकी खामी का बहाना नहीं बना सकते। कम्प्यूटर ही नहीं मोबाइल पर भी यूनिकोड के कारण हिंदी में टाइपिंग की सुविधा उपलब्ध होने के कारण

रोमन में भी हिंदी टाइपिंग की सुविधा उपलब्ध है। इतना ही नहीं आज गूगल, माइक्रोसॉफ्ट आदि कंपनियां वॉयस टाइपिंग टूल भी उपलब्ध करा रही हैं, जिसके द्वारा हम मोबाइल में बोलकर पत्र अथवा संदेश आदि टाइप कर सकते हैं. वह भी पूरी शुद्धता के साथ। कई बार तो इसमें सिर्फ कॉमा फूलस्टाफ आदि ही ठीक करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार हिंदी तेजी से डिजिटल युग की भाषा बनती जा रही है। बस हमें उनका उपयोग अपने कार्यों में उपयोग कर हिंदी का प्रचार-प्रसार करना होगा।

गद्य, पद्य और साहित्य से लदी हुई हिंदी की आम छवि डिजिटल जगत में तेज़ी से बदलती दिख रही है. हिंदी अपने नए अवतार में युवाओं के एक वर्ग को 'कूल' लगती है. ढेरों तकनीकी सुधार और लिखावट के तरीके में मामूली बदलाव का इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग करने वालों की संख्या पर भी अब असर दिखाता है. कंप्यूटर पर भाषाओं की तकनीक के जानकार मानते हैं कि इंटरनेट पर अब अंग्रेज़ी से ज़्यादा हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाएं फल-फूल रही हैं. इंटरनेट की सबसे बड़ी कंपनी गूगल ने बीते दिनों एक साक्षात्कार में कहा, इंटरनेट पर अगले 30 करोड़ नए यूज़र्स अंग्रेज़ी नहीं बल्कि भारतीय भाषाएं बोलने वाले आएंगे.

हिंदी के चलन में आई तेज़ी के लिए तकनीकी सुधार भी काफ़ी हद तक ज़िम्मेदार है. सीडैक जैसी सरकारी और कई गैर-सरकारी संस्थाओं ने हिंदी फॉन्ट्स बनाने और उनमें सुधार के लिए महत्वपूर्ण योगदान किया है. भारत सरकार का उपक्रम सीडैक (प्रगत संगणन विकास केंद्र) पिछले करीब 25 सालों से कंप्यूटरों पर भारतीय भाषाओं की उपलब्धता बढ़ाने और उसे बेहतर करने पर काम कर रहा है. संस्था के निदेशक, प्रोफेसर रजत मूना मानते हैं कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की तकनीक में जो सुधार किए जा रहे हैं, उससे इंटरनेट पर उनकी

उपयोगिता बढ़ेगी. उन्होंने कहा, "सीडैक शुरुआत से ही हिंदी को डिजिटल जगत में प्रयोग के लिए तकनीकी तौर पर और आसान बनाने पर काम कर रहा है.

भारत की भाषाओं को डिजिटल माध्यमों में समृद्ध करने के लिए यह एक बहुत बड़ा सुअवसर हमारे पास आ रहा है। समस्त देशवासियों को उनकी भाषा में सभी संसाधन उपलब्ध कराना बड़ी चुनौती है। इस चुनौती से निपटने के लिए अधिक-से-अधिक सामग्रियों को भारतीय भाषाओं में तैयार करना होगा। जब तक देशवासियों को उनकी भाषा में सामग्री उपलब्ध नही करायी जायेगी, तब तक न तो इंटरनेट व कंप्यूटर की असीम क्षमताओं का समुचित प्रयोग किया जा सकेगा और न ही पूरी तरह से डिजिटल क्रांति लायी जा सकेगी।

केपीएमजी द्वारा जारी की गयी एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2021 तक भारत में हिंदी के 201 मिलियन, बंगाली के 42 मिलियन, तेलुगु के 31 मिलियन, तमिल के 32 मिलियन, मराठी के 51 मिलियन, गुजराती के 26 मिलियन, कन्नड़ के 25 मिलियन, मलयालम के 17 मिलियन और अन्य भाषाओं के 110 मिलियन इंटरनेट प्रयोगकर्ता होंगे। इन सभी भाषा भाषियों को उनकी भाषा में ही समाचार, विज्ञापन, संगीत, वीडियो, डिजिटल राईट अप, भुगतान पोर्टल, ऑनलाईन गवर्नमेंट सर्वीसेज, डिजिटल क्लासीफाईड उपलब्ध करवाना होगा, तभी देश में डिजिटल क्रांति का स्वप्न साकार होगा। भारत में अंग्रेजी का यह उच्चतम स्थान भविष्य में उच्चतम नहीं रह जायेगा। भारत में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की बढ़ती संख्या, बढ़ती डिजिटल साक्षरता, सस्ते होते डाटा प्लान, स्मार्टफोन की बढ़ती उपलब्धता से भारत की क्षेत्रीय भाषायें इंटरनेट पर अपनी मौजूदगी को 18% की दर से बढ़ा रही हैं, जबकि अंग्रेजी भाषा की वृद्धि दर 3% है। इसी गति से यदि भारतीय भाषायें इंटरनेट पर बढ़ती रहीं तो वर्ष 2021 में भारतीय भाषाओं में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की

संख्या 536 मिलियन हो जायेगी जो कि भारत में इंटरनेट पर अंग्रेजी प्रयोक्ताओं की तुलना में बहुत अधिक होगी। भारत में 30 वर्ष से कम आयु वर्ग के लोगों की संख्या लगभग 33% है। इस आयु वर्ग में से प्रत्येक तीन में एक भारतीय भाषा इंटरनेट प्रयोक्ता है। इस बड़ी संख्या को अपनी भाषाओं में सामग्री निर्माण करने वाले मानव संसाधन में यदि बदल पाना संभव हो पायेगा, तो ये समस्या बड़ी आसानी से दूर हो जायेगी। भारतीय भाषाओं में सामग्री की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए यह एक बड़ा अवसर साबित होगा। भारतीय भाषाओं में कीबोर्ड अभी भी एक समस्या बना हुआ है। 70% भारतीय इंटरनेट प्रयोक्ता इसे एक बाधा मानते हैं। 60 प्रतिशत भारतीय भाषा इंटरनेट प्रयोक्ता ऑनलाईन माध्यमों को अपनाने में इंटरनेट पर सीमित भाषा समर्थन को बाधा मानते हैं। भारत में 78% लोग मोबाइल फोन के माध्यम से इंटरनेट का प्रयोग करते हैं और 99% भारतीय भाषा इंटरनेट प्रयोक्ता अपने मोबाइल फोन के माध्यम से इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। भविष्य में इंटरनेट पर उपलब्ध करायी जाने वाली सामग्री को डेस्कटॉप के साथ-साथ मोबाइल अनुकूल भी बनाना अनिवार्य शर्त होगी, तभी यह सही तरीके से सभी प्रयोक्ताओं द्वारा अपनायी जा सकेगी। वर्तमान में भारत में अंग्रेजी डिजिटल माध्यमों में सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा बनी हुई है।

देखा जाये तो, पिछले 5 वर्षों से अधिक समय से भारतीय भाषाओं के बीच समाचार और मनोरंजन से जुड़ी सामग्री सर्वाधिक पसंद की जा रही है। इसके साथ ही सोशल मीडिया व चैट एप्लीकेशनों में स्थानीय भाषाओं के कीबोर्ड उपलब्ध होने और स्मार्टफोन में ये सुविधायें होने की वजह से इनका बहुत प्रयोग बढ़ा है। महानगरों में रहने वाले लोग मुख्यत: मनोरंजन सामग्री अपनी भाषाओं में खोजते हैं लेकिन डिजिटल माध्यमों की बढ़ती पहुंच से देश के पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है। इन क्षेत्रों में विकास के सभी संसाधन

मुहैया कराने के लिए इंटरनेट पर जब तक अपनी भाषा को महत्व नहीं मिलेगा, तब तक इसका लाभ पूरी तरह से उठाया जाना संभव नही हो सकेगा। भारतीय भाषाओं में इंटरनेट स्वीकारने वालों की बढ़ती संख्या के साथ ही संपूर्ण भारतीय भाषा परिदृश्य में अपनी भाषाओं में सामग्री निर्माण, मशीन पर इनका समर्थन और विभिन्न साफ्टवेयरों व प्रौद्योगिकियों पर इनका समर्थन प्रदान करने हेतु नए विमर्श और नए प्रयास शुरु हो गए हैं विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर बड़े जनसमुदाय तक क्षेत्रीय भाषा में सामग्री उपलब्ध कराने के लिए रणनीतियां/योजनाएं बनायी जा रही हैं।

वर्त्तमान समय में, स्थानीय भाषाओं के फॉन्ट और यूनिकोड स्टैंडर्ड के इंडिक की-बोर्ड की उपलब्धता से स्थानीय भाषाओं में सामग्री निर्माण सहज और सरल हुआ है। स्थानीय भाषाओं में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से कई नये स्टार्टअप भी अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। गूगल इंडिया के एक शीर्ष अधिकारी के अनुसार स्थानीय भाषाओं में अधिक से अधिक ऑनलाईन सामग्री के निर्माण से भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था के 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने में बहुत मदद मिलेगी। इसके साथ ही यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि स्थानीय भाषाओं में अधिक से अधिक सामग्री तैयार की जाए, ताकि इंटरनेट के सर्वसमावेशी रूप को बनाया जा सके। इसे केवल अंग्रेजी जानने वालों तक ही सीमित न रहने दिया जाए। द इंडियन एक्सप्रेस डिजिटल माध्यम में बंगाली, तेलुगू, तमिल और कन्नड़ में सामग्री उपलब्ध कराने की योजना बना रहा है, जबकि हिंदी, मराठी और मलयालम में न्यूजपोर्टल पहले ही उपलब्ध कराए जा चुके हैं। एओएल, फर्स्टपोस्ट, हिंदुस्तान टाइम्स, द पायनियर, द स्टेट्समैन ने हिंदी में ऑनलाईन सेवा शुरु किया है और बड़ी संख्या में पाठक यहां पर आ रहे हैं। इंडिया टुडे यह सेवा बहुत पहले ही शुरु करके अपनी सफलता के झंडे गाड़ चुका है। पारंपरिक रूप से बाजार क्षेत्रीय आधार पर बंटे हुये थे, लेकिन

डिजिटल दुनिया के विस्तार से बाजार सीमाविहीन हो गए हैं। इस वजह से सोशल मीडिया, समाचार के साथ ही सभी डिजिटल डोमेन में मातृभाषा को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। सेवा प्रदाताओं की एक बड़ी संख्या ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उन्हें उनकी भाषा में सहायता पहुंचाने के लिए प्रयासरत है। हाल ही में, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने तमिल और गुजराती में भी ऑनलाईन शब्दकोश सेवा प्रारंभ की है। बहुत से ई-कॉमर्स, खुदरा और अन्य उद्योग अपने वर्तमान पोर्टल में ही अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के भिन्न-भिन्न संस्करण निकाल रहे हैं। जेरोधा नाम की एक ऑनलाईन स्टॉक ट्रेडिंग कंपनी ने अपना बहुभाषी ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म 'काईट' वर्ष 2015 में ही लांच कर दिया था। इसके बाद कई अन्य कंपनियों के द्वारा भी ऐसे कदम उठाए गए। कलारी और रतन टाटा द्वारा वित्तपोषित 'योरस्टोरी' स्टार्टअप और उद्यमियों के लिए समर्पित पोर्टल को 13 भाषाओं में लांच किया।

अधिकांश राज्य सरकारें बेहतर प्रशासन और जनता की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करवाने के उद्देश्य से और जनउपयोगी सेवाओं को प्रयोक्ताओं की सुविधा के लिए सरकारी ऑनलाईन पोर्टलों के प्रयोक्ता इंटरफेस को स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराया जा रहा है। इन सब कारणों से क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री बढ़ रही है और अंग्रेजी का वर्चस्व कम हो रहा है। वर्षों तक कम साक्षरता दर, प्रौद्योगिकी का अभाव, कम आय और कम इंटरनेट, मोबाईल व कंप्यूटर की उपलब्धता से क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री उपलब्ध नहीं हो पा रही थी, लेकिन अब स्थिति बदल गयी है। भले ही भारत में, शासकीय कार्यों में अंग्रेजी की ही प्रधानता है, लेकिन मात्र 5% भारतीय ही अंग्रेजी में ठीक-ठीक ज्ञान रखते हैं। बाकी 95% भारतीयों को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से यह सब अवसर देने होंगे। देश में साक्षरता दर बढ़ रही है, वर्ष 1991 में 46% से वर्ष

2011 में 69% हो गयी है। इस वजह से डिजिटल साक्षरता दर भी बढ़ रही है।

एक रिपोर्ट के अनुसार इंटरनेट पर नए आने वाले प्रयोक्ताओं में से 500 मिलियन क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोक्ता होंगे। गूगल द्वारा इस दिशा में बहुत सराहनीय योगदान दिया जा रहा है। गूगल वाइस सर्च हिंदी और 9 अन्य भारतीय भाषाओं में अपनी सेवा दे रहा है, इनमें वाइस टाइपिंग की सुविधा भी है। देवनागरी के सुंदर और आकर्षक तथा प्रिंटर अनुकूल यूनिकोड समर्थित फॉन्ट तैयार किये गये हैं। गूगल मैप्स चार भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। यूट्युब में अधिकांश सामग्री क्षेत्रीय भाषाओं मे उपलब्ध है। गूगल इंडिया द्वारा जुलाई और अगस्त महीने में भारत के 16 शहरों में स्थानीय ब्लागरों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से तकनीकी कार्यशालाएं आयोजित कीं। जब हम अपने देश में विभिन्न भारतीय भाषाओं में विज्ञान, तकनीकी, उद्यमिता आदि क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री उपलब्ध करा पायेंगे, उस समय हमारे देश में वास्तविक रूप से ज्ञान और सूचना क्रांति आएगी। ऑनलाईन मीडिया स्पेस बढ़ने से भारतीय भाषाओं में विज्ञापन राजस्व भी बढ़ा है। फिक्की-ईआई की हाल ही में जारी रिपोर्ट से पता चला है कि वर्ष 2017 में भारतीय भाषाओं, डिजिटल मीडिया 30 प्रतिशत की दर से बढ़ा है और इसके साथ ही विज्ञापन में 28.8 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है।

भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री तैयार करने के साथ ही बहुत आवश्यक हो जाता है कि यह सर्च इंजन में सर्च के दौरान प्रथम पृष्ठ पर आए, ताकि अधिक-से-अधिक लोगों को इससे लाभान्वित किया जा सके। निम्नलिखित कुछ तरीके हैं, जिनका वेबसाईट बनाते समय या बाद में ध्यान रखना आवश्यक है, ताकि सर्च के दौरान मन मुताबिक परिणाम प्राप्त किए जा सकें, सभी लोकप्रिय सर्च इंजन में अपनी

वेबसाईट को उपलब्ध विभिन्न टूल्स की मदद से सबमिट करें, ताकि इसकी सही इंडेक्सिंग हो सके।

इंटरनेट प्रयोक्ताओं की एक बहुत बड़ी संख्या मोबाइल की ही इस्तेमाल करती हैं। यदि मोबाइल पर समय पर उचित प्रारूप में वेबसाईट लोड नहीं होगी तो इसका महत्व बहुत कम हो जाएगा। अपनी वेबसाईट का विभिन्न तरीकों से amplest अवश्य कर लें, ताकि मोबाइल पर इसे लोड होने में 1 सेकेंड से अधिक समय न लगे। यदि मोबाइल पर खुलने में 5 सेकेंड से अधिक का समय लगेगा, तो प्रयोक्ता इसमें रुचि नहीं लेगा। अपनी वेबसाईट पर कॉपीराईट उल्लंघन वाली सामग्री बिलकुल भी न डालें। इस तरह के विभिन्न सर्च इंजिनों द्वारा हतोत्साहित किया जाता है। किसी भी समय यदि किसी वेबसाईट की ऐसी शिकायत प्राप्त होती है तो उस पर कार्रवाई भी की जा सकती है। हमारी कोशिश है कि इन जगहों पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को तकनीकी दिक्कतों का सामना ना करना पड़े.

मध्य प्रदेश के जगदीप सिंह दांगी को करीब पंद्रह साल पहले इंजीनीयरिंग की पढ़ाई करते वक्त एहसास हुआ कि कंप्यूटर पर हिंदी की ग़ैरमौजूदगी किसी हिंदीभाषी के लिए कितनी मुश्किलें पैदा कर सकती हैं. पेशे से इंजीनियर जगदीप दांगी ने उसी वक्त एक हिंदी शब्दकोश बनाया, जिसमें उन्होंने 40 हज़ार शब्द डाले. उन्होंने इसके बाद साल 2006 तक कई हिंदी फॉन्ट कनवर्टर, सॉफ्टवेयर बनाए जो आज भी चलन में है. लेकिन वो खुद भाषा को कंप्यूटर के लिए बाधा नहीं मानते. कंप्यूटर सिर्फ बाइनरी समझता है यानी 0 और 1. किसी भी भाषा को कंप्यूटर अपने तरीके से समझता है, लिहाज़ा जो भी अंग्रेज़ी या दूसरी किसी भाषा में हो सकता है, वो हिंदी में भी हो सकता है. उसे बस हिंदी में प्रोग्राम किए जाने की ज़रूरत होती है.

जगदीप दांगी कहते हैं, इस वक्त हिंदी को ज़रूरत है तो बस एक वृहद शब्दकोश की. शब्दों का मतलब जितना सटीक होता जाएगा, अनुवाद या टाइपिंग उतना ही अच्छा होगा." तकनीकी सुधार तो होते रहेंगे, लेकिन महत्वपूर्ण होगा ये देखना कि युवाओं को लिखने-पढ़ने में हिंदी का प्रयोग कितना सहज लगता है. देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के एक साथ विकास के कारण हिन्दी ने कहीं ना कहीं अपना महत्ता खो दी है।

आज हिन्दी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन तेजी से बढ़ने लगा है। बहुत से बड़े समाचार पत्रों में भी अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी का उपयोग किया जाने लगा है। जो हिन्दी भाषा के लिये शुभ संकेत नहीं हैं। रही सही कसर सोशल मीडिया ने पूरी कर दी है। जहां सॉफ्टवेयर की मदद से रूपांतर कर अंग्रेजी से हिन्दी भाषा बनायी जाती है। जिसमें ना मात्रा का ख्याल रहता है और ना ही शुद्ध वर्तनी का।

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा के समाचार पत्र व पत्रिकायें धड़ाधड़ बंद हो रहे हैं। हिन्दी दिवस के अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिये कि हम पूरे मनोयोग से हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना निस्वार्थ सहयोग प्रदान कर, हिन्दी भाषा के बल पर भारत को फिर से विश्व गुरु बनवाने का सकारात्मक प्रयास करेंगे। अब तो कम्प्यूटर पर भी हिन्दी भाषा में सब काम होने लगे हैं। कम्प्यूटर पर हिन्दी भाषा के अनेकों सॉफ्टवेयर मौजूद हैं जिनकी सहायता से हम आसानी से कार्य कर सकते हैं। चीनी भाषा मंदारिन के बाद हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। नेपाल, पाकिस्तान की तो अधिकांश आबादी को हिंदी बोलना, लिखना, पढना आता है। बांग्लादेश, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। फिजी, सूरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देश की सरकारें तो हिंदी भाषियों द्वारा ही चलायी जा रही हैं। पूरी दुनिया में

हिंदी भाषियों की संख्या करीबन एक सौ करोड़ से अधिक है। आदिकाल से अब तक हिन्दी के आचार्यों, सन्तों, कवियों, विद्वानों, लेखकों एवं हिन्दी-प्रेमियों ने अपने ग्रन्थों, रचनाओं एवं लेखों से हिन्दी को समृद्ध किया है। परन्तु हमारा भी कर्तव्य है कि हम अपने विचारों, भावों एवं मतों को विविध विधाओं के माध्यम से हिन्दी में अभिव्यक्त करें एवं इसकी समृद्धि में अपना योगदान दें। कोई भी भाषा तब और भी समृद्ध मानी जाती है जब उसका साहित्य भी समृद्ध हो। हिन्दी के विकास के लिये हमें निरंतर प्रयासरत रहकर काम करना चाहिये। आज़ादी मिलने के बाद जब संविधान सभा द्वारा भारत के लिए राजभाषा चयन का प्रश्न आया तो लम्बे विमर्श के पश्चात देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को भारत की राजभाषा बनाये जाने का निर्णय लिया. संविधान सभा ने यह निर्णय वर्ष 1949 में 14 सितम्बर के दिन लिया था, इसी वजह से हर वर्ष 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है. हालाँकि जब संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाया तो गैर-हिन्दी भाषी राज्यों से कड़े विरोध का सामना करना पड़ा. भारत जैसे बहु-भाषी राष्ट्र में केवल एक भाषा को सभी पर थोप देना तार्किक रूप से भी उचित नहीं ठहराया जा सकता. नतीजतन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की अनुमति भी देनी पड़ी. संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए राज्य को निदेश वर्णित किये गए हैं, जिसके अनुसार हिन्दी भाषा भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके इसलिए संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे. सरकारें – पहले भी और आज भी – हिन्दी दिवस से जुड़े आयोजन बड़े पैमाने पर करती रही हैं और इन आयोजनों पर अच्छी-खासी रक़म भी खर्च करती रही हैं. लगभग हर सरकारी अर्ध-सरकारी संस्थान हिन्दी दिवस, सप्ताह जैसा कोई न कोई आयोजन करता ही है. हिन्दी लेखन के लिए राजभाषा पुरस्कार भी वितरित किये

जाते हैं. शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी निबंध – लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता सरीखे आयोजन होते हैं. लेकिन आयोजन बीतते ही हिन्दी को लेकर पुराने रवैये की वापसी हो जाती है और हिन्दी नेपथ्य में ढकेल दी जाती है. राजभाषा होने के बावजूद हिन्दी बोलने-लिखने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाना जारी रहता है. यही नहीं, हिन्दी बोलने, लिखने वाला भी हीन भावना का शिकार होते जाता है, क्योंकि बाजार और तकनीकी दोनों में अंग्रेजी का दबदबा है. कितनी अजीब बात है कि हिन्दी फिल्मों में काम करने वाले कलाकार जब कभी फिल्म के बारे में या अपने बारे में कोई साक्षात्कार देते हैं तो उनकी भाषा आमतौर पर अंग्रेजी ही होती है. और तो और हिन्दी फिल्मों की अंग्रेजी में समीक्षा भी हर अंग्रेजी समाचार पत्र प्रकाशित करता है.हिन्दी को आजतक संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा हासिल नहीं हो सका, जबकि कहीं कम बोली जाने वाली अरबी और फ्रेंच भाषाओं को यह सम्मान हासिल है. क्योंकि हिंदी को अपने देश में ही तिरस्कार झेलना पड़ रहा है. दरअसल हिन्दी के विकास में सबसे बड़ी बाधा तंग नजरिये की मौजूदगी है. ऊपर से हिन्दी भाषा के प्रयोग से रोजगार के अवसरों की सीमित उपलब्धता दूसरी सबसे बड़ी बाधा है. बहरहाल, अब इस तंग नजरिये में हौले-हौले ही सही, परिवर्तन आना शुरू हो गया है. हिन्दी इनपुट टूल आ जाने से सोशल मीडिया पर हिन्दी में लिखने-पढ़ने वालों की संख्या में आश्चर्यजनक रूप से उछाल आया है. अब तो विभिन्न सॉफ्टवेयर कम्पनियों के उच्चाधिकारी और विशेषज्ञ भी इस बात को स्वीकार करने में नहीं हिचक रहे कि डिजिटल भारत का सपना तभी साकार हो सकेगा जब हिन्दी को सूचना – प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनिवार्य किया जाएगा. हाल ही में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआईसीटीई) ने तकनीकी संस्थानों को सम्बद्ध पाठ्यक्रम हिन्दी माध्यम में भी पढ़ाने की स्वतन्त्रता प्रदान करने की दिशा में पहल की है. साथ ही इंजीनियरिंग की पुस्तकों को हिन्दी में तैयार करने के

प्रयास भी किये जा रहे हैं. लेकिन इस किस्म की सकारात्मक पहल सार्थक तभी हो सकेगी जब औपचारिक खानापूर्ती की बजाय हिन्दी को आपसी संपर्क की भाषा के साथ-साथ तकनीकी की भाषा के रूप में स्वीकार्य बनाने की दिशा में ईमानदार प्रयास किये जायें. जिस दिन हिन्दी बोलने – लिखने में सभी गर्व महसूस करने लगेंगे, उस दिन हिन्दी दिवस जैसे किसी आयोजन की आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी.

तीसरी तकनीकी क्रांति (1980) के बाद इंटरनेट सूचनाओं के आदान-प्रदान का सबसे सुलभ साधन बन चुका है। इसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। एक अरब सत्ताईस करोड़ आबादी वाले देश में हिंदी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। देश की सत्तर प्रतिशत से अधिक आबादी इसी भाषा में अपने को अभिव्यक्त करती है। आज ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, गुयाना, मारीशस, सूरीनाम, फीजी, नीदरलैंड, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद और टोबैको जैसे देशों में हिंदी बोलने वाले काफी तादाद में रहते हैं जो हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए काफी संतोषजनक बात है। इसके साथ ही विकसित देशों में भी हिंदी को लेकर ललक बढ़ रही है। कारण यह है कि किसी भी बहुराष्ट्रीय कंपनी या देश को अपना उत्पाद बेचने के लिए आम आदमी तक पहुंचना होगा और इसके लिए जनभाषा ही सबसे सशक्त माध्यम है। यही कारक हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध हो रहा है। आज पचास से अधिक देशों के पांच सौ से अधिक केंद्रों पर हिंदी पढ़ाई जाती है। कई केंद्रों पर स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी के अध्ययन-अध्यापन के साथ ही पीएचडी करने की सुविधा उपलब्ध है। विश्व के लगभग एक सौ चालीस देशों तक हिंदी किसी न किसी रूप में पहुंच चुकी है। आज हिंदी के माध्यम से संपूर्ण विश्व भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर रहा है। जब सन 2000 में हिंदी का पहला वेबपोर्टल अस्तित्त्व में आया तभी से इंटरनेट पर हिंदी ने अपनी छाप छोड़नी प्रारंभ कर दी जो अब रफ्तार पकड़ चुकी है। नई पीढ़ी के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी ने भी इसकी

उपयोगिता समझ ली है। मुक्तिबोध, त्रिलोचन जैसे हिंदी के महत्त्वपूर्ण कवि प्रकाशकों द्वारा उपेक्षित रहे। इंटरनेट ने हिंदी को प्रकाशकों के चंगुल से मुक्त कराने का भी भरकस प्रयास किया है। इंटरनेट पर हिंदी का सफर रोमन लिपि से प्रारंभ होता है और फॉन्ट जैसी समस्याओं से जूझते हुए धीरे-धीरे यह देवनागरी लिपि तक पहुंच जाता है। यूनीकोड, मंगल जैसे यूनीवर्सल फॉन्टों ने देवनागरी लिपि को कंप्यूटर पर नया जीवन प्रदान किया है। आज इंटरनेट पर हिंदी साहित्य से संबंधित लगभग सत्तर ई-पत्रिकाएं देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं। संयुक्त अरब अमीरात में रहने वाली प्रवासी भारतीय साहित्यप्रेमी पूर्णिमा बर्मन 'अभिव्यक्ति' और 'अनुभूति' नामक ई-पत्रिका की संपादक हैं और 1996 से प्रतिबिंब, नामक नाट्य संस्था चला रही हैं। अभिव्यक्ति, हिंदी की पहली ई-पत्रिका है जिसके आज तीस हजार से भी अधिक पाठक हैं। अभिव्यक्ति, के बाद अनुभूति, रचनाकार, हिंदी नेस्ट, कविताकोश, संवाद, आदि ई-पत्रिकाएं इंटरनेट पर अपनी छटा बिखेर रही हैं। ज्ञानोदय' जैसी न जाने कितनी महत्त्वपूर्ण पत्रिकाएं इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। यही नहीं, आज जितने भी प्रतिष्ठित अखबार हैं, सभी के ई-संस्करण मौजूद हैं। हम दुनिया के किसी भी कोने में रह कर क्षेत्रीय संस्करण के अखबारों को पढ़ कर अपने क्षेत्र विशेष की जानकारी हिंदी में भी ले सकते हैं। आजकल स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए ब्लॉग एक महत्त्वपूर्ण साधन बन चुका है जो हर समय सुगमता से ब्लागर और पाठक दोनों के लिए उपलब्ध है। आलोक कुमार हिंदी के पहले ब्लागर हैं जिन्होंने ब्लाग नौ-दो-ग्यारह, बनाया। आज हिंदी में ब्लॉगों की संख्या एक लाख के ऊपर पहुंच चुकी है। इनमें से लगभग दस हजार अतिसक्रिय और बीस हजार सक्रिय की श्रेणी में आते हैं। आलोक कुमार ने ही इंटरनेट पर पहली बार चिट्ठा शब्द का इस्तेमाल किया जो अब ख्याति प्राप्त कर चुका है। आज के दैनिक समाचार पत्रों के ई-संस्करण पाठकों के लिए वरदान साबित हुए हैं क्योंकि कोई भी पाठक केवल एक या दो अखबार

खरीद सकता है मगर समाचार पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध होने से वह सभी को थोड़े खर्च में देख-पढ़ सकता है। इंटरनेट पर हिंदी साहित्यिक सीमाओं को लांघ कर अपना प्रसार कर रही है, वह कहानी, नाटक, उपन्यास से आगे बढ़ कर महापुरुषों की जीवनियों, चिकित्सा, विज्ञान के क्षेत्र में विश्व की अन्य भाषाओं से कदमताल कर रही है। इसके साथ ही प्रकाशकों ने अपनी-अपनी वेबसाइट बना रखी हैं जिन पर अनेक रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें पाठकों को घर बैठे मिल जाती हैं। हिंदी पुस्तकों के ई-संस्करण से पाठकों को यह सुविधा उपलब्ध है कि वे अपने काम और रुचि के अनुसार पुस्तकों का चुनाव कर सकते हैं। इस संबंध में अभी तक सबसे सराहनीय प्रयास महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा) ने किया है। इसकी वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट हिंदीसमय डॉट कॉम पर हिंदी के लगभग एक हजार रचनाकारों की रचनाओं का अध्ययन किया जा सकता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्यामसुंदर दास आदि की ग्रंथावलियों के साथ-साथ समकालीन रचनाकारों की रचनाओं को भी इसमें स्थान दिया गया है। कह सकते हैं कि वर्धा विश्वविद्यालय ने हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों, शोधार्थियों को एक चलता-फिरता पुस्तकालय मुहैया कराया है जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। इसके साथ ही भारत के अनेक विश्वविद्यालयों ने भी हिंदी को सर्वजन सुलभ बनाने के लिए छोटे-मोटे प्रयास किए हैं। आज सभी आवश्यक वेबसाइटों के हिंदी संस्करण मौजूद हैं। पूंजी बाजार नियामक सेबी, बीएसई, एनएसई, भारतीय जीवन बीमा निगम, भारतीय स्टेट बैंक, रिजर्व बैंक आफ इंडिया, यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक,सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, भारतीय लघु विकास उद्योग बैंक की वेबसाइटें हिंदी में भी उपलब्ध हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की वेबसाइट भी हिंदी में है। जुलाई 2009 में दिया गया रिजर्व बैंक का यह निर्देश महत्त्वपूर्ण है कि हिंदी में लिखे पत्रों का जवाब हिंदी में दिया जाना

चाहिए। सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में हिंदी अधिकारी और अनुवादक रखे जाने का निर्देश रिजर्व बैंक ने जारी कर रखा है। राजभाषा अधिनियम 1976(5) के तहत केंद्र सरकार ने 'क' क्षेत्र के अंतर्गत (बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, दिल्ली और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह) आने वाले सभी सरकारी उपक्रमों में हिंदी को प्रथम भाषा के रूप में अनिवार्य कर दिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि केंद्रीय विश्वविद्यालयों, बैंकों आदि ने अपनी वेबसाइटों के अंगरेजी के साथ-साथ हिंदी संस्करण भी चला रखे हैं। हिंदी में काम बढ़ेगा तो हिंदी जानने वालों को आजीविका के अधिक अवसर प्राप्त होंगे और हिंदी के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आज हिंदी के पंद्रह से भी अधिक सर्च इंजन हैं जो किसी भी वेबसाइट का चंद मिनटों में हिंदी अनुवाद करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। याहू, गूगल और फेसबुक भी हिंदी में उपलब्ध हैं। अब कंप्यूटर से निकल कर हिंदी मोबाइल में न केवल पहुंच चुकी है, बल्कि भारी संख्या में लोग इसका उपयोग भी कर रहे हैं। मोबाइल तक हिंदी की पहुंच ने देश में देवनागरी लिपि के समक्ष खड़ी चुनौती को काफी हद तक मिटा दिया है। आज से पंद्रह साल पहले जब हम हिंदी के भविष्य पर विचार करते थे तो अनेक लोग कहते थे कि हिंदी का भविष्य तो उज्ज्वल है लेकिन हमारी लिपि पर बड़ा संकट मंडरा रहा है- चूंकि मोबाइल प्रयोक्ता अपने संदेश भेजने के लिए रोमन लिपि पर निर्भर रहते थे। आज यह समस्या हल हो चुकी है। अगर आपके भीतर थोड़ी इच्छाशक्ति है और अपनी मातृभाषा के लिए सम्मान भी, तो आप अपनी भावना हिंदी में व्यक्त कर सकते हैं। चाहे वह कंप्यूटर पर हो या मोबाइल पर। हिंदी के लिए उत्साहजनक बात इंटरनेट पर आई ट्वीटरों की बाढ़ भी है, जिस पर हिंदी का जबर्दस्त प्रयोग हो रहा है। प्रोफेसर, डॉक्टर, राजनेता, अभिनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, खिलाड़ी आदि सभी ट्वीटर का प्रयोग कर रहे हैं। इनका अनुसरण अन्य लोग करते हैं। यह

अनुप्रयोग हिंदी के लिए नई संभावनाएं पैदा करेगा। हाल ही में हिंदी के इस्तेमाल के दो और नए स्थान देखने को मिले हैं, जिन पर आज से पांच साल पहले सोचा भी नहीं जा सकता था। डीटीएच और क्रिकेट के स्कोर बोर्ड हमारे सामने हिंदी को नए रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। डीटीएच ने किसी भी चैनल के हिंदी में अनुवाद की सुविधा दे रखी है। हम जानते हैं कि भारत की अधिकतर आबादी हिंदी में ही अपने विचारों का आदान-प्रदान करती है। भले अंग्रेजी आती हो लेकिन हिंदी या स्थानीय भाषाओं को हम जिस सहज भाव से आत्मसात करते हैं. उस भाव से अंग्रेजी को नहीं, चूंकि हिंदी या हमारी प्रादेशिक भाषाएं हमारे अंत:करण में विद्यमान हैं। पहले क्रिकेट की हिंदी में कमेंट्री निश्चित समय तक ही होती थी, लेकिन अब पूरा खेल हम हिंदी में सुन सकते हैं। इसके साथ ही डिसकवरी, नेशनल ज्योग्राफिकल और एनीमल प्लानेट जैसे चैनल हिंदी के दर्शकों का ज्ञानवर्द्धन कर रहे हैं। आने वाला समय हिंदी का है। बस कुछ दकियानूसी और अदूरदर्शी सोच वाले ही हिंदी के प्रति नकारात्मक भाव व्यक्त कर रहे हैं। आज के समय में न तो हिंदी की सामग्री की कमी है और न ही पाठकों की। हां, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में अभी और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है, जिससे इसका पूर्ण लाभ आम आदमी को मिल सके। हिंदी का एक मजबूत पक्ष यह भी है कि यह बाजार की भाषा बन चुकी है, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के लिए अपने कदम बढ़ा चुकी है, बस आवश्यकता है मजबूत इच्छाशक्ति की । खासकर यूनिकोड फॉन्ट आने के बाद लोगों के लिए हिंदी में लिखना और पढ़ना और सहज हो गया है। डिजिटल क्रांति के युग में हिंदी का दायरा और बढ़ा है। पहले अखबार, पत्रिकाएं, टीवी, सिनेमा, काव्य गोष्ठियां और साहित्य सम्मेलन ही हिंदी के प्रचार-प्रसार के बड़े माध्यम थे। लेकिन, अब फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और ब्लॉग भी हिंदी को समृद्ध बनाने के सशक्त माध्यम बनकर उभरे हैं। हिंदी में

जितनी सृजन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, शायद उतनी किसी और भाषा में नहीं हो सकती है। खासकर यूनिकोड फॉन्ट आने के बाद लोगों के लिए हिंदी में लिखना-पढ़ना और सहज हो गया है। इससे पहले सोशल मीडिया में लोग हिंदी भी रोमन लिपि में लिखा करते थे। यही कारण है कि डिजिटल क्रांति के इस स्वर्णिम दौर में नई पीढ़ी का हिंदी के प्रति रुझान बढ़ा है। हिंदी अब केवल आम बोलचाल और साहित्यिक भाषा नहीं रह गई है। बल्कि विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी फलफूल रही है। कोरोना काल में हिंदी साहित्यकारों और कवियों को श्रोताओं से जुड़ने में सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। योगनगरी के साहित्यकार सोशल मीडिया पर हिंदी के वर्चस्व को एक क्रांति के तौर पर देख रहे हैं।

वहीं विचार विनिमय के आभाषी मंचों से जुड़े आम लोग भी अपनी भाषा पर गर्व कर रहे हैं। सोशल मीडिया हिंदी के लिए बहुत सकारात्मक पहलू बन गया है। हिंदी के प्रति नई पीढ़ी में रुझान बढ़ा है। फेसबुक, व्हाट्सएप और ट्विटर पर युवाओं की हिंदी में लिखी गई अभिव्यक्ति और टिप्पणियों को पढ़कर मन में बड़ी प्रसन्नता होती है। सोशल मीडिया पर जो स्वदेशी भाषा में प्रचार प्रसार हो रहा है उससे हिंदी को संबल मिला है। अंग्रेजी अंतरराष्ट्रीय भाषा है। लेकिन हिंदी हमारे अस्तित्व की पहचान है। सरकार की अनुकूलता के चलते सोशल मीडिया पर हिंदी को बढ़ावा मिल रहा है। एक बार फिर हिंदी का स्वर्णिम दौर वापस लौट रहा है। कोरोना काल में और लॉकडाउन के दौरान लोग अधिकांश अपने घरों में ही रहे। ऐसे में सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म के लोगों की सक्रियता बढ़ती। जब संक्रमण काल के चलते जब चारों तरफ निराश थी, इसी दौरान सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रचार और प्रचार बड़े पैमाने पर बढ़ा। डिजिटल क्रांति में हिंदी के आगाज के समय साहित्यकारों और कवियों में भी एकजुटता दिखी। सोशल मीडिया से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बड़ी पहचान

मिली। हिंदी के प्रति देश में चेतना पैदा हो रही है। सोशल मीडिया का इसमें बड़ा योगदान है। नई पीढ़ी सोशल मीडिया पर अधिक सक्रिय रहती है। ऐसे में अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम की मनोवृति उनका हिंदी के प्रयोग को लेकर रुझान बढ़ा है। पहले अखबारों, समाचार चैनलों, रेडियो और टीवी ने हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अब सोशल मीडिया भी यही काम कर रहा है। हालांकि सोशल मीडिया पर वर्तनी की अशुद्धियों को लेकर सुधार की जरूरत है। अंग्रेजी में लिखने के शब्दों के चयन में काफी सावधानी बरतनी पड़ती है। हिंदी तो हमारी अपनी बोलचाल की भाषा है ऐसे में फेसबुक, व्हाटस्एप और ट्विटर पर लिखने में आसानी होती है। कई आसान हिंदी कीपैड भी प्ले स्टोर पर उपलब्ध हो जाते हैं। हिंदी में घंटों बातचीत कर सकते हैं। सोशल मीडिया पर उपलब्ध हिंदी कहानियों, कविताओं और मिम्स को पढ़ने में बड़ा मजा आता है। इनकों शेयर भी किया जा सकता है । फेसबुक, व्हाटसएप और वीडियो शेयरिंग एप से कई विदेश के दोस्तों से भी बात हो सकती है। बड़ा अच्छा लगता है कि विदेश के लोग भी हमारी भाषा के प्रति जागरुक हो रहे हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है। हिंदी में लिखना और पढ़ना दोनों आसान है। कई कीपैड एप हैं। जिसमे हम बोलकर भी हिंदी लिख सकते हैं। डिजिटल दौर में तकनीकी का विकास ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर साहित्य और संस्कृति का विस्तार भी हुआ. इस विस्तार में हिंदी ने भाषा के बतौर अपनी वैश्विक स्थिति को मजबूत किया और एक पहचान कायम की है. आज दुनिया के बहुत सारे मुल्कों में हिंदी बोली जाती है और उन मुल्कों में भारतीय संस्कृति, परंपरा, धार्मिक अनुष्ठान, तीज-त्योहारों का आयोजन भी समय-समय पर होता रहता है. भारतीय संगीत और नृत्य को लेकर पश्चिमी देशों में बड़ा आकर्षण है. इसके साथ ही भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति को जानने व समझने के लिए भी बहुत सारे लोग हिंदी सीखते हैं. आज दुनिया में लगभग सभी देशों में हिंदी बोलने वालों की संख्या एक अरब

तीस करोड़ के पार पहुंच चुकी है जो कि दुनिया में बोली जाने वाली किसी भी भाषा से अधिक है. हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता का बड़ा कारण भारत का डिजिटल माध्यमों के जरिए भाषा का विस्तार और उसके फलस्वरूप उपभोक्ता बाजार, हिंदी सिनेमा और भारतीय संस्कृति को जानने-समझने की ललक है. इस ललक में डिजिटल माध्यमों के मार्फ़त हिंदी की उपस्थिति एक महत्वपूर्ण कारक है. माइक्रोसॉफ्ट के जरिए हिंदी का विकास और सोशल मीडिया, यूट्यूब, ब्लॉग आदि के जरिए हिंदी की वैश्विक उपस्थिति ने भारत के प्रति लोगों की जिज्ञासा को बढाया और वैश्विक स्तर पर हिंदी को नई पहचान दी. नई शिक्षा नीति-2020 में भी भाषा के सवाल को गंभीरता से लिया गया है. भारतीय भाषाओं में ज्ञान निर्माण को प्राथमिकता देने की बात कही गई है. इसमें डिजिटल माध्यमों की बड़ी अहम भूमिका होगी. डिजिटल माध्यमों के जरिए भाषा ने भिन्न-भिन्न देशों के बीच पुल का काम किया और भारतीय ज्ञान, विज्ञान को लेकर पश्चिमी देशों में जो जिज्ञासा का भाव था उसे पंख दिए. भारत, अपनी समृद्ध वैदिक संस्कृति के विविध संदर्भों के कारण विश्व भर के लोगों का केंद्र रहा है. भारत की मजबूत आध्यात्मिक परंपरा और विश्व बंधुत्व की परिकल्पना भी शेष विश्व के नागरिकों को आकर्षित करती रही है. डिजिटल क्रांति की देन है कि हिंदी तकनीक की भाषा भी बन चुकी है, बहुत सारी ई-कॉमर्स कंपनियों ने हिंदी में ट्रेडिंग आरंभ कर दी है.बड़ी-बड़ी ई- कॉमर्स कंपनियां हिंदी के माध्यम से लोगों को उत्पाद बेच रही हैं. कई कंपनियों ने हिंदी में अपनी सुविधाएँ आरंभ की हैं. फ्लिपककार्ट, अमेज़ॉन जैसी ऑनलाइन कंपनियाँ हिंदी की पुस्तकों के साथ-साथ किंडल जैसे प्लेटफॉर्म पर हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं की कृतियाँ आसानी से उपलब्ध होने लगी हैं. आज हिंदी का अपना एक वैश्विक बाजार निर्मित हो चुका है. इस वैश्विक बाजार में हिंदी सबकी जरूरत है. इसलिए बड़ी-बड़ी कंपनियों के मालिक अपने कर्मचारियों को अन्य भाषाओं के साथ-साथ

हिंदी सीखने पर ज़ोर दे रहे हैं. डिजिटल दौर में दुनिया में बाजार और व्यवहार की भाषा हिंदी बनती जा रही है. आज दुनिया के 40 से अधिक देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई हो रही है. यह सिर्फ एक भाषा की पढ़ाई नहीं बल्कि भाषा के जरिए भारत की संस्कृति को जानने व समझने का भी अवसर है. डेनमार्क के एक विश्वविद्यालय में हिंदी की प्राध्यापिका रजनी बहल विदेशी बच्चों के द्वारा बड़ी संख्या में हिंदी सीखने के पीछे के तात्पर्य को स्पष्ट करती हुई बताती हैं कि 'पहले सीटें भरनी बहुत मुश्किल होती थी लोग सिर्फ चाइनीज़ व जापानीज़ सीखने आते थे, मगर अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार बढ़ जाने से लोग हिंदी सीखने लगे हैं.' बहल बताती हैं कि उनके पास तीन तरह के विद्यार्थी हिंदी सीखने आते हैं- एक जो इंडियन कंपनियों के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं. दूसरे, जो इंडियन कुकिंग सीख रहे हैं और इस सिलसिले में उनका भारत जाना भी होता है. इन दो श्रेणी के लोगों को बस बोलचाल के लिए हिंदी जानने में रुचि है. तीसरा, युवा समुदाय जिसे भारतीय संस्कृति व दर्शन में जिज्ञासा है वह ढंग से हिंदी पढ़ना-लिखना जानना चाहता है". बहल के इस अनुभव से भी काफी कुछ स्पष्ट हो जाता है. वैश्विक स्तर पर भारतीय दर्शन, संस्कृति, को लोग समझ रहे हैं और अपना रहे हैं और इस परंपरा को विस्तार देने में डिजिटल प्लेटफार्म की बड़ी अहम् भूमिका है. इसमें भाषा ही महत्वपूर्ण सेतु है. इस डिजिटल युग में अलग-अलग माध्यमों और तकनीकी के जरिए पूरी दुनिया भारतीय नृत्य, संगीत एवं अन्य कलाओं से गहरे रूप में परिचित हो पा रही है. विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत को लेकर लोगों में बड़ी गहरी रुचि है. वहाँ लोग भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ना चाहते हैं और आज दुनिया के तमाम छोटे-बड़े देशों में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का ज़ोर है. इस बात को अर्चना पैन्यूली अपने एक आलेख में पुख्ता भी करती हैं- 'विश्व का अगर एक छोटा सा क्षेत्र स्केंडिनेवियन देशों की बात करें तो

आँकड़े बताते हैं कि सभी स्केंडिनेवियन देशों में हिंदी समितियाँ और हिंदी धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ हैं जो समय-समय पर भारतीय तीज-त्योहारों, राष्ट्रीय दिवसों व अन्य अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करती रहती हैं. इन कार्यक्रमों में हिंदी भाषा का ही उपयोग होता है. डेनमार्क में नाना प्रकार की भारतीय संस्थाएँ हैं: इंडियन डेनिश सोसाइटी, ऑल इंडियन कल्चरल सोसाइटी डेनमार्क, इंडियंस इन डेनमार्क, मिलाप घर, डेनमार्क तेलुगू एसोसिएशन, बंगाली एसोसिएशन,जो भारतीय त्योहारों व राष्ट्रीय दिवसों पर कार्यक्रम आयोजित कर विदेशों में बसे भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़े रखती हैं और भारतीय संस्कृति को सहेजे हुए हैं. कोपेनहेगन में कुछ संस्थाएँ व व्यक्ति हैं जो भारतीय शास्त्रीय नृत्य व हिंदी सिनेमा के गीतों पर नृत्य पाठशाला चला रहे हैं. उदाहरण के तौर पर- ब्रिटिश महिला लूसी बेनन ओडिसी व हिंदी सिनेमा पर नृत्य पाठशाला चलाती हैं. डेनिश महिला ऐनेमेटे कार्पन, प्रेसिडेंट ऑफ इंडियन म्यूजिक सोसाइटी भारतीय संगीत पर पाठशाला चला रही हैं यही भाषा की ताकत भी है. दुनिया के आर्थिक मानचित्र पर जब उदारीकरण, भूमंडलीकरण के साथ ग्लोबल विलेज़ की अवधारणा ने आकार लिया तो उसके बहुत पहले से ही भारतीय ज्ञान व सांस्कृतिक परंपरा के प्रति विश्वभर के लोगों की रुचि रही है. हाँ, यह जरूर है कि तकनीकी और आर्थिक घेराबंदी ने दुनिया में एक-दूसरे तक की पहुँच को आसान बना दिया. आज बहुत कुछ एक क्लिक से जाना जा सकता है. इस बात का सबसे ज्यादा फायदा बाजार ने उठाया है. बाजार ने भाषा और संस्कृति को भी उत्पाद में बदल दिया है लेकिन इन सबके बावजूद हिंदी की ताकत को बाजार और पूरी दुनिया ने माना है. वैश्वीकरण के माहौल में अब हिंदी विदेशी कंपनियों के लिए भी लाभ का जरिया बनने लगी है. वे अपने उत्पादों को बड़ी आबादी तक पहुंचाने के लिए हिंदी को माध्यम बना रहे हैं. गूगल से लेकर दुनिया की तमाम बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिंदी को तरजीह

दे रही हैं. इनका मकसद भले ही उपभोक्ता हो पर उससे कहीं न कहीं हिंदी एक वैश्विक ताकत के तौर पर तो मजबूती पा रही है. यही नहीं 2016 में हुए अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव के मतदान पर्ची पर पहली बार हिंदी में मतदाताओं को धन्यवाद का उल्लेख किया गया था. अमेरिका के चुनावी इतिहास में पहली बार अन्य भाषाओं के साथ हिंदी ने अपनी जगह बनाई. यह एक भाषा के बढ़ते दायरे का प्रतीक तो है ही इसके साथ वैश्विक स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता का प्रमाण भी है. वैश्विक स्तर पर हिंदी अब व्यापार, रोजगार और पहचान की भाषा बन चुकी है. इस पहचान को मजबूत करने में हिंदी सिनेमा का भी महत्वपूर्ण योगदान है. एक समय में जैसे देवकी नन्दन खत्री के उपन्यासों को पढ़ने के लिए बहुत से उर्दू भाषी लोगों ने हिंदी सीखी ठीक उसी प्रकार आज देश-विदेश में बहुत से भिन्न-भिन्न, भाषा-भाषी हिंदी सिनेमा एवं डिजिटल माध्यमों के कारण हिंदी सीख रहे हैं. भाषा के माध्यम से वह भारत व भारत की संस्कृति से भी परिचित हो रहे हैं. बहुत सी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की शाखाएँ भारत में भी हैं. वह बेहतर व्यापार के लिए अपने कर्मचारियों को हिंदी सीखने के लिए बकायदा प्रोत्साहित करते हैं. इस तरह डिजिटल युग में हिंदी की वैश्विक पहचान निर्मित हुई है.आज भाषा सीमाओं से पार, लोगों तक आसानी से पहुँच रही है. इस पहुँचने में डिजिटल माध्यमों की ही भूमिका रही है. डिजिटल दौर में भाषा को बरतने की प्रविधि में बदलाव भी आए हैं. वह ज़बान के जरिए तो विस्तार पाती ही है लेकिन अब तकनीक भी उसके विस्तार में महत्वपूर्ण कड़ी है. हिंदी की वैश्विक पहचान भले ही निर्मित हो रही हो लेकिन अपने ही देश में वह निर्वासन झेल रही है. यही स्थिति सोचने पर मजबूर करती है कि क्या सिर्फ गर्व करने से भाषा विकसित होगी. पिछले 75 वर्षों से हिंदी दिवस की रस्म पूरी की जा रही है, क्या इससे कोई बदलाव आया है. हिंदी में ज्ञान निर्माण के लिए सरकारी स्तर पर कितनी कोशिशें हुई हैं. राजनैतिक ज़मात के लिए हिंदी का वोट के अतिरिक्त क्या महत्व है.

क्या भाषा को लेकर हमारा समाज सचेत रहता है. डिजिटल दौर में हिंदी एक ओर वैश्विक स्तर पर स्थापित हो रही है जिसके कई कारण हैं लेकिन वहीं अपने ही देश में हिंदी को लेकर गंभीर उदासीनता है. इस उदासी को समझे बिना वैश्विक ताकत का हर्ष फीका है. भाषा से संस्कृति का गहरा नाता है. इसलिए यह चिंता सिर्फ भाषा के सवाल तक सीमित नहीं रहती है. इसका दूरगामी प्रभाव है. भाषा का कमजोर होना, समाज एवं संस्कृति का कमजोर होना भी है. हर देश और हर भाषा के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं जो उन्हें चिर काल के लिए बदल देते हैं। औद्योगिक क्रांति ने विश्व का नक्शा बदलकर रख दिया था और यूरोप की भाषाओं को एक अलग स्तर पर ला खड़ा किया था। तीन सौ साल पहले भारत में अंग्रेज न के बराबर थे और 150 साल पहले तक देश में अंग्रेजी बमुश्किल बोली जाती थी। मैकाले के सौ साल और आजादी के सत्तर साल बाद भी मुश्किल से सात-आठ प्रतिशत भारतीय अंग्रेजी बोलते हैं, लेकिन इसके बावजूद अंग्रेजी आज प्रगति और विज्ञान की महत्वाकांक्षी भाषा बन गई है। भारत में बिना अंग्रेजी के न तो आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और न ही न्याय हासिल कर सकते है। विभिन्न स्तर पर प्रयास चलते रहते हैं कि अंग्रेजी के हौवे को थोड़ा कम कर और इस भाषा की पकड़ को तनिक ढीलाकर भारतीय भाषाओं को आगे लाया जाए, लेकिन हिंदी दिवस जैसे आयोजन हमें इसका अहसास करते हैं कि चाह भले कुछ भी हो, प्रगति नौ दिन चले अढ़ाई कोस वाली ही है। उग्र राजनीति के इस युग में हिंदी के मसले पर राष्ट्रीय सहमति बन पाना लगभग असंभव दिखता है, लेकिन हिंदी और साथ ही अन्य सभी भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल क्रांति एक मौका है जिसे यदि पकड़ लिया जाए तो निश्चित रूप से एक बड़ी छलांग लगाई जा सकती है। बहुत समय नहीं हुआ जब लोग अपने घर तक बीएसएनएल की लैंडलाइन आने का सालों इंतजार करते थे, लेकिन आज उन्हीं घरों में चार-चार मोबाइल फोन हैं। टेक्नोलॉजी वह चीज है जिसके दम पर

पिछलग्गू भी एक क्षण में कतार में सबसे आगे आ खड़ा हो सकता है। तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास और विस्तार हुआ है, लेकिन तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की स्थिति कोई बहुत बेहतर नहीं है । इसका सबसे बड़ा उदाहरण हिंदी की-बोर्ड का उचित मानकीकरण तक न हो पाना है। हालांकि आज कई एप्प अपने आप को हिंदी में ला रहे हैं। ये मुख्यत: बैंकिंग, यात्रा और ई-कॉमर्स से जुड़े हैं, परंतु इनका हिंदीकरण पहले एक-दो पन्ने का ही होता है और उसके बाद सारी सामग्री अंग्रेजी में होती है। समस्या यह है कि हम इंटरनेट को भारतीय बनाने का प्रयास कर रहे हैं और इस कोशिश में फिलहाल अनुवाद से ज्यादा कुछ खास नहीं हो पा रहा है। इसका समाधान क्या है. अब भारतीय भाषाओं में एक भारतीय इंटरनेट का निर्माण करने की आवश्यकता है ताकि उसका स्वरूप भारत की भाषाओं की विशेषता के हिसाब से हो। आज आप भले ही हिंदी में कुछ वेबसाइट्स से टिकट लेने में सक्षम हों, लेकिन आइआरसीटीसी का मोबाइल एप्प आपको अंग्रेजी के सिवाय किसी और भाषा में टिकट नहीं खरीदने देता। आपको उत्तर प्रदेश या मध्य प्रदेश अथवा अन्य हिंदी भाषी इलाके में होटल देखने हों तो आपको रिव्यू हिंदी में आसानी से नहीं मिलेंगे। इसका तोड़ नए सिरे से सिर्फ हिंदी में एप्प बनाना है। ऐसे उपायों से ही हिंदी का सही मायनों में विकास हो सकेगा और उसका दायरा और व्यापक हो सकेगा। इस मामले में सरकार एक सीमा से ज्यादा कुछ नहीं कर सकती। स्पष्ट है कि हिंदी समाज को ही जिम्मेदारी लेनी होगी। भारत की जनसंख्या का जो सात-आठ प्रतिशत अंग्रेजी बोलता है वह ऑनलाइन हो चुका है। शेष जो ऑनलाइन हो रहे हैं वे भारतीय भाषा भाषी हैं। शायद इनके लिए कोई एप्प विकसित करना एक व्यावसायिक विफलता हो। ऐसे में यह जिम्मेदारी उन हिंदी भाषियों की है जो पहले से ऑनलाइन हैं और अंग्रेजी में सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। उन्हें नए उत्पादों की मांग करनी चाहिए। इसमें केंद्र सरकार से ज्यादा जिम्मेदारी राज्य सरकारों

की है जो हिंदी में बाजार खड़ा करने का एक वातावरण तैयार कर सकती हैं। सबसे पहले सभी छात्रों को हिंदी टाइपिंग अनिवार्य रूप से कक्षा 10 के पहले सिखाई जानी चाहिए। अंग्रेजी में टाइप करना तो बच्चे आज जल्दी ही सीख लेते हैं, पर हिंदी अगर मजबूरी न हो तो कभी नहीं सीखेंगे। हिंदी में सॉफ्टवेयर निर्माण के लिए थोड़ा जोर लगाने की जरूरत है। सरकार की भूमिका सिर्फ प्रोत्साहन देने तक की हो सकती है। हिंदी में सॉफ्टवेयर बनाने के लिए थोड़े से वित्तीय संसाधन और कुछ हिंदी प्रेमी तकनीकी दक्ष युवा पर्याप्त हैं। ध्यान रहे कि आज ऐसे दक्ष युवाओं की कोई कमी नहीं है। आज हिंदी की एक ही समस्या है कि हिंदी वालों के लिए निजी क्षेत्र में ज्यादा पैसे वाली नौकरियां नहीं हैं। इसका एक मुख्य कारण ऐसी नौकरियों का बड़े शहरों में केंद्रित होना है। हिंदी को आगे बढ़ना है तो पहले हिंदी में चलने वाले उद्योगों जैसे- मनोरंजन, कला, समाचार, धारावाहिक और रेडियो का संपूर्ण हिंदीकरण करना होगा। आज इनमें से किसी के लिए भी आपको किसी खास जगह होने की आवश्यकता नहीं है। आज मनोरंजन, समाचार, धारावाहिक आदि यू-ट्यूब पर ज्यादा देखे जाते हैं। छोटे शहरों के हमारे होनहार यू-ट्यूब पर सेलिब्रिटी बन चुके हैं, लेकिन प्रसिद्ध होने के बाद कूल होने के लिए वे अंग्रेजी के पीछे भागते हैं। यू-ट्यूब उनसे हिंदी में बात नहीं करता। वहां टिप्पणी भी रोमन हिंदी में ही आती है। इसका जवाब यू-ट्यूब का हिंदीकरण नहीं, बल्कि हिंदी का अपना यू-ट्यूब होना है जहां हिंदी में लिखा जाना ही कूल समझा जाए। बस एक तकनीकी सफलता चाहिए और फिर हिंदी छलांग लगाती दिखेगी। वैश्वीकरण के जमाने में सरकार से यह उम्मीद करना ठीक नहीं कि वह फेसबुक, यू-ट्यूब ट्विटर की अनदेखी कर दे या फिर चीन की तरह रवैया अपनाए परंतु सरकार तकनीक के क्षेत्र में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन को प्राथमिकता तो दे ही सकती है। एक बार नौकरियां मिलने लग जाएं तो शिक्षा के क्षेत्र में मशीन लर्निंग द्वारा संसार का सारा ज्ञान

हमारी भाषा में आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है और अच्छे शिक्षक एक जगह पर होते हुए भी लाखों छात्रों द्वारा देखे-सुने जा सकते हैं। यदि यह मौका छूटा तो हिंदी हमेशा उपयोग-उपभोग की भाषा बनने के लिए अभिशप्त होगी, जैसे कि आज का बॉलीवुड, जहां बस बोलने के लिए ही हिंदी है। तेजी से बदल रहे संदर्भों में हमें अपने कान, आंख और दिमाग इक्कीसवीं सदी बीसवीं शताब्दी से भी ज्यादा तीव्र परिवर्तनों वाली तथा चमत्कारिक उपलब्धियों वाली शताब्दी सिद्ध हो रही है। विज्ञान एवं तकनीक के सहारे पूरी दुनिया एक वैश्विक गाँव में तब्दील हो रही है और स्थलीय व भौगोलिक दूरियां अपनी अर्थवत्ता खो रहीं हैं। वर्तमान विश्व व्यवस्था आर्थिक और व्यापारिक आधार पर ध्रुवीकरण तथा पुनर्संघटन की प्रक्रिया से गुजर रही है। ऐसी स्थिति में विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों के महत्त्व का क्रम भी बदल रहा है। यदि हम विगत तीन शताब्दियों पर विचार करें तो कई रोचक निष्कर्ष पा सकते हैं। यदि अठारहवीं सदी आस्ट्रिया और हंगरी के वर्चस्व की रही है तो उन्नीसवीं सदी ब्रिटेन और जर्मनी के वर्चस्व का साक्ष्य देती है। इसी तरह बीसवीं सदी अमेरिका एवं सोवियत संघ के वर्चस्व के रूप में विश्व नियति का निदर्शन करने वाली रही है। आज स्थिति यह है कि लगभग विश्व समुदाय दबी जुबान से ही सही, यह कहने लगा है कि इक्कीसवीं सदी भारत और चीन की होगी। इस सदी में इन दोनों देशों की तूती बोलेगी। इस भविष्यवाणी को चरितार्थ करने वाले ठोस कारण हैं। आज भारत और चीन विश्व की सबसे तीव्र गति से उभरने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से हैं तथा विश्व स्तर पर इनकी स्वीकार्यता और महत्ता स्वत: बढ रही है। इन देशों के पास अकूत प्राकृतिक संपदा तथा युवतर मानव संसाधन है जिसके कारण ये भावी वैश्विक संरचना में उत्पादन के बडे स्रोत बन सकते हैं। अपनी कार्य निपुणता तथा निवेश एवं उत्पादन के समीकरण की प्रबल संभावना को देखते हुए ही भारत और चीन को निकट भविष्य की विश्व शक्ति के रूप में देखा जाने लगा है। जाहिर है

कि जब किसी राष्ट्र को विश्व बिरादरी अपेक्षाकृत ज्यादा महत्त्व और स्वीकृति देती है तथा उसके प्रति अपनी निर्भरता में इजाफा पाती है तो उस राष्ट्र की तमाम चीजें स्वत: महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अंतरराष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान है। यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती उपस्थिति हिंदी की हैसियत का भी उन्नयन कर रही है। आज हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्वभाषा का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है। आखिर, वे कौन सी विशेषताएँ हैं, जो किसी भाषा को वैश्विक संदर्भ प्रदान करती है। ऐसा करके हम हिंदी के विश्व संदर्भ का वस्तुपरक विश्लेषण कर सकते हैं। जब हम हिंदी को विश्व भाषा में रूपांतरित होते हुए देख रहे हैं और यथावसर उसे विश्वभाषा की संज्ञा प्रदान कर रहे हैं, तब यह जरूरी हो जाता है कि हम सर्वप्रथम विश्वभाषा का स्वरूप विश्लेषण कर लें। संक्षेप में, विश्वभाषा के निम्नलिखित लक्षण निर्मित किए जा सकते हैं. उसके बोलने-जानने तथा चाहने वाले भारी तादाद में हों और वे विश्व के अनेक देशों में फैले हों। उस भाषा में साहित्य-सृजन की प्रदीर्घ परंपरा हो और प्राय: सभी विधाएँ वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों। उस भाषा में सृजित कम-से-कम एक विधा का साहित्य विश्वस्तरीय हो। उसकी शब्द-संपदा विपुल एवं विराट हो तथा वह विश्व की भाषाओं से विचार-विनिमय करते हुए एक दूसरे को प्रेरित प्रभावित करने में सक्षम हो। उसकी शाब्दिक एवं आर्थी संरचना तथा लिपि सरल, सुबोध एवं वैज्ञानिक हो। उसका पठन-पाठन और लेखन सहज-संभाव्य हो। उसमें निरंतर परिष्कार और परिवर्तन की गुंजाइश हो। उसमें ज्ञान-विज्ञान के तमाम अनुशासनों में सृजित एवं प्रकाशित हो तथा नए विषयों पर सामग्री तैयार करने की क्षमता हो। वह नवीनतम वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों के साथ अपने-आपको पुरस्कृत एवं समायोजित करने की क्षमता से युक्त हो। वह अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भों, सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक चिंताओं तथा आर्थिक विनिमय की संवाहक हो। वह जनसंचार माध्यमों

में बडे पैमाने पर देश-विदेश में प्रयुक्त हो रही हो। उसका साहित्य अनुवाद के माध्यम से विश्व की दूसरी महत्त्वपूर्ण भाषाओं में पहुँच रहा हो। उसमें मानवीय और यांत्रिक अनुवाद की आधारभूत तथा विकसित सुविधा हो, जिससे वह बहुभाषिक कम्प्यूटर की दुनिया में अपने समग्र सूचना स्रोत तथा प्रक्रिया सामग्री (सॉफ्टवेयर) के साथ उपलब्ध हो। साथ ही, वह इतनी समर्थ हो कि वर्तमान प्रौद्योगिकीय उपलब्धियों मसलन ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई-बुक, इंटरनेट तथा एस.एम.एस. एवं वेब जगत में प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी सक्रिय उपस्थिति का अहसास करा सके। उसमें उच्चकोटि की पारिभाषिक शब्दावली हो तथा वह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम आविष्कृतियों को अभिव्यक्त करते हुए मनुष्य की बदलती जरूरतों एवं आकांक्षाओं को वाणी देने में समर्थ हो। वह विश्व चेतना की संवाहिका हो। वह स्थानीय आग्रहों से मुक्त विश्व दृष्टि सम्पन्न कृतिकारों की भाषा हो जो विश्वस्तरीय समस्याओं की समझ और उसके निराकरण का मार्ग जानते हों। वर्तमान उत्तर आधुनिक परिवेश में विशाल जनसंख्या भारत और चीन के साथ-साथ हिंदी और चीनी के लिए भी फायदेमंद सिद्ध हो रही है। हमारे देश में 1980 के बाद 65 करोड से ज्यादा बच्चे पैदा हुए हैं। जो विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षित प्रशिक्षित हो रहे हैं। वे सन् तक 2025 विधिवत प्रशिक्षित पेशेवर के रूप में अपनी सेवाएँ देने के लिए विश्व के समक्ष उपलब्ध होंगे। दूसरी ओर जापान की साठ-प्रतिशत से ज्यादा आबादी साठ साल पार करके बुढापे की ओर बढ़ रही है। यही हाल आगामी पंद्रह सालों में अमेरिका और यूरोप का भी होने वाला है। ऐसी स्थिति में विश्व का सबसे तरुण मानव संसाधन होने के कारण भारतीय पेशेवरों की तमाम देशों में लगातार मांग बढेगी। जाहिर है कि जब भारतीय पेशेवर भारी तादाद में दूसरे देशों में जाकर उत्पादन के स्रोत बनेंगे। वहाँ की व्यवस्था परिचालन का सशक्त पहिया बनेंगे, तब उनके साथ हिंदी भी जाएगी। ऐसी स्थिति में, जहाँ भारत

आर्थिक महाशक्ति बनने की प्रक्रिया में होगा. वहाँ हिंदी स्वत: विश्वमंच पर प्रभावी भूमिका का वहन करेगी। इस तरह यह माना जा सकता है कि हिंदी आज जिस दायित्व बोध को लेकर संकल्पित है. वह निकट भविष्य में उसे और भी बडी भूमिका का निर्वाह करने का अवसर प्रदान करेगा। हिंदी जिस गति तथा आंतरिक ऊर्जा के साथ अग्रसर है, उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि सन 2022 तक वह दुनिया की सबसे ज्यादा बोली व समझी जाने वाली भाषा बन जाएगी। यदि हम आँकडों पर विश्वास करें, तो संख्या बल के आधार पर हिंदी विश्वभाषा है। हाँ, यह जरूर संभव है कि यह मातृभाषा न होकर दूसरी, तीसरी अथवा चौथी भाषा भी हो | हिंदी और देवनागरी दोनों ही पिछले कुछ दशकों में परिमार्जन व मानकीकरण की प्रक्रिया से गुजरी हैं, जिससे उनकी संरचनात्मक जटिलता कम हुई है। हम जानते हैं कि विश्व मानव की बदलती चिंतनात्मकता तथा नवीन जीवन स्थितियों को व्यंजित करने की भरपूर क्षमता हिंदी भाषा में है. बशर्ते इस दिशा में अपेक्षित बौद्धिक तैयारी तथा सुनियोजित विशेषज्ञता हासिल की जाए। आखिर, उपग्रह चैनल हिंदी में प्रसारित कार्यक्रमों के जरिए यही कर रहे हैं। यह सत्य है कि हिंदी में अंग्रेजी के स्तर की विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित पुस्तकें नहीं हैं। उसमें ज्ञान-विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की दरकार है। विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं। अभी हाल ही में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम.बी.ए.का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। इसी तरह इकोनामिक टाइम्स तथा बिजनेस स्टैंडर्ड जैसे अखबार हिंदी में प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। पिछले कई वर्षों में यह भी देखने में आया कि स्टार न्यूज जैसे चैनल जो अंग्रेजी में आरंभ हुए थे, वे विशुद्ध बाजारीय दबाव के चलते पूर्णत हिंदी चैनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही ई.एस.पी.एन तथा स्टार स्पोर्ट्स जैसे खेल चैनल भी हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिंदी को वैश्विक संदर्भ

देने में उपग्रह-चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। वह जनसंचार-माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है। आज विश्व में सबसे ज्यादा पढे जानेवाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी के हैं। इसका आशय यही है कि पढा-लिखा वर्ग भी हिन्दी के महत्त्व को समझ रहा है। वस्तुस्थिति यह है कि आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं, बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरीशस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाडी देशों अफ्रीका यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। आज मॉरीशस में हिंदी सात चैनलों के माध्यम से धूम मचाए हुए है। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडियो के विकास से हिंदी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है। हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ होकर विश्वव्यापी बन रही है। उसे ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई-बुक, इंटरनेट, एस.एम.एस. एवं वेब जगत में बडी सहजता से पाया जा सकता है। इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी के अखबार एवं पत्रिकाएँ दूसरे देशों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध हैं। माइक्रोसाफ्ट, गूगल, सन, याहू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढावा दे रही हैं। संक्षेप में, यह स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्वमन के सुख-दु:ख, आशा-आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर है। आज विश्व के दर्जनों देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं तथा अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के कृति रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्वमन का संस्पर्श कर रहे हैं। हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं। हिंदी विश्व के प्राय सभी महत्त्वपूर्ण देशों के विश्व विद्यालयों में अध्ययन अध्यापन में भागीदार है। अकेले अमेरिका में ही

लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है, जिनमें हिंदी ऑनलाइन और वेब आधारित हिंदी पाठ्यक्रम का समावेश हो चुका है । बिज़नेस हिंदी का एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम एम.बी.ए. के लिए सफलता पूर्वक तैयार हो चुका है । भारतीय और विदेशी प्रमुख संस्थानोंऔर विश्वविद्यालयों की पाठ्यसामग्री और सहायक सामग्री ऑनलाइन या मल्टीमीडिया के रूप में देश-विदेश में उपलब्ध है । आज जब 21 वीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान -प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। उसके पास पहले से ही बहु सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। उसने सदा-सर्वदा से विश्वमन को जोडा है। हिंदी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। वह विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र की ही राष्ट्र भाषा नहीं है बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद तथा सुरीनाम जैसे देशों की सम्पर्क भाषा भी है। वह भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के बीच खाडी देशों, मध्य एशियाई देशों, रूस, समूचे यूरोप, कनाडा, अमेरिका तथा मैक्सिको जैसे प्रभावशाली देशों में रागात्मक जुडाव तथा विचार-विनिमय का सबल माध्यम है। यदि निकट भविष्य में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था निर्मित होती है और संयुक्त राष्ट्र संघ का लोकतांत्रिक ढंग से विस्तार करते हुए भारत को स्थायी प्रतिनिधित्व मिलता है तो वह यथाशीघ्र इस शीर्ष विश्व संस्था की भाषा बन जाएगी। यदि ऐसा नहीं भी होता है तो भी वह बहुत शीघ्र वहाँ पहुँचेगी। वर्तमान समय भारत और हिंदी के तीव्र एवं सर्वोन्मुखी विकास का द्योतन कर रहा है और हम सब से यह अपेक्षा कर रहे हैं कि हम जहाँ भी हैं, जिस क्षेत्र में भी कार्यरत हैं

वहाँ ईमानदारी से हिंदी और देश के विकास में हाथ बँटाएँ। सारांश यह कि हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रसर है। आज हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में जितने रचनाकार सृजन कर रहे हैं उतने बहुत सारी भाषाओं के बोलनेवाले भी नहीं हैं। केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में ही दो सौ से अधिक हिंदी साहित्यकार सक्रिय हैं जिनकी पुस्तकें छप चुकी हैं। यदि अमेरिका से विश्वा हिंदी जगत तथा श्रेष्ठतम वैज्ञानिक पत्रिका विज्ञान प्रकाश हिंदी की दीपशिखा को जलाए हुए हैं तो मॉरीशस से विश्व हिंदी समाचार सौरभ वसंत जैसी पत्रिकाएँ हिंदी के सार्वभौम विस्तार को प्रामाणिकता प्रदान कर रही हैं। संयुक्त अरब इमारात से वेब पर प्रकाशित होने वाले हिंदी पत्रिकाएँ अभिव्यक्ति और अनुभूति पिछले ग्यारह से भी अधिक वर्षों से लोकमानस को तृप्त कर रही हैं और दिन पर दिन इनके पाठकों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। हिन्दी प्रकाशन मे बेहतर प्रस्तुति, संग्रह, उत्तरोत्तर संशोधन सुविधा, शैली परिष्कार, तुलनात्मक विश्लेषण, अनुवाद-स्वरूप सूचना टैक्नोलॉजी, अर्थात् कंप्यूटर, कम्यूनिकेशन और (मल्टीमीडिया) कंटेंट की संगम टैक्नोलॉजी के प्रयोग से संभव हो सकते हैं । हिन्दी में शब्द संसाधन संभव है, डाटाबेस बनाए जा सकते हैं । हिन्दी में विविध फौंट चुनकर आकर्षक प्रकाशन किया जा रहा है, सीमित स्तर पर कंप्यूटर से अनुवाद प्रारूप तैयार किए जा सकते हैं । हिन्दी के कंप्यूटर के संदेश देश-विदेश में भेजे जा सकते है । हिन्दी के कंप्यूटर, इलेक्टॉनिक डायरी, प्रिंटर, वर्ण पहचान यंत्र आदि उपलब्ध हो रहे है । आवश्यकता है इन यंत्रों के प्रयोग संवर्धन की, जिससे और बेहतर टैक्नोलॉजी का विकास संभव हो और हिन्दी लेखन में सृजनात्मकता और शैली सौष्ठव बढ़े, संप्रेषणीयता और रोचकता बढ़े. टैक्नोलॉजी ट्रांसफर(अंतरण, टैक्नोलॉजी व्यापार और प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के व्यवहार संवर्धन में अंग्रेजी-हिन्दी मशीनी अनुवाद प्रणाली महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। हिन्दी में विविध फोंट्स के साथ प्रकाशन-सॉफ्टवेयर पैकेज भी उपलब्ध हैं

जिनमें सुंदर, सस्ता, शीघ्र पकाशन संभव हो गया है । अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में भी अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, जापानी, रूसी आदि विदेशी भाषाओं की तकनीकी और व्यापारिक ज्ञान सामग्री को अधिकांश भारतीयों तक हिन्दी के माध्यम से पहुंचाना युक्ति संगत होगा । संयुक्त राष्ट्र संघ में सूचना टैक्नोलॉजी के माध्यम से हिन्दी को सार्थक स्थान दिलाया जा सकता है । विश्व के कई देशों में बसे प्रवासी भारतीयों को हिन्दी के लिए उपलब्ध सूचना टैक्नोलॉजी की जानकारी पहुंचाना भी उपयोगी होगा ताकि वे कंप्यूटर पर हिन्दी में शब्द संसाधन, डाटाबेस प्रबंधन, प्रकाशन, पेजन आदि कर सकें । इसके अतिरिक्त मल्टीलिंग्वल मल्टीमीडिया में और कल्पायन (Semantic Web) इंटरनेट पर हिन्दी प्रयोग संवर्धन के लिए विकास कार्य किए जाएं । हिंदी समर्थित वेब सर्विसेज़ (ई-मेल, अनुवाद तेक्स्ट तु स्पीच,ई-कॉमर्स क्लाउड आधारित सर्विसेज़) करना बहुत जटिल नहीं रहा ।हर नए ऑपरेटिंग सिस्टम में (विंडोज़,और लिनक्स में यूनिकोड की कृपा से हिंदी-देवनागरी पहले से विद्यमान है । अधिकांश हैंड-हेल्ड डिवाइसेज़ (टैब्लेट ,स्मार्टफोन आदि)में भी हिंदी में लिखना हिंदी की वेब्साइटों को देखना तो आसान हो गया है। दूर संचार जगत में एंड्रायड ओपरेटिंग सिसृटम काफी कोकप्रिय हो गया है ।यह गूगल की तरफ से शुरूकी गई मुफ्त (ओपन सोर्स)परियोजना है। अच्छी बात यह है कि आई ओ एस और एंड्रायड के नए संस्करणों में हिंदी-देवनागरी समर्थन मौज़ूद है। मोबाइल और टैब्लेट्स के क्षेत्र में एप्लीकेशनों ने भी मज़बूत उपस्थिति दर्शाई है। तकनीकी विश्व में हिंदी की बहार दिखाई देने लगी है-सोशल नेटवर्किंग और ब्लॉगिंग में जिस अंदाज़ में विश्व ने फेसबुक को अपनाया है वह अद्भुत है। दिल्ली और मुम्बई जैसी महानगरों को भूल जाइए छोटे गाँवों और कस्बों तक के युवा, बुज़ुर्ग, बच्चे फेसबुक पर आ जमे हैं. और खूब बातें कर रहे हैं हिंदी में। व्हाट्सअप ने पिछले एक-डेढ़ साल में तेज़ी से लोकप्रियता हासिल की है। सुखद है कि वहाँ भी हिंदी में कोई बाधा नहीं

है। हिंदी विकीपीडिया के अनुसार हिंदी मे लिखे ब्लॉग है। हिन्दी रचनाकारों के लिए तो यह सर्वोत्तम माध्यम है। अपनी कविता, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य और ललित निबंध सब इस पर निरंतर लिखते हैं और लगातार प्रकाशित करते हैं, अपनी पत्रिका। हिन्दी ब्लॉग उन साहित्य एवं साहित्यकारों की रचनात्मकता को वैश्विक धरातल प्रदान कराते है जो अंतर्जाल मे हिन्दी की अनिवार्यता एवं खास तकनीक में दक्षता के बगैर अपनी अभिव्यक्ति कौशल के बावजूद बौने जैसे रह गये थे। इसके माध्यम से अब वे रचनाकार जो इंटरनेट पर अपनी रचनाओं का प्रकाशन करना चाहते हैं वे इसका फायदा उठाते हैं। ब्लॉगिंग समुदाय की बदौलत हिंदी में विविधताओं से भरी सामग्री की धारा बह निकली है जो अधिक सजीव ,जीवंत और हिंदी की विशुद्ध खुशबू लिए हुए है ।हिंदी जगत में जिस किस्म के विवाद, धमाल, उठापटक, हंगामे और बह्सें यहाँ पर भी हैं और शायद इसीलिए इन सबको पढ़ना खांटी हिंदी पाठक के लिए अधिक रुचिकर भी है। वैसे सोशल नेट्वर्किंग की हिंदी भी अपने आप में विलक्षण है- हिंदी,अंग्रेज़ी,देशज,तकनीकी, चित्रात्मक और अनौपचारिक शब्दावली से भरी हुई हैं. जब कोई लेखक या प्रकाशक अपनी किताब को पाठकों के सामने पारंपरिक रूप से प्रस्तुत करने के स्थान पर उसका इलेक्ट्रोनिक या डिजिटल रूप प्रकट करता है तब हम उसे किताब का ई-संस्करण या ई-बुक कहते हैं। इसे यूं भी समझा जा सकता है कि ई-बुक स्वभाव से मुद्रित किताब के समान ही होती है। बस अंतर इतना है कि ई-बुक पढ़ते समय हम कागजों की खुशबू से नहीं डिजिटल तरंगों से गुजरते हैं। फिर भी बुक हो या ई-बुक अंतर महज माध्यम का ही है। इससे कथ्य, तथ्य या भाव में कोई अन्तर नहीं आता। ई-बुक फार्म में तब्दील होकर भी न 'सूर' का 'रस' सूखता है और न 'शैली' के आंसू भावों की नदी हमें अब भी वैसे ही भिगोती है, जैसे कभी किताबों के बहाने किस्से बुनने के जमाने में भिगोती थीं। ऐसा भी नहीं कि यहां केवल बौद्धिक और गंभीर साहित्य मिलता हो। हल्के-

फुल्के मनोरंजन के लिए भी तमाम पत्र-पत्रिकाएं इंटरनेट पर उपलब्ध हैं, जिन्हें आप कभी भी अपने ई-बुक रीडर के माध्यम से पढ़ सकते हैं। आजकल बाजार में कई प्रतिष्ठित कंपनियों ने अपने ई-बुक रीडर लॉन्च किए हैं, जिनमें से एक आप अपनी आवश्यकतानुसार चुन सकते हैं। कम्प्यूटर जैसी सुविधाओं से युक्त इस पोर्टेबल डिवाइस में अब इलेक्ट्रॉनिक पेपर टेक्नोलॉजी को भी जोड़ दिया गया है, जिससे उसकी उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है, लेकिन ई-बुक पढ़ने के लिए ई-बुक रीडर एकमात्र साधन नहीं। जो पाठक अलग से ई-बुक रीडर खरीदना नहीं चाहते उनके लिए कम्प्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट और आईपैड के साथ-साथ प्यारे स्मार्ट फोन के रूप में कई विकल्प हैं। बेहद आम हो चुके यह गेजेट्स पुस्तक प्रेमियों को अपने पसंदीदा विषयों पर किताबें पढ़ने, सुनने और अपनी प्रति सुरक्षित करने यानी डाउनलोड करने की सुविधा देते हैं। विंडोज आधारित डिवाइस में माइक्रोसॉफ्ट रीडर भी डिजिटल फार्म में पढ़ने-पढ़ाने का बेहतर अनुभव प्रदान करता है। नब्बे के दशक में इंटरनेट की सेवा का भारत में प्रवेश हुआ। 1996 से लेकर 1999 के बीच बड़ी तेजी से भारत में तरह-तरह की वेबसाइट खुलने लगीं और इसने भारतीय परिवार, व्यापार-उद्योग-धंधों, शिक्षा, सामाजिक जीवन, स्वास्थ्य और जीवन से जुड़े तमाम पक्षों को नए सिरे से परिभाषित करने का नाम किया। इंटरनेट सिर्फ सूचनाओं का सागर नहीं था, इसने एक आभासी संसार रचा, जिसके जरिए दुनिया में कहीं भी बैठे, कहीं से भी, कोई भी सामान खरीदा या बेचा जा सकता है। इंटरनेट की इस खूबी ने ऑनलाइन मार्केटिंग की अवधारणा को जन्म दिया। यह 1995 की बात है, दुनिया भर में डॉट कॉम बिजनेस मॉडल को परखा जाना शुरू हो गया था। ऑनलाइन रिटेलिंग की दुनिया में अमेजन डॉट कॉम और ईबे डॉट कॉम की शुरूआत हुई। वेबसाइटों पर तरह-तरह की दुकानें सजने लगीं और वे दुनिया भर के उपभोक्ताओं को रिझाने में जुट गईं। ऑनलाइन स्टोर पर बिकने वाली चीजों की एक

लिस्टिंग होती है, जिसमें हर उत्पाद के बारे में बहुत ही तफसील से लिखा रहता है। मिलते-जुलते उत्पादों की आपस में तुलना भी की जा सकती है। ऐसे में, तस्वीर देखकर और उसके बारे में पढ़कर लोग उसे खरीदने के लिए अपना आर्डर रजिस्टर करते हैं। लोग एक साथ कई उत्पादों का चयन करते हुए साथ-साथ ही सबका भुगतान कर सकते हैं। भुगतान होते ही ऑनलाइन स्टोर बताए गए पते पर आपकी खरीदी हुई चीजों को भेज देता है और कुछ दिनों में आपकी मनचाही चीजें आपके हाथों में होती है। इंटरनेट और ऑनलाइन स्टोर्स के आने के साथ ई-बैंकिंग के ईजाद ने ई-कॉमर्स को बेहतर और जनसुलभ बनाने का काम किया है। वेबसाइट पर उत्पादों की तस्वीर देखकर, उसके बारे में पढ़कर उनको पसंद तो किया जा सकता था, लेकिन उन्हें खरीदने के लिए भुगतान कैसे हो, यह एक बड़ा सवाल था। इसके जवाब में बैंक ई-बैंकिंग की सुविधा के साथ सामने आए। डेबिट व क्रेडिट कार्ड्स के विकल्प ने ऑनलाइन पेमेंट्स को और सरल बनाया है। ऑनलाइन बाजार तब तरक्की कर रहा था, तो शुरूआती दौर में किसी की नजर किताबों के उस बाजार पर नहीं पड़ी, जो पहले से ही खतहाल चल रहा था, लेकिन पश्चिमी दुनिया में अमेजन डॉट कॉम जैसी वेबसाइट ने पुस्तक व्यापार को इतना प्रभावित किया कि उसके असर से भारत में भी किताबों के कारोबार में नए प्रयोग होने शुरू हुए। अमेजन की सफलता ने कभी फ्लिपकार्ट को प्रेरित किया था और फ्लिपकार्ट की सफलता को देखकर अमेजन ने भी भारत में अपना व्यापार 'अमेजन डॉट इन' नाम से 2012 में जोर-शोर से शुरू किया। आज फ्लिपकार्ट और अमेजन भारत में भाँति-भाँति के उत्पादों की सूची बनाकर ऑनलाइन मेगास्टोर का रूप ले चुके हैं, लेकिन यह भूलना नहीं चाहिए कि इन दोनों की पहली पहचान ऑनलाइन बुक स्टोर की ही रही है। अब देखना यह है कि इन दोनों वेबसाइट्स पर हिन्दी की किताबों का बाजार कितना सजा है।

इंटरनेट एंड मीडिया एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार पिछले वर्ष भारत में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या में सालाना 32 फीसदी का इजाफा हुआ है। इस रिपोर्ट से यह कयास लगाया जा रहा है कि इस साल के अंत तक भारत इंटरनेट के इस्तेमाल में यू°एस°ए° को पीछे छोड़ देगा। असर साफ है कि किताबों के मुद्रित और ई-संस्करणों की बिक्री जिस तरह से ऑनलाइन माध्यमों से बढ़ती जा रही है, लगता है किताबों का पूरा बाजार ऑनलाइन माध्यम पर शिफ्ट कर जाएगा। दिसम्बर 2014 तक देश में 17 करोड़ से अधिक लोग मोबाइल के जरिए इंटरनेट से जुड़े हुए थे और जानकारों का मानना है कि इस साल जून तक मोबाइल इंटरनेट धारकों की संख्या 21 करोड़ के पार हो जाएगी। इसी को देखते हुए अब ऑनलाइन मार्केटिंग की सारी वेबसाइट्स मोबाइल एप्पस के जरिए होने वाली खरीदारी को प्रोत्साहित कर रही हैं और कहीं-कहीं तो एप्स डाउनलोड करने पर खरीदारी पर विशेष छूट का प्रावधान भी रहता है । कम समय में सहज उपलब्धता शायद तकनीकी के इसी सुविधाजनक रूप के कारण लोग ई-बुक के प्रति क्रेजी हो रहे हैं। गाँव-खेड़े का आदमी जिससे हिस्से में कल तक सड़क का साहित्य था अगर आज उसकी पहुंच के दायरे में विश्व का श्रेष्ठ साहित्य सिमट आया है तो इसका कारण ई-बुक्स हैं। यही नहीं समकालीन साहित्य एवं साहित्यकारों को जो वैश्विक पाठक और पहचान मिली है उसका श्रेय भी इन्हें ही जाता है। पिछले दिनों अमेजन ने स्वीकार किया कि उनके बुक स्टोर में ई-बुक्स ने मुद्रित किताबों की बिक्री को पछाड़ दिया। कारण साफ है कि ई-बुक्स केवल कलेवर की वजह से नहीं अपनी अन्य विशेषताओं के कारण भी बाजार में तेजी से पैठ बना रही हैं। अंत मे यह सूचना देना अनुचित न होगा कि हम अपने ईबुक्स खुद बना सकते हैं और प्रकाशित भी कर सकते हैं और चाहे तो कमाई भी कर सकते हैं बस, विडबुक का प्रयोग कीजिए जैसे मैंने किया और घर बैठे दो ईबुक्स प्रकाशित कीं और अपने मित्रों को

आमंत्रित किया कि वे उनका आनंद उठाएँ. चलिए आप भी अपनी ई बुक बनाइए और प्रकाशित कीजिए आज के समय में इंटरनेट हमारे तकनीकी जीवन का आधार है। पाठ, चित्र के अलावा ऑडियो-विजुअल सामग्री में असीमित मात्रा में आज इंटरनेट पर उपलब्ध है। किसी भी प्रकार की जानकारी या ज्ञान की आवश्यकता होने पर हम तुरंत इंटरनेट खोलते हैं और उसे प्राप्त कर लेते हैं। इंटरनेट हमारे जीवन में ज्ञान-विज्ञान, प्रचार-प्रसार और सूचनाओं के त्वरित विस्तारण का माध्यम बन चुका है। इसलिए आज किसी भी देश या समाज की तकनीकी प्रगति बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि वह इंटरनेट से कितना जुड़ा हुआ है या इंटरनेट का वहाँ कितना विस्तार है। यह बात भाषा के संदर्भ में भी उतनी ही सत्य है। आज किसी भी भाषा के प्रयोग और विस्तार को बढ़ाने के लिए उस भाषा में इंटरनेट पर सामग्री उपलब्ध होना अतिआवश्यक है। हिंदी भारत की राजभाषा है। पिछले कुछ दशकों में हिंदी को तकनीकी के क्षेत्र में अग्रणी भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए अनेक प्रकार के संस्थागत और व्यक्तिगत प्रयास किए गए हैं। भारत में कंप्यूटर क्रांति के बाद इंटरनेट क्रांति आज के समय की माँग है। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी द्वारा भी 'डिजिटल इंडिया' के रूप में तकनीकी साधनों को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिनमें इंटरनेट सर्वोपरि है। इंटरनेट का वास्तविक अर्थों में भारत में विस्तार तभी हो सकेगा, जब इंटरनेट पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अधिकाधिक सामग्री उपलब्ध हो सकेगी। इसलिए आज यह जानना नितांत आवश्यक है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कितनी और किस प्रकार की सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध है। इसी का ध्यान रखते हुए व्यक्तिगत स्तर पर हिंदी में ऑनलाइन उपलब्ध सामग्री का एक सर्वेक्षण करके प्रमुख वेबसाइटों और उन पर उपलब्ध सामग्री के बारे में प्रस्तुत आलेख में चर्चा की जा रही है। इसे निम्नलिखित शीर्षकों में प्रस्तुत किया जा रहा है- भाषा और साहित्य,

हिंदी विकिपेडिया, स्वास्थ्य और चिकित्सा, मीडिया (समाचार चैनल और समाचार पत्र), मनोरंजन (सिनेमा और गीत) इंटरनेट ज्ञान को संग्रहित करने एवं प्राप्त करने का आज सबसे बड़ा भंडार है। यहाँ पर भी हिंदी ने प्रभावशाली दस्तकत दी है। आज हिंदी के लाखों ब्लॉग एवं वेबसाइटें हैं। ब्लॉग एवं वेबसाइटों के अतिरिक्त धीरे-धीरे हिंदी के बहुत सारे भाषिक टूल भी इंटरनेट पर ऑनलाइन उपलब्ध हो गए है, जैसे: हिंदी के ई-कोश, हिंदी शब्द-तंत्र (Hindi Word Net) एवं हिंदी साहित्य तथा ज्ञान विज्ञान से संबंधित ई-लाइब्रेरी आदि। इन सभी की उपलब्धता आधुनिक युग में हिंदी को नई ऊँचाई प्रदान कर रही है। इंटरनेट पर केवल हिंदी ही नहीं बल्कि अनेक भारतीय भाषाओं के लिए ऑनलाइन शब्दकोश उपलब्ध कराने वाली वेबसाइटें हैं। इस प्रकार भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्री और साहित्य उपलब्ध कराने वाली वेबसाइटें भी हैं। उदाहरण के लिए कुछ वेबसाइटों को देख सकते हैं-

http://www.hindisamay.com/ यह महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का एक बृहद प्रयास है। जिसमें हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों की रचनाओं की सामग्री लगभग पाँच लाख पृष्ठों में उपलब्ध है और आगे भी कार्य निरंतर जारी है। हिंदी के विविध रचनाकारों को इसमें वर्णानुक्रम में उनके नाम के अनुसार खोजा जा सकता है, अथवा हिंदी साहित्य के विविध क्षेत्रों के लिए दिए गए टैबों को क्लिक करके भी आवश्यक सामग्री प्राप्त की जा सकती है- आज देश-विदेश में लाखों लोगों द्वारा हिंदी सीखने और सीखाने के लिए इसका प्रयोग किया जा रहा है।

http://www.shabdkosh.com/ : इस वेबसाइट पर अंग्रेजी-हिंदी या हिंदी-अंग्रेजी में शब्दार्थ देखे जा सकते हैं। साथ इसमें हिंदी के अलावा बंगाली, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, पंजाबी, तमिल और तेलुगु भाषाओं के विकल्प भी उपलब्द हैं। इसमें एक-एक शब्द के 40 तक

अर्थ देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए 'science' शब्द का अर्थ देखने पर 14 अर्थ प्राप्त होते हैं- अध्ययन, उस्तादी, कौशल, ज्ञान, तकनीक, प्रक्रिया, विज्ञान, विद्या, विषय, शास्त्र, हुनर, इल्म, विद्या, विभाग। इसी प्रकार प्रत्येक शब्द के उच्चारण को सुना भी जा सकता है। इसी प्रकार पर्यायवाची और विलोम आदि की भी व्यवस्था है। http://bharatdiscovery.org/india/मुखपृष्ठ: भारत की साहित्यिक और सांस्कृतिक को सहेजता हुआ यह एक उल्लेखनीय प्रयास है। इसमें भारत के इतिहास, पर्यटन, साहित्य, धर्म, संस्कृति, दर्शन आदि से जुड़ी विशाल सामग्री एक ही स्थान पर प्राप्त हो जाती है.

http://kavitakosh.org/kk/कविता_कोश_मुखपृष्ठ : हिंदी और उसकी बोलियों के लोक साहित्य को सहेजने की दृष्टि से यह भी एक बड़ा संकलन है। इसमें हिंदी की अनेक सहभाषाओं और बोलियों के लोक साहित्य को देखा और पढ़ा जा सकता है- http://www.hindikunj.com/ : यह भी हिंदी साहित्य और व्याकरण संबंधी ज्ञान के लिए एक उत्तम स्रोत है। वैसे इस वेबसाइट पर व्याकरण संबंधी ज्ञान बहुत कम है, किंतु साहित्यिक सामग्री पर्याप्त मात्रा में है इसी प्रकार इंटरनेट पर करोड़ों वेबसाइटें हैं जहाँ प्रत्येक विषय से संबंधित ज्ञान विशाल मात्रा में उपलब्ध है। यद्यपि यहाँ भी अंग्रेजी का वर्चस्व है किंतु इसके बावजूद विभिन्न विषयों से जुड़े ज्ञान का पर्याप्त भंडार इंटरनेट पर हिंदी में भी देखा जा सकता है जो कंप्यूटर, तकनीकी और सूचना प्रौद्योगिकी के सभी पक्षों से संबंधित हैं। इन्हें गूगल सर्च या वेबसाइट के नाम से खोजा जा सकता है। हिंदी विकिपीडिया, विकिपीडिया का हिंदी भाषा का संस्करण है, जिसका स्वमित्व विकिमीडिया संस्थान के पास है। हिंदी संस्करण जुलाई 2003 में आरम्भ किया गया था, और 31 अगस्त 2011 तक इसमें 1,0,013 से अधिक वैध लेख और लगभग 51,220 से अधिक पंजीकृत सदस्य हैं। इसी दिन यह एक लाख लेखों का आँकड़ा पार करने वाला प्रथम

भारतीय भाषा विकिपीडिया बना।– चिकित्सा (medical) एक ऐसा क्षेत्र है जिसका कामकाज सामान्यतः अंग्रेजी में ही होता है। यह सभी प्रकार के लोगों की मूल आवश्यकता है। इसलिए इससे संबंधित सामग्री का आम आदमी की भाषा में होना नितांत आवश्यक है। वर्तमान में हिंदी में अनेक वेबसाइटें हैं, जिन पर भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों और उनकी चिकित्सा संबंधी जानकारियाँ उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए कुछ को देखा जा सकता है.

http://jkhealthworld.com/hindi/ : इस वेबसाइट पर आयुर्वेद, होम्योपैथ, प्राकृतिक चिकित्सा और हेल्थ से जुड़े अनेक क्षेत्रों की जानकारियाँ सरल भाषा में उपलब्ध हैं। अतः यह वेबसाइट विभिन्न प्रकार के रोगों और उनके इलाजों के बारे में हिंदी माध्यम से उपलब्ध कराते हुए चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी को संपन्न बनाने का कार्य कर रही है- http://www.onlymyhealth.com/hindi.html : हमारी वर्तमान जीवनशैली के कारण होने वाली प्रमुख बिमारियों और विभिन्न गंभीर रोगों, जैसे- अर्थराइटिस, कैंसर, डायबिटीज, बी.पी., थायराइड, माइग्रेन आदि के बारे में और उनके इलाज में जानने के लिए यह एक उपयुक्त वेबसाइट है। साथ ही इस पर डाइट और फिटनेस, हेयर और ब्यूटी, गर्भावस्था और परवरिश संबंधी महत्वपूर्ण बातें भी दी गई हैं। इसी प्रकार कुछ अन्य वेबसाइटों को भी देखा जा सकता है. एक अनुमान के अनुसार यदि इसी तरह पेड़ काटे जाते रहे और नए पेड़ नहीं लगाए गए तो अगले 10-15 वर्षों के बाद हमारे पास पढ़ने-लिखने के लिए कागज नहीं होगा। यदि यह अनुमान सही हो जाए तो हमारी अगली पीढ़ी की पढ़ाई-लिखाई कैसे होगी. यदि ऐसा कुछ नहीं भी हुआ तो जिस गति से कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है, उसमें 10-15 वर्षों के बाद हमारे पढ़ने-लिखने की व्यवस्था में कंप्यूटर का क्या योगदान होगा? ऐसे कुछ प्रश्न हैं जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में डिजिटल माध्यमों के जोड़े जाने हेतु हमें प्रेरित करते हैं। ऐसी स्थिति में डिजिटल

शिक्षण (Digital Teaching) और डिजिटल अधिगम (Digital Learning) जैसी प्रणालियाँ आज चल पड़ी है। भविष्य में उन्हीं समाजों और उन्हीं भाषाओं का अस्तित्व रहेगा जो डिजिटल माध्यमों से अपने-आप को जोड़ सकेंगे। इन्हीं सब बातों को देखते हुए हिंदी को वर्तमान ग्लोबल जगत में मजबूती से स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि डिजिटल हिंदी पर भी हिंदी के शोधकर्ताओं और विद्वानों द्वारा कार्य किया जाए। डिजिटल हिंदी एक व्यापक संकल्पना है। इसमें मुख्य रूप से चार बातों को रखा जा सकता है. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री का विकास, डिजिटल कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयरों द्वारा हिंदी शिक्षण, डिजिटल हिंदी माध्यम से अन्य विषयों का शिक्षण और हिंदी के भाषिक सॉफ्टवेयरों का विकास। प्रस्तुत शोध-आलेख में इन पर संक्षेप में चर्चा की जा रही है। यह डिजिटल हिंदी का प्राथमिक स्तर या पक्ष है। इसका संबंध किसी भाषा को डिजिटल करने से न होकर डिजिटल स्तर पर संपन्न करने से है, जिसका तात्पर्य है डिजिटल रूप में अर्थात कंप्यूटर में उस भाषा की सामग्री का अधिक-से-अधिक विकास करना। यह दो रूपों में किया जा सकता है- ऑनलाइन और ऑफलाइन। वैसे सामग्री ऑनलाइन हो तो उसे डाउनलोड करके ऑफलाइन प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार सी.डी. या डी.वी.डी. आदि माध्यमों से ऑफलाइन सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है। आज इस दिशा में हिंदी के लिए अनेकानेक कार्य हो रहे हैं। ये कार्य ऑनलाइन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं जिनका विश्व में कहीं भी और कभी भी उपयोग किया जा सकता है। ऑनलाइन ये वेबसाइट, ब्लॉग, पोर्टल, कोश आदि किसी भी रूप में हो सकते हैं। इसी यह पाठ, चित्र, ऑडियो, विडियो आदि में से किसी भी प्रकार की सामग्री हो सकती है। इस दृष्टि से हिंदी बहुत अधिक सामग्री उपलब्ध है जो दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। उदाहरण के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के http://www.hindisamay.com/ को देखा जा सकता है, जिसमें हिंदी

के प्रमुख साहित्यकारों की रचनाओं की सामग्री लगभग पाँच लाख पृष्ठों में उपलब्ध है. और आगे भी कार्य निरंतर जारी है। हिंदी के विविध रचनाकारों को इसमें वर्णानुक्रम में उनके नाम के अनुसार खोजा जा सकता है, अथवा हिंदी साहित्य के विविध क्षेत्रों के लिए दिए गए टैबों को क्लिक करके भी आवश्यक सामग्री प्राप्त की जा सकती है. हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ हमारी संपर्क भाषा भी है। यह विश्वभाषा बनने की ओर भी प्रयत्नशील है। आज देश-विदेश में हिंदी सीखने वालों की भरमार है। उन सभी को उनकी आवश्यकता के अनुसार शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना हिंदी के शिक्षण प्रतिष्ठानों की जिम्मेदारी है। अभी तक यह सामग्री पाठ्य-पुस्तकों या ई-टेक्स्ट के रूप में उपलब्ध हो सकी है। डिजिटल हिंदी के अंतर्गत हिंदी को एक भाषा के रूप में सीखने वाले सभी विद्यार्थियों और अध्येताओं को सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम के रूप में हिंदी की भाषिक सामग्री उपलब्ध कराई जाए। इस कार्यक्रम को डिजिटल हिंदी शिक्षण नाम दिया जा सकता है। इसे दो आधारों पर देखा जा सकता है इस दृष्टि से डिजिटल हिंदी शिक्षण के तीन प्रकार किए जा सकते हैं हिंदी भाषी क्षेत्र हिंदीभाषी क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण के लिए एकभाषिक सॉफ्टवेयर प्रयोग में लाए जा सकते हैं। इन सॉफ्टवेयरों में हिंदी शिक्षण की सामग्री भी होगी और माध्यम भी। हिंदीतर भारतीय भाषा क्षेत्र इसका तात्पर्य उन भारतीय क्षेत्रों से है जिनकी मातृभाषा या प्रथम भाषा हिंदी नहीं है। इन क्षेत्रों में शिक्षण की सामग्री तो हिंदी होगी, किंतु माध्यम संबंधित क्षेत्र की मातृभाषा या प्रथम भाषा होगी। अतः शिक्षण संबंधी निर्देश और अन्य बातें विद्यार्थियों की अपनी भाषा में होंगी, शिक्षण सामग्री हिंदी होगी। आवश्यकतानुसार उसे भी द्विभाषी किया जा सकेगा। भारत के बाहर जिस देश के भी लोग हिंदी सीखते हैं या सीखना चाहते हैं, उन्हें उनकी भाषा में हिंदी शिक्षण की सामग्री सॉफ्टवेयर के रूप में उपलब्ध कराई जा सकती है। अतः इसमें माध्यम के रूप में विदेशी भाषाएँ रहेंगी।

शैक्षिक स्तर के आधार पर इस दृष्टि से भी डिजिटल हिंदी शिक्षण के तीन प्रकार किए जा सकते हैं- प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-1 से कक्षा-5 तक किया जाने वाला शिक्षण इसके अंतर्गत आएगा। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर ही डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करने की पर्याप्त आवश्यकता रहती है, क्योंकि ऑडियो-विजुअल सामग्री और एनिमेशन आदि के माध्यम से शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा मनोरंजक बनाया जा सकता है। माध्यमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा-6 से कक्षा-8 तक के शिक्षण से है। इस स्तर पर भी हिंदी की सामग्री को डिजिटल रूप में प्रस्तुत कर सॉफ्टवेयर द्वारा शिक्षण किया जा सकता है। उच्च शिक्षा इसमें उच्च माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा दोनों समाहित है। जैसे-जैसे हम उच्च शिक्षा की ओर बढ़ते हैं, वैसे-वैसे विश्लेषणात्मक सामग्री की आवश्यकता बढ़ने लगती है। अतः इस स्तर पर विश्लेषणात्मक और गंभीर सामग्री के निर्माण की आवश्यकता होगी। इसके अलावा उच्च शिक्षा में विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से सोचता है, ऐसी स्थिति में उसके अंदर कुछ बिल्कुल नए प्रश्न उठ सकते हैं। ऑनलाइन प्रश्नोत्तर का माध्यम भी होना चाहिए, जिससे विद्यार्थी विभिन्न विद्वानों और विषय-विशेषज्ञों के साथ अपने प्रश्नों को साझा करके समुचित उत्तर प्राप्त कर सकें। डिजिटल हिंदी में केवल डिजिटल स्तर पर हिंदी का शिक्षण ही नहीं है, बल्कि हिंदी माध्यम में अन्य विषयों का शिक्षण भी इसमें सम्मिलित है। आरंभ में प्राथमिक स्तर पर एक सॉफ्टर्वेयर के अंतर्गत सभी विषयों को रखा जा सकता है। बाद में सामग्री बढ़ने के कारण सभी विषयों के अलग-अलग सॉफ्टवेयर बनाकर कक्षा आधारित पैक बनाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए डिजिटल हिंदी 6 एक पैक हो सकता है, जिसमें कक्षा-6 के लिए आवश्यक और पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों के अलग-अलग सॉफ्टवेयर एक साथ दिए गए हों। इसी प्रकार अन्य कक्षाओं हेतु सामग्री के पैक भी बनाए जा सकते हैं। यह हिंदी को डिजिटल स्तर पर ले जाने

की उच्चतम अवस्था है। इसका संबंध हिंदी के लिए और हिंदी से संबंधित सभी प्रकार के सॉफ्टवेयरों के विकास से है। ये सॉफ़्टवेयर भी कई प्रकार हैं। इन्हें निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है- टंकण और फॉन्ट : इनका मुख्य संबंध कंप्यूटर पर हिंदी माध्यम से टंकण करने और उसका किसी भी कंप्यूटर पर प्रयोग करने से है। इससे संबंधित कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं-

(क) फॉन्ट डिजाइनिंग

(ख) फॉन्ट परिवर्तन

(ग) यूनिकोड तकनीक आदि।

शोधन: यहाँ शोधन से तात्पर्य है किसी टंकित पाठ में आवश्यक सुधार करना। यह सुधार विराम-चिह्न, वर्तनी, मानक प्रयोग और व्याकरण आदि में होने वाली त्रुटियों के संबंध में हो सकता है। अतः इसके अंतर्गत निम्नलिखित कार्यों से जुड़े सॉफ्टवेयर आते हैं, विराम चिह्न सामान्यीकरण संबंधी प्रणाली: ऐसे सॉफ्टवेयर जो विराम-चिह्न संबंधी त्रुटियों में सुधार करते हैं। वर्तनी परीक्षण प्रणाली/वर्तनी जाँचक ऐसे सॉफ्टवेयर जो वर्तनी संबंधी त्रुटियों की पहचान करते हैं और सुझाव प्रस्तुत करते हैं। मानक प्रयोग संबंधी प्रणाली किसी भाषा में लेखन में मानक और अमानक और प्रयोग होने की स्थिति में अमानक प्रयोगों को मानक में परिवर्तित करने वाले सॉफ्टवेयर इस वर्ग में आएँगे। व्याकरण परीक्षण प्रणाली/ व्याकरण जाँचक व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ होने पर उनका परीक्षण कर सुधार प्रस्तुत करने वाले सॉफ्टवेयर इसके अंतर्गत आते हैं। हिंदी का भाषिक अनुप्रयोग इसका संबंध हिंदी के भाषायी ज्ञान को मशीन में स्थापित करने से है, जहाँ हिंदी के सभी भाषिक स्तरों ध्वनि, शब्द, पदबंध, वाक्य से संबंधित विश्लेषण और प्रजनन से संबंधित नियम दिए जाते हैं। इसके अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के सॉफ्टवेयर आते हैं- इलेक्ट्रानिक

शब्दकोश (Electronic Lexicon) : इसमें मशीन में और मशीन के लिए बनाए गए शब्दकोश (lexicon) आते हैं। ये शब्दकोश एकभाषी, द्विभाषी अथवा बहुभाषी हो सकते हैं। आज भाषा संबंधी संगणकीय उपकरणों के निर्माण में कार्पस का विशेष महत्व है। अतः कार्पस निर्माण, अनुरक्षण (maintenance) एवं कार्पस आधारित संसाधन हेतु प्रयोग में आने वाले सॉफ्टवेयर इसके अंतर्गत आएँगे। उदाहरण के लिए इस प्रकार के कुछ प्रमुख सॉफ्टवेयर शब्द आवृत्ति गणक (Word Frequency Counter), संदर्भ में शब्द प्राप्तकर्ता (Key Word in Context Finder), कॉनकॉर्डेंस प्रोग्राम, कार्पस एलाइनर, शब्द-गुच्छ प्राप्तकर्ता (Word Clusters Finder) आदि हैं। वास्तव में 'डिजिटल हिंदी' एक बहुत ही व्यापक संकल्पना है जिसका उद्देश्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हर तरह से हिंदी को अनुप्रयोग और संसाधन हेतु सक्षम बनाना है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से हिंदी का यदि अर्थ पर भी विश्लेषण कर लिया जाता है, तो मशीन को हिंदी में तर्क करने और निर्णय लेने में भी संक्षम बनाया जा सकेगा। यदि संभव हो पाता है तो हिंदी माध्यम के रोबोट भी विकसित किए जा सकेंगे। यद्यपि इसके लिए शब्दकोशीय स्तर पर एक संरचित निरूपण की आवश्यकता है, जो अभी तक नहीं हो सका है। किंतु अगले 5-10 वर्षों में निश्चय ही इस दिशा में कोई-न-कोई उल्लेखनीय कार्य आ जाएगा। इस प्रकार संक्षेप में, डिजिटल हिंदी के अंतर्गत कंप्यूटर में हिंदी माध्यम से और हिंदी से संबंधित डाटा को उपलब्ध कराने से लेकर मशीन को हिंदी में तर्क करने और निर्णय लेने में सक्षम बनाने तक के सभी कार्य आ जाते हैं। ऑनलाइन और ऑफलाइन सामग्री उपलब्ध कराना इस दृष्टि से प्राथमिक स्तर का कार्य है। आज यह कार्य पर्याप्त मात्रा में हो रहा है। सॉफ्टवेयर द्वारा हिंदी शिक्षण को डिजिटल हिंदी शिक्षण नाम दिया जा सकता है। अभी इस दिशा में काम आरंभ हुए हैं। इसी प्रकार भाषिक सॉफ्टवेयरों के निर्माण का कार्य भी विविध स्तरों पर चल रहा है। संरचित निरूपण और

तार्किक संजाल निर्माण के क्षेत्र में अभी बहुत अधिक कार्य किए जाने की संभावना है। यूनीकोड अँग्रेज़ी के दो शब्दों, यूनीवर्सल एवं कोड (कूट संख्या) से गठित एक नया शब्द है। अतः यूनीकोड का मतलब एक विशेष कूट संख्या से है। यूनीकोड शब्द कंप्यूटर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रचलित है। इसे यूनीवर्सल कोड भी कहते हैं। कंप्यूटर कार्यक्रम के अंतर्गत यूनीकोड प्रत्येक वर्ण के लिए एक विशेष अंक प्रदान करता है, चाहे कोई भी प्लेट्फ़ॉर्म हो, चाहे कोई भी प्रोग्राम हो, चाहे कोई भी भाषा हो। यूनीकोड को व्यापक रूप से विश्वव्यापी सूचना आदान-प्रदान के मानक के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। यह 16 बिट (2 बाइट) का कोड है। इसे ही यूनीकोड मानक माना गया है। यूनीकोड 16 - बिट एनकोडिंग का प्रयोग करता है; जोकि 65536 कोड-प्वाइंट (वर्ण) उपलब्ध कराता है। 16 बिट यूनीकोड में 65536 वर्णों (कैरेक्टरों) की उपलब्धता होने के कारण यह कोड विश्व की लगभग सभी लेखनीबद्ध भाषाओं के लिए सभी कैरेक्टरों को एनकोड करने की क्षमता रखता है। यूनीकोड मानक कैरेक्टर के बारे में सूचना और उनका उपयोग बताते हैं। कंप्यूटर उपयोक्ताओं के लिए जो बहुभाषी टेक्स्ट (पाठ) पर काम करते है, व्यापारियों, भाषाविदों, अनुसंधानकर्त्ताओं, वैज्ञानिकों, गणितज्ञों और तकनीशियनों के लिए यूनीकोड मानक बहुत लाभप्रद है। यूनीकोड मानक (स्टैंडर्ड) प्रत्येक कैरेक्टर को एक विलक्षण संख्यात्मक मान और नाम देता है। यह अंतरराष्ट्रीय मानक है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अँग्रेज़ी की तरह ही सरलता से और शतप्रतिशत शुद्धता से कार्य किया जा सकता है। आंतरिक तौर पर कंप्यूटर केवल द्विआधारी (बाइनरी) कूट अंकों (0 और 1) को ही समझता है। इसलिए हम जो भी वर्ण टाइप करते हैं वह अंततः 0 और 1 में ही परिवर्तित किए जाते हैं, तभी कंप्यूटर उन्हे समझ पाता है। किस भाषा के किस शब्द के लिए कौन-सा अंक प्रयुक्त होगा इसका निर्धारण करने के नियम विभिन्न

कैरेक्टर-सैट (character set) या संकेत-लिपि प्रणाली (Encoding System) द्वारा निर्धारित होते हैं। ये प्रत्येक वर्ण के लिए एक अंक निर्धारित करके वर्ण संग्रहीत करते हैं। यूनीकोड का आविष्कार होने से पहले, ऐसे अंक देने के लिए सैकड़ों विभिन्न संकेत-लिपि प्रणालियाँ थीं। किसी एक संकेत लिपि में पर्याप्त वर्ण नहीं है। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ को अकेले ही, अपनी सभी भाषाओं के वर्णों को संग्रहीत करने के लिए विभिन्न संकेत लिपियों की आवश्यकता होती है। यहाँ तक कि अँग्रेज़ी जैसी भाषा के लिए भी, सभी वर्णों, विरामचिह्नों और सामान्य प्रयोग के तकनीकी प्रतीकों हेतु एक ही संकेत लिपि पर्याप्त नहीं थी।

इन संकेत लिपियों में आपस में तालमेल भी नहीं है। इसीलिए, दो संकेत-लिपियाँ दो विभिन्न वर्णों के लिए, एक ही अंक प्रयोग कर सकती हैं, अथवा समान वर्ण के लिए विभिन्न अंकों का प्रयोग कर सकती हैं। किसी भी कंप्यूटर को विभिन्न संकेत लिपियों की आवश्यकता होती है; फिर भी जब दो विभिन्न संकेत लिपियों अथवा प्लेट्फॉर्मों के बीच डाटा भेजा जाता है तो उस डाटा के हमेशा खराब होने का जोखिम रहता है। एकरूपता। विभिन्न तरह के अस्की फ़ॉन्ट्स से छुटकारा मिलता है। हिंदी में ई-मेल, चैट आदि आसानी से कर सकते हैं। कार्यालयों के सभी कार्य कंप्यूटर पर हिंदी में आसानी से होते हैं। हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान कर सकते हैं। हिंदी की-वर्ड को गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन में सर्च कर सकते हैं। कंप्यूटर पर यूनीकोड आधारित हिंदी टाइपिंग (टंकण) करने के लिए सामान्यतः एक हिंदी उपकरण (टूल) की ज़रूरत होती है, जिसे आई°एम°इ° IME (Input Method Editor) टूल कहते हैं। यूनीकोड अस्की फ़ॉन्ट (कृतिदेव - 8 बिट कोड फ़ॉन्ट) की तरह व्यवहार नही करता जैसे कि हम एम°एस° वर्ड में जाकर कृतिदेव फ़ॉन्ट चुन कर हिंदी टाइपिंग करने लगते हैं। यूनीकोड का प्रचलित फ़ॉन्ट मंगल (16 बिट कोड फ़ॉन्ट) है। एम°एस° वर्ड में हम मंगल को कृतिदेव की तरह चुन कर हिंदी टाइपिंग नहीं कर

सकते हैं। यूनीकोड आधारित हिंदी देवनागरी, आई°एम°इ° IME (Input Method Editor) टूल, आई°एस°एम° ISM (ISFOC Script Manager), प्रखर देवनागरी लिपिक, प्रलेख देवनागरी लिपिक आदि जैसे उपकरणों की सहायता से टंकित (टाइप) की जा सकती है।

वर्तमान में कंप्यूटर पर यूनीकोड आधारित हिंदी टंकण (टाइपिंग) हेतु मुख्यतः तीन विधियाँ बहु-प्रचलित हैं:-

1. रेमिंग्टन टंकण शैली

2. इन-स्क्रिप्ट टंकण शैली

3. फोनेटिक इंग्लिश आधारित टंकण शैली

इन तीनों प्रकार की टंकण शैली (विधि - Method) की अपनी-अपनी टंकण करने की एक विधा है और प्रत्येक के लिए अपना-अपना एक की-बोर्ड लेआउट (Keyboard Layout or Overlay) भी है। यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि टंकण शैली (विधि - Method) और की-बोर्ड लेआउट (Keyboard Layout) दो भिन्न बातें हैं। तो आगे जाने से पहले प्रत्येक के लिए की-बोर्ड लेआउट की बात करते हैं। यहाँ की-बोर्ड लेआउट से अभिप्राय यह है कि कुंजीपटल पर देवनागरी के विभिन्न वर्णों का एक निश्चित क्रम में कुंजीपटल की कुंजियों पर व्यवस्थित रूप से होना है।

आज हिंदी तकनीकी के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन उन्नति कर रही है। स्मार्टफोन तथा ब्रॉडबैंड के बढ़ते चलन के कारण देश के ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट का इस्तेमाल भी तेजी से बढ़ रहा है। इंटरनेट की दुनिया में डॉट भारत डोमेन हिंदी उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ाने में काफ़ी मददगार रहेगा। भारत में इंटरनेट सेवा 15 अगस्त 1995 में आरंभ हुई जब विदेश संचार निगम लिमिटेड ने अपनी टेलीफोन लाइन

के माध्यम से भारत में स्थित कंप्यूटरों को दुनिया के अन्य देशों में स्थित कंप्यूटरों से जोड़ दिए। आज यूनिकोड फ़ॉन्ट की मदद से ही हिंदी को डोमेन नाम डॉट भारत (भारत) हिंदी भाषा एवं देवनागरी लिपि में प्राप्त हो सका। साथ ही हिंदी भाषा में डोमेन नाम का आना मतलब इंटरनेट के प्रयोग के लिए अँग्रेज़ी की अनिवार्यता का ख़त्म होना भी है। विगत वर्ष की दिनांक 27 अगस्त 2014 को भारत सरकार ने डॉट भारत (भारत) नाम से डोमेन हिंदी (देवनागरी लिपि) में लॉन्च किया है। इस डोमेन की शुरुआत नेशनल इंटरनेट एक्सचेंज ऑफ इंडिया की ओर से की गई। डॉट भारत (भारत) डोमेन से हिंदी में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले अब उन वेबसाइट्स का यूआरएल अर्थात वेबसाइट्स का पता हिंदी (देवनागरी-लिपि) में लिख व सर्फ कर सकते हैं, जो डॉट भारत डोमेन के साथ पंजीकृत होंगी। यहाँ एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी भाषा के अतिरिक्त देवनागरी लिपि आधारित अन्य भारतीय भाषाओं जैसे कि बोडो, डोगरी, कोंकणी, मैथिली, मराठी, नेपाली और सिंधी आदि में भी इस डोमेन का उपयोग किया जा सकता है। इस व्यवस्था (भारत) के आने से पहले भी हमारी अनेक वेबसाइट हिंदी में थी और आज भी हैं अर्थात वेब पेज की सामग्री हिंदी में मौजूद थी, लेकिन उन वेबसाइट का यूआरएल पता अँग्रेज़ी (रोमन लिपि) में ही होता था। जैसे कि दैनिक भास्कर वेबसाइट का यूआरएल bhaskar.com है जोकि अँग्रेज़ी (रोमन लिपि) में है, जबकि भास्कर वेबसाइट की संपूर्ण सामग्री अर्थात वेब पेज हिंदी (देवनागरी लिपि) में ही होते हैं। अब डॉट भारत (भारत) डोमेन नाम से इसका यूआरएल पूर्णतः हिंदी (देवनागरी लिपि) में इस प्रकार से हो सकता है; भास्कर,भारत, भारत डॉट डोमेन के यूआरएल के लिए शुरुआत में डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू लिखने की जरूरत नहीं रहती। उदाहरण के तौर पर भारत के राष्ट्रपति की वेबसाइट का यूआरएल होगा राष्ट्रपति सरकार भारत डोमेन से एक बात और स्पष्ट होती है कि जिन वेबसाइट्स का यूआरएल पता डॉट

भारत (भारत) होगा तो वह वेबसाइट निश्चित ही किसी भारतीय स्थानीय भाषा की ही वेबसाइट होगी। वर्तमान में यह डोमेन (भारत) मात्र आठ भाषाएँ, जिनकी लिपि देवनागरी है को ही स्वीकार करता है। जल्द ही यह सुविधा अन्य भारतीय भाषाओं बंगाली, तेलुगू, गुजराती, उर्दू, तमिल और पंजाबी के लिए भी मिल सकेगी। चूँकि यह तो स्थानीय भाषाओं में कार्य करने के इच्छुक लोगों के लिए एक सुविधा है ना कि कोई नया आविष्कार या खोज है। चीन और यूरोप में स्थानीय भाषाओं में वेबसाइट खोलने की इस प्रकार की सुविधा बहुत पहले से ही उपयोग की जाती रही है। वर्तमान में अब भारत देश भी चीन और यूरोप के उन देशों की श्रेणी में शामिल हो गया है जहाँ उनके अपने डोमेन नाम अपनी स्थानीय भाषाओं में हैं। विभिन्न सूचनाओं और ई-दस्तावेज़ों के आदान-प्रदान के लिए टीसीपी/आईपी (ट्रांसमिशन कंट्रोल प्रोटोकॉल/ इंटरनेट प्रोटोकॉल) प्रोटोकॉल का उपयोग करके बनाया गया नेटवर्क, जो कि विश्वव्यापी (वर्ल्ड वाइड) नेटवर्क के सिद्धांत पर कार्य करता है उसे इंटरनेट कहते हैं। इंटरनेट विभिन्न कंप्यूटर नेटवर्कों का नेटवर्क होते हुए विश्व का सबसे बड़ा इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क है। इंटरनेट के आविष्कारक अमेरिकन कंप्यूटर वैज्ञानिक डॉ विंट सर्फ माने जाते हैं। इंटरनेट के जनक कहे जाने वाले डॉ विंट सर्फ ने सन् 1969 में इंटरनेट का आविष्कारक किया। पश्चिमी देशों में 1980 के दशक से इंटरनेट का व्यावसायिक उपयोग होने लगा था जबकि भारत में इंटरनेट सेवा वर्ष 1995 से आरंभ हुई। वास्तव में इंटरनेट विश्व के 160 से भी अधिक विभिन्न देशों में फैला हुआ बड़ा वाइड एरिया नेटवर्क है; जो अपने प्रोटोकॉल के रूप में टीसीपी/आईपी का प्रयोग करता है। आंतरिक तौर पर प्रोटोकॉल एक ऐसी विशिष्ट संख्या है, जिससे इंटरनेट पर होस्ट को पहचाना जा सकता है। इंटरनेट नेटवर्क में प्रयुक्त प्रत्येक कंप्यूटर को होस्ट टर्मिनल या होस्ट कहा जाता है (इन्हीं में से कुछ होस्ट सर्वर के रूप में भी कार्य करते हैं) और उसे एक विशिष्ट नाम दिया जाता है। इस विशिष्ट नाम में

होस्ट का नाम और डोमेन नाम का उल्लेख होता है। डोमेन नाम के भी कई भाग होते हैं, जिनसे होस्ट या सर्वर के संगठन की जानकारी मिलती है। अमरीका की एक संस्था आईसीएएनएन द्वारा होस्ट का नामकरण किया जाता है. अर्थात यह संस्था इंटरनेट पर डोमेन नामों का प्रबंधन करती है। तकनीकी तौर पर इंटरनेट नेटवर्क में प्रत्येक कंप्यूटर दूसरे कंप्यूटर को एक विशिष्ट सांख्यिक संख्या से ही पहचाना जाता है (जैसे कि मोबाइल नेटवर्क में एक मोबाइल दूसरे मोबाइल को उसके मोबाइल नंबर से पहचानता है), यहाँ कंप्यूटर पहचान के लिए प्रयुक्त अंकों का विशिष्ट क्रम अर्थात सांख्यिक संख्या, आईपी एड्रेस कहलाता है। इंटरनेट पर आईपी एड्रेस मोबाइल/फोन नंबर के तौर पर काम करता है। इसके माध्यम से इंटरनेट पर वेब सर्फ करने वाला व्यक्ति वेबसाइट्स तक पहुँचता है, अर्थात यह सर्फ करने वाले को अपने गंतव्य पर पहुँचने में मदद करता है। परंतु इंटरनेट डोमेन नामों को याद रखना आईपी एड्रेस याद रखने से ज्यादा आसान है। इसलिए मानवीय सुविधा के लिए बाहरी तौर पर प्रत्येक कंप्यूटर या होस्ट को आईपी एड्रेस (सांख्यिक संख्या) के स्थान पर एक शाब्दिक नाम दे दिया जाता है (जैसे कि मोबाइल डायरेक्ट्री में मौजूद किसी व्यक्ति का मोबाइल नंबर उस व्यक्ति के नाम के साथ सुरक्षित होता है) यही शाब्दिक नाम डोमेन नाम है। अर्थात डोमेन नाम किसी वेबसाइट के यूआरएल के साथ प्रयोग होने वाला नाम है। उदाहरण के तौर पर यूआरएल http://www.facebook.com में facebook.com एक डोमेन नाम है। प्रत्येक डोमेन नाम में डॉट (.) चिह्न के साथ एक प्रत्यय होता है; जिसे टीएलडी (टॉप लेवल डोमेन) कहते हैं; जो यह दर्शाता है कि वरीयता के क्रम में उक्त डोमेन किस स्तर और क्षेत्र का है। अँग्रेज़ी (रोमन) में पंजीकृत निम्नलिखित डोमेन नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर टॉप लेवल डोमेन (टीएलडी) की श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

.com - व्यावसायिक कामकाज हेतु सर्वाधिक प्रचलित डोमेन है।

.net - नेटवर्क संगठन

.org - संगठन (अलाभकारी)

.edu - शैक्षणिक संस्थान आदि।

इनके अतिरिक्त प्रत्येक देश को भी अपना अलग टॉप लेवल डोमेन (टीएलडी) आवंटित है। जैसे भारत को .in, अमरीका को .us, थाईलैंड को th आदि। भारत के टॉप लेवल डोमेन में अब (.भारत) - डॉट भारत हिंदी (देवनागरी लिपि) में उपलब्ध नवीन डोमेन है। किसी भी भाषा के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि उससे संबंधित सामग्री डिजिटल साधनों पर अधिकाधिक मात्रा में उपलब्ध हो। ई-लर्निंग वर्तमान समय की सर्वाधिक सशक्त डिजिटल तकनीक है। हिंदी के विकास और वैश्विक प्रचार-प्रसार में ई-लर्निंग साधनों की भूमिका अतुल्य है। ईपीजी पाठशाला भारत सरकार का इसी प्रकार का एक उत्कृष्ट प्रयास है। प्रस्तुत इकाई में हिंदी शिक्षण के सापेक्ष इन दोनों से परिचय कराया जा रहा है- हिंदी भाषा शिक्षण में डिजिटल माध्यमों की भूमिका का परिचय पा सकेंगे। ई-लर्निंग की परिभाषा एवं स्वरूप को समझ सकेंगे। ई-लर्निंग के महत्वपूर्ण तकनीकी-शब्दों को जान सकेंगे। ईपीजी-पाठशाला के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे। मानव सभ्यता के विकास क्रम में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। कंप्यूटर के अविष्कार से हुई डिजिटल क्रांति इसी प्रकार का एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। कंप्यूटर ने मनुष्य के औद्योगिक, व्यापारिक, यातायात संबंधी, शिक्षा संबंधी और यहाँ तक कि दैनिक जीवन संबंधी क्रियाकलापों में गहरी पैठ बनाई है। डिजिटल क्रांति के बाद यह स्थिति है कि कंप्यूटर के बिना मानव समाज के वर्तमान स्वरूप की कल्पना नहीं की जा सकती। इंटरनेट के अविष्कार ने मनुष्य को एक ऐसा

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म दिया है जिसके माध्यम से वह बिना किसी बाधा के एक ही क्लिक के साथ संपूर्ण विश्व में अपने विचारों, कार्यों आदि को पाठ, चित्र और ऑडिय-विजुअल सामग्री के रूप में पहुँचा सके। वर्तमान समय में शिक्षा मनुष्य के मौलिक अधिकारों में से एक है। सरकारों द्वारा निरंतर इसे जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया जा रहा है। समय, स्थान और संसाधनों की सीमितता इसमें एक प्रमुख बाधा रही है। दूर शिक्षा के माध्यम से इस बाधा को भी कुछ हद तक दूर करने का प्रयास किया गया, किंतु इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कंप्यूटर और इंटरनेट के आगमन के बाद ही हो सकी है। अब ऑनलाइन तकनीक का प्रयोग करते हुए विश्व में कहीं भी और कभी शिक्षण किया जा सकता है। इंटरनेट और इलेक्ट्रानिक सामग्री द्वारा शिक्षण और अधिगम की विकसित इसी तकनीक को ई-लर्निंग नाम दिया गया है। वर्तमान में संपूर्ण विश्व में यह एक चिर-परिचित शब्द है। आज विश्व की प्रमुख भाषाओं में सभी प्रमुख विषयों में पर्याप्त मात्रा में ई-लर्निंग की सामग्री प्राप्त की जा सकती है। हिंदी भी इस क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रही है। सरकारी और व्यक्तिगत/संस्थागत स्तर पर इस दिशा में अनेक उल्लेखनीय प्रयास हुए हैं। ई-पी.जी. पाठशाला इसी प्रकार का एक प्रयास है। अतः ई-लर्निंग और ई-पी.जी. पाठशाला की महत्ता को देखते हुए इनका परिचय प्रस्तुत इकाई में दिया जा रहा है। हिंदी भारत की राजभाषा और संपर्क-भाषा है। भारत एक बहुभाषिक देश है। यहाँ अनेक विविध प्रकार की भाषाओं का प्रयोग होता है। इसीलिए उत्तर भारत में प्रथम भाषा होने के साथ-साथ देश के अनेक राज्यों में हिंदी की स्थिति द्वितीय भाषा और कुछ राज्यों में तृतीय भाषा की है। इसके अलावा विश्व के अन्य अनेक देशों के विद्यार्थी भी हिंदी सीखते हैं। इन सभी रूपों में हिंदी का शिक्षण हिंदी भाषा शिक्षण है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण को निम्नलिखित रूपों में समझ सकते हैं- प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण, द्वितीय (और तृतीय) भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण,

विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण, प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण हिंदी भाषी क्षेत्रों में किया जाता है। इन क्षेत्रों में किसी-न-किसी रूप में हिंदी का व्यवहार होता रहता है, इसलिए हिंदी के औपचारिक और साहित्यिक स्वरूप का ही शिक्षण किया जाता है। भाषा कौशल की दृष्टि से केवल पढ़ना और लिखना कौशलों का शिक्षण ही अपेक्षित होता है। द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में हिंदी सीखाने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता पड़ती है। वहाँ अध्येता की मातृभाषा का भी व्याघात होता है। विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए और अधिक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि वहाँ हिंदी का परिवेश भी उपलब्ध नहीं होता। द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में अध्येता का उद्देश्य भी महत्वपूर्ण होता है कि वह हिंदी क्यों सीखना चाहता है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण एक बड़ा क्षेत्र है, जिस पर भाषा की दृष्टि से अलग-अलग विचार किया जा सकता है, क्योंकि भाषा शिक्षण की प्रविधि और सामग्री इस बात पर भिन्न हो जाती है कि अध्येता किस रूप में हिंदी को सीखना चाहता है।

हिंदी भाषा शिक्षण और डिजिटल माध्यम

वर्तमान परिवेश में हिंदी भाषा शिक्षण को तकनीकी माध्यमों से जोड़ना नितांत आवश्यक है। यदि हिंदी भाषा शिक्षण को वर्तमान तकनीकी जगत के साथ अद्यतन (update) करना है तो यह आवश्यक है कि डिजिटल माध्यमों का हिंदी भाषा शिक्षण के लिए प्रयोग किया जाए। डिजिटल माध्यमों से तात्पर्य है- कंप्यूटर और मोबाइल। आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर की भूमिका अपरिहार्य है। शिक्षण-प्रशिक्षण भी इससे अछूता नहीं है। अतः हिंदी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर का उपयोग आवश्यक है। वर्तमान समय में मोबाइल केवल संचार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह मिनि-कंप्यूटर के रूप में कंप्यूटर द्वारा किए जाने वाले अनेकानेक कार्यों को हमारी मुट्ठी में रहते हुए संपन्न कर

रहा है। इसीलिए सामान्य संचार के लिए प्रयुक्त मोबाइल फोनों से अलग इन्हें स्मार्टफोन कहा जाता है। हिंदी भाषा शिक्षण को जन-जन तक पहुँचाने के लिए मोबाइल और स्मार्टफोन प्लेटफॉर्म का भी अधिकाधिक प्रयोग किया जाना अपेक्षित है। उपर्युक्त दोनों डिजिटल युक्तियों में हिंदी भाषा शिक्षण संबंधी सामग्री दो प्रकार से पहुँचाई जा सकती है- ऑनलाइन और ऑफलाइन। ऑनलाइन से तात्पर्य इंटरनेट की सहायता से सामग्री उपलब्ध कराने से है तो ऑफलाइन के लिए इंटरनेट का होना आवश्यक नहीं है। इसे तकनीकी रूप से स्वतंत्र प्रणाली भी कहते हैं। हिंदी भाषा शिक्षण के लिए दोनों ही प्रकार के डिजिटल माध्यमों का प्रयोग आवश्यक है। संचार और सूचना प्रणालियों का उपयोग करते हुए ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया ई-लर्निंग है। दूसरे शब्दों में पारंपरिक कक्षाध्यापन और अधिगम से अलग इलेक्ट्रानिक माध्यमों का किसी भी प्रकार से प्रयोग करते हुए किया जाने वाला ज्ञानार्जन ई-लर्निंग है। आज ई-लर्निंग एक सर्वाधिक उभरता हुआ व्यापक क्षेत्र है। इसके अंतर्गत इंटरनेट के माध्यम से शिक्षण अथवा शिक्षण सामग्री से ज्ञान का अर्जन, कंप्यूटर पर विभिन्न शिक्षण सॉफ्टवेयरों से ज्ञानार्जन, स्मार्टफोन फोन पर शिक्षण एप्स का प्रयोग, आभासी कक्षा, अंतर्क्रियात्मक कक्षा अध्यापन, ऑडियो-विजुअल सामग्री का प्रयोग आदि सभी आ जाते हैं।

आज के कम्प्यूटर युग में किसी भी भाषा का विकास कम्प्यूटरीकरण के बिना नहीं हो सकता। किसी भी भाषा के ज्ञान-विज्ञान को सुरक्षित रखने एवं पूरी दुनिया तक पहुँचाने के लिये उसका कम्प्यूटरीकरण अत्यन्त आवश्यक है। भाषाई कम्प्यूटिंग की दुनिया में हिन्दी ने बहुत तरक्की की है।

80 के दशक में कम्प्यूटिंग की दुनिया में प्रवेश से लेकर आज हिन्दी ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। आज कम्प्यूटर और दूसरे ऐसे उपकरणों पर हिन्दी में काम करना उतना ही सहज है जितना किसी

और भाषा में। आइये नजर डालते हैं हिन्दी के इस सफर पर और हिन्दी संबंधी कुछ अनुप्रयोगों पर।

कम्प्यूटर की दुनिया में हिन्दी का प्रवेश सबसे पहले डॉस के जमाने में अक्षर, शब्दरत्न आदि जैसे वर्ड प्रोसैसरों के रूप में हुआ। बाद में विण्डोज़ का पदार्पण होने पर 8-बिट ऑस्की फॉण्टों जैसे कृतिदेव, चाणक्य आदि के द्वारा वर्ड प्रोसैसिंग, डीटीपी तथा ग्राफिक्स अनुप्रयोगों में हिन्दी में मुद्रण सम्भव हुआ। अब तक हिन्दी केवल मुद्रण के काम तक ही सीमित थी। यूनिकोड के आगमन से यह स्थिति बदली। माइक्रोसॉफ्ट के विण्डोज़ ऑपरेटिंग सिस्टम में विण्डोज़ 2000 तथा ऍपल के मॅक ओऍस में ओऍस ऍक्स (संस्करण 10) से यूनिकोड हिन्दी का समर्थन आया। इससे अंग्रेजी आदि यूरोपीय भाषाओं की तरह कम्प्यूटर पर सभी ऍप्लिकेशनों में हिन्दी का प्रयोग सम्भव हो गया। हिन्दी का मानक कीबोर्ड इन्स्क्रिप्ट सभी आधुनिक ऑपरेटिंग सिस्टमों में अन्तर्निर्मित आता है। हिन्दी टाइपिंग औजारों की सुलभता से इंटरनेट पर हिन्दी का प्रयोग लोकप्रिय हो गया। अधिकतर पुराने नॉन-यूनिकोड फॉण्ट प्रयोग करने वाली वेबसाइटों ने यूनिकोड को अपना लिया। वर्तमान में इंटरनेट पर हिन्दी प्रयोक्ताओं की अच्छी-खासी संख्या है।

मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिन्दी का प्रवेश वर्ष 2005 के बाद शुरु हुआ। नोकिया के मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम सिम्बियन के कुछ संस्करणों में आंशिक हिन्दी समर्थन आया। माइक्रोसॉफ्ट के विण्डोज़ मोबाइल के कुछ संस्करणों में आयरॉन्स हिन्दी सपोर्ट नामक थर्ड पार्टी सॉफ्टवेयर के जरिये हिन्दी समर्थन आया। बाद में ऍपल के मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम आइओऍस, गूगल के मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम ऍण्ड्रॉइड तथा रिम के ब्लैकबेरी ओऍस में भी हिन्दी समर्थन उपलब्ध हुआ। वर्तमान में माइक्रोसॉफ्ट के विण्डोज़ फोन को छोड़कर लगभग सभी प्रमुख मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिन्दी समर्थन है।

अब बात करते हैं कि विभिन्न कम्प्यूटिंग डिवाइसों और प्लेटफॉर्मों पर हिन्दी में काम करने के लिये आपको क्या कुछ चाहिये।

माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज़

माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज़ सर्वाधिक लोकप्रिय डैस्कटॉप प्रचालन तन्त्र (ऑपरेटिंग सिस्टम) है। विण्डोज़ ऍक्सपी तथा विण्डोज़ 7 दो सबसे प्रचलित विण्डोज़ संस्करण हैं। इनमें से विण्डोज़ ऍक्सपी में हिन्दी समर्थन है परन्तु इसे कंट्रोल पैनल में जाकर सक्षम करना पड़ता है तथा इस कार्य हेतु विण्डोज़ सीडी की आवश्यकता होती है। इस कार्य को सरल बनाने के लिये लेखक द्वारा निर्मित IndicXP नामक औजार उपलब्ध है जो यह कार्य बिना विण्डोज़ सीडी की आवश्यकता के स्वचालित रूप से कर देता है। विण्डोज़ ७ में इण्डिक सपोर्ट पहले से सक्षम होता है। आगामी विण्डोज़ 8 भी इस मामले में हिन्दी मित्र है।

हिन्दी टंकण के लिये विण्डोज़ में हिन्दी का मानक इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड अन्तर्निर्मित होता है जिसे कंट्रोल पैनल के रिजनल ऍण्ड लैंग्वेज ऑप्शन्स में जाकर जोड़ना होता है। फोनेटिक तथा रेमिंगटन लेआउट द्वारा टंकण के लिये आपको बाहरी औजार इंस्टाल करने पड़ते हैं। फोनेटिक के लिये गूगल आईएमई (Google IME) तथा रेमिंगटन के लिये इंडिक आई एम ई (Indic IME) प्रचलित औजार हैं। विण्डोज़ का यूजर इंटरफेस भी हिन्दी में किया जा सकता है। इसके लिये माइक्रोसॉफ्ट की वेबसाइट पर लैंगुएज इंटरफेस पैक (Language Interface Pack) उपलब्ध है।

लिनक्स

लिनक्स के अधिकतर नये वितरणों में हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं के प्रदर्शन हेतु समर्थन पहले से सक्षम होता है। हालाँकि टैक्स्ट इनपुट एवं

स्थानीय भाषाई इंटरफेस हेतु उस भाषा का सपोर्ट सक्षम करना पड़ता है। अधिकतर प्रचलित वितरणों जैसे उबुंटू, लिनक्स मिंट तथा रैडहैट आदि में इंस्टालेशन के समय ही वाँछित भाषा का विकल्प चुनकर इण्डिक सपोर्ट सक्षम किया जा सकता है। यदि इंस्टालेशन के समय नहीं किया गया तो बाद में इंटरनेट से कनैक्ट होकर यह सक्षम किया जा सकता है। लिनक्स में हिन्दी टंकण हेतु इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड अन्तर्निर्मित होता है। कुछ संस्करणों में बोलनागरी नामक फोनेटिक कीबोर्ड भी होता है। ये कीबोर्ड इसकी सैटिंग्स में जाकर एससीआईएम (SCIM) या आई बस (iBus) के द्वारा जोड़े जा सकते हैं। लिनक्स का यूजर इंटरफेस लगभग पूरी तरह हिन्दी में उपलब्ध है।

मॅक ओऍस

ऍपल के डैस्कटॉप ऑपरेटिंग सिस्टम मॅक ओऍस में संस्करण १० (ओऍस ऍक्स) से भारतीय भाषाई समर्थन दिया जाना शुरु हुआ था। संस्करण १०.७ में लगभग सभी भारतीय भाषाओं का समर्थन आ चुका है। हिन्दी इनपुट के लिये इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड अन्तर्निर्मित होता है जिसे सैटिंग्स में जाकर जोड़ना पड़ता है। ओऍस ऍक्स में अभी हिन्दी इंटरफेस नहीं है।

आइओऍस

आइओऍस ऍपल का मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम है जो कि आइफोन (ऍपल का स्मार्टफोन), आइपॉड टच (ऍपल का पोर्टेबल म्यूजिक प्लेयर) तथा आइपैड (ऍपल का टैबलेट) में प्रयुक्त होता है। आइओऍस ४.x से इसमें पूर्ण हिन्दी प्रदर्शन समर्थन आ गया।

आइओऍस का इंटरफेस तो हिन्दी में नहीं पर तिथि तथा समय आदि में नाम तथा अंक देवनागरी में देखे जा सकते हैं। आइओऍस के नये

संस्करण 5 में हिन्दी कीबोर्ड आ गया है जिससे डिवाइस में कहीं भी सीधे हिन्दी में लिखना सम्भव हो गया है।

ऍण्ड्रॉइड

ऍण्ड्रॉइड गूगल का मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम है जो कि विभिन्न स्मार्टफोन एवं टैबलेट निर्माताओं द्वारा अपने उपकरणों में प्रयुक्त किया जाता है। ऍण्ड्रॉइड में संस्करण 2.3 (जिंजरब्रैड) तथा 3.x (हनीकॉम्ब) तक में हिन्दी प्रदर्शन समर्थन नहीं है। कुछ स्मार्टफोन निर्माताओं ने अपने कुछ मॉडलों में अपने स्तर पर फर्मवेयर को संशोधित करके हिन्दी समर्थन उपलब्ध कराया है। ऍण्ड्रॉइड के नवीनतम संस्करण 4.0 (आइस क्रीम सैंडविच) में हिन्दी, बंगाली तथा तमिल भाषाओं का समर्थन आ गया है। हिन्दी इनपुट के लिये अभी अन्तर्निर्मित कीबोर्ड नहीं है। गूगल प्ले (ऍण्ड्रॉइड का ऍप्लिकेशन स्टोर) से गो की बोर्ड (Go Keyboard), मल्टीलिंग की बोर्ड (MultiLing Keyboard) आदि हिन्दी कीबोर्ड इंस्टाल किये जा सकते हैं।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम हैं - सिम्बियन, विण्डोज़ फोन तथा ब्लैकबेरी ओऍस। सिम्बियन में आँशिक हिन्दी समर्थन है यानि कुछ संस्करणों में थोड़ा बहुत हिन्दी समर्थन है। विण्डोज़ फोन में हिन्दी समर्थन फिलहाल बिलकुल नहीं है। ब्लैकबेरी ओऍस में संस्करण 6 से हिन्दी प्रदर्शन समर्थन है हालाँकि इनपुट की सुविधा केवल टचस्क्रीन वाले फोनों में ही है।

हिन्दी संगणन सम्बन्धी औजार

हिन्दी संगणन औजारों की बात होने पर सबसे पहले टंकण औजारों की बात आती है। लगभग सभी ऑपरेटिंग सिस्टमों में मानक इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड अन्तर्निर्मित होता है। हिन्दी टंकण के लिये सामान्य मोबाइल

फोनों पर T९ इनपुट व्यवस्था तथा टचस्क्रीन फोनों पर इन्स्क्रिप्ट ऑनस्क्रीन कीबोर्ड होता है।

हिन्दी एवं दूसरी भाषाओं के मध्य दूरी पाटने के लिये मशीनी लिप्यन्तरण तथा मशीनी अनुवाद सेवायें उपलब्ध हैं। मशीनी लिप्यन्तरण सेवाओं द्वारा देवनागरी एवं अन्य भारतीय लिपियों के मध्य परिवर्तन सम्भव है। इनके प्रयोग से आप किसी पंजाबी में लिखे वेबपेज को पलक झपकते ही देवनागरी में पढ़ सकते हैं। दूसरी ओर मशीनी अनुवाद सेवायें इतनी बेहतर तो नहीं पर किसी दूसरी भाषा में लिखी सामग्री का हिन्दी में अर्थ समझने में कुछ सहायता कर देती हैं। मशीनी अनुवाद के लिये गूगल ट्राँसलेट, मन्त्र-राजभाषा तथा बिंग ट्राँसलेटर आदि कुछ सेवायें हैं।

ओसीआर तकनीक किसी इमेज में से टैक्स्ट को पहचान कर उसे सम्पादन योग्य टैक्स्ट में बदलती है। ओसीआर मुद्रित हिन्दी सामग्री के डिजिटलीकरण के लिये एक महत्वपूर्ण औजार है। अंग्रेजी के लिये जहाँ कई ओसीआर हैं वहीं हिन्दी के लिये काफी हद तक सही परिणाम देने वाला हिन्दी/संस्कृत ओसीआर नामक एक ही औजार है। इस दिशा में अभी और काम किया जाना बाकी है।

इलैक्ट्रॉनिक शब्दकोष किसी शब्द का अर्थ, उच्चारण आदि ढूँढना सरल बनाते हैं। हिन्दी के लिये शब्दकोष.कॉम, ई-महाशब्दकोश, अरविन्द-लैक्सिकन, विक्शनरी आदि ऑनलाइन शब्दकोष हैं। इनके अतिरिक्त कई ऑफलाइन इलैक्ट्रॉनिक शब्दकोष भी उपलब्ध हैं। किसी दस्तावेज में टंकित हिन्दी सामग्री हेतु कई वर्तनी जाँचक (स्पैल चैकर) भी उपलब्ध हैं। यद्यपि वेब पर काफी हिन्दी सामग्री उपलब्ध है पर ईबुक्स रूप में नहीं। कुछ पुस्तकें स्कैन कर पीडीऍफ फॉर्मेट में उपलब्ध हैं पर ईबुक्स के प्रचलित फॉर्मेटों में अभी काफी कम हैं।

पाठ से वाक् ऐसे सॉफ्टवेयर तन्त्र होते हैं जो टैक्स्ट को पढ़कर सुनाते हैं। इन्हें टीटीएस (Text to Speech) भी कहा जाता है। हिन्दी के लिये ऐसे कई प्रोग्राम हैं तथा उनका प्रदर्शन भी अच्छा है। इनमें फैस्टिवल, वॉजमी, वाचक वर्ड प्लगइन, ध्वनि, शक्ति इत्यादि शामिल हैं।

दूसरी ओर वाक् से पाठ ऐसे तन्त्र होते हैं जो माइक्रोफोन में बोली गयी ध्वनि को इनपुट के तौर पर लेकर उसे टैक्स्ट में बदलते हैं। अंग्रेजी के लिये जहाँ ऐसे कई प्रोग्राम हैं वहीं हिन्दी के लिये एकमात्र प्रोग्राम सीडैक का श्रुतलेखन-राजभाषा है। सही सैटिंग करने पर यह काफी हद तक सही परिणाम देता है।

प्रकाशन उद्योग द्वारा ग्राफिक्स एवं डीटीपी हेतु मुख्यतः कोरल ड्रॉ, अडॉबी फोटोशॉप तथा अडॉबी इनडिजाइन आदि पैकेजों का उपयोग किया जाता है। इनमें इण्डिक यूनिकोड का समर्थन न होने से हिन्दी में कार्य करने हेतु पुराने नॉन-यूनिकोड फॉण्टों का प्रयोग किया जाता था। अब अडॉबी के उत्पादों के CS6 संस्करण में तथा कोरल ड्रॉ X6 में हिन्दी समर्थन आने से इन पैकेजों में हिन्दी में कार्य करना सरल हो गया है।

फॉण्ट कोड परिवर्तक ऐसे कन्वर्टर प्रोग्राम हैं जो पुराने ऑस्की फॉण्टों (जैसे कृतिदेव, चाणक्य आदि) में टंकित हिन्दी सामग्री को यूनिकोड में बदलते हैं। कई मुफ्त कन्वर्टर प्रोग्राम उपलब्ध हैं जिनसे आप पुरानी ऍन्कोडिंग में टंकित हिन्दी सामग्री को वेब पर प्रकाशन हेतु यूनिकोड में बदल सकते हैं।

वर्तमान में अधिकतर सभी नई प्रोग्रामिंग भाषाओं तथा डाटाबेस सिस्टमों में हिन्दी यूनिकोड समर्थन आ चुका है। डॉट नेट तथा जावा में हिन्दी भाषाई ऍप्लिकेशन बनायी जा सकती हैं। विभिन्न वेब प्रोग्रामिंग भाषाओं द्वारा हिन्दी भाषाई वेब अनुप्रयोग विकसित किये जा सकते हैं।

हिन्दी वेबसाइटें एवं वेब सेवायें

यूनिकोड के आगमन के बाद हिन्दी वेबसाइटों की संख्या तेजी से बढ़ी है। पहले जहाँ अधिकतर हिन्दी वेबसाइटें नॉन-यूनिकोड फॉण्टों में होने से आमजन तक नहीं पहुँच पाती थी वहीं अब नयी वेबसाइटों के अतिरिक्त अधिकतर पुरानी साइटें भी यूनिकोडित हो चुकी हैं। यूनिकोड में बनी वेबसाइटें बिना फॉण्ट के झमेले के पढ़ी जा सकती हैं तथा ये सर्च इंजनों द्वारा भी सूचीबद्ध की जाती हैं। आज अधिकतर हिन्दी समाचार-पत्रों की वेबसाइटें हैं। इसके अतिरिक्त अनेक मनोरंजन पोर्टल, ईकॉमर्स वेबसाइटें आदि भी हिन्दी में हैं। दूसरी ओर विकिपीडिया, विकिट्रैवल, भारतकोश आदि ज्ञानवर्धक विश्वकोष भी हैं।

वर्तमान में अधिकतर सर्च इंजन यथा गूगल, बिंग आदि हिन्दी यूनिकोड खोज का समर्थन करते हैं। हिन्दी खोज के मामले में गूगल का प्रदर्शन अन्य सर्च इंजनों की तुलना में बेहतर है। गूगल का इंटरफेस हिन्दी एवं अन्य दूसरी भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध है। ईमेल की बात करें तो वैसे तो अधिकतर वर्तमान ईमेल सेवायें हिन्दी यूनिकोड का समर्थन करती हैं परन्तु गूगल की जीमेल हिन्दी के लिये सर्वोत्तम है। जीमेल में हिन्दी में मेल लिखने हेतु गूगल का ट्राँसलिट्रेशन टूल भी इनबिल्ट है।

हिन्दी चिट्ठाकारी की इंटरनेट पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सन 2002 में 'नौ दो ग्यारह' नामक चिट्ठे से आरम्भ होकर आज हिन्दी चिट्ठों की संख्या लगभग 30000 तक पहुँच गयी है। यद्यपि अब भी हिन्दी चिट्ठाजगत अंग्रेजी चिट्ठाजगत जितना विस्तृत नहीं पर यह निरन्तर प्रगति कर रहा है। हिन्दी चिट्ठाकारी ने कम्प्यूटर और इंटरनेट पर हिन्दी में रुचि रखने वाले विभिन्न लोगों का समुदाय विकसित करने में सहायता की है। ब्लॉगर तथा वर्डप्रैस के ब्लॉग प्लेटफॉर्म हिन्दी के लिये उपयुक्त हैं।

डिजिटल हिन्दी का भविष्य

कम्प्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन तथा टैबलेट आदि डिजिटल उपकरण हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। आजकल लगभग इन सभी उपकरणों में हिन्दी में काम करना सम्भव है। भाषाई समर्थन ने तकनीकी विभाजन की दूरी को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यूनिकोड सिस्टम ने हिन्दी को सभी कम्प्यूटिंग डिवाइसों तक पहुँचा दिया है। यूनिकोड सिस्टम के कारण कम्प्यूटर पर हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में काम करना अंग्रेजी जैसा ही सरल हो गया है। इसी कारण अब इंटरनेट पर हिन्दी चिट्ठों तथा वेबसाइटों की भरमार है।

ऑपरेटिंग सिस्टमों की बात करें तो माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज़, लिनक्स तथा ऍपल के मॅक ओऍस आदि डैस्कटॉप ऑपरेटिंग सिस्टमों के अतिरिक्त आइओऍस तथा ऍण्ड्रॉइड जैसे मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टमों में भी इण्डिक यूनिकोड का समर्थन आ गया है। कम्प्यूटर पर ऑफिस सुइट जैसे माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, लिब्रेऑफिस इत्यादि में भारतीय भाषाओं में ठीक उसी तरह काम किया जा सकता है जैसे अंग्रेजी में। फलस्वरूप कम्प्यूटर पर भारतीय भाषायें अब केवल टाइपिंग तक सीमित न रहकर शॉर्टिंग, इंडैक्सिंग, सर्च, मेल मर्ज, हैडर-फुटर, फुटनोट्स, टिप्पणियाँ (कमेंट) आदि सब कम्प्यूटरी कार्यों में सक्षम हो गयी हैं। यहाँ तक कि आप फाइलों के नाम भी हिन्दी (या किसी अन्य भारतीय भाषा) में दे सकते हैं।

वर्तमान में विण्डोज़ युक्त कम्प्यूटरों में हिन्दी समर्थन पूरी तरह अन्तर्निर्मित है । प्रकाशन उद्योग द्वारा अत्यधिक उपयोग किये जाने वाले ग्राफिक्स तथा डीटीपी पैकेजों फोटोशॉप, कोरलड्रॉ तथा इनडिजाइन आदि में हिन्दी यूनिकोड समर्थन आने से भविष्य में प्रकाशन उद्योग भी यूनिकोड को पूरी तरह अपनायेगा। यूनिकोड के प्रति बढ़ती

जागरुकता और प्रकाशन के सॉफ्टवेयर पैकेजों के यूनिकोड मित्र संस्करण आने के मद्देनजर इस दशक के अन्त तक कम्प्यूटर और इंटरनेट पर सारा कार्य यूनिकोड हिन्दी में होने लगेगा।

इंटरनेट पर भी अब अन्तर्राष्ट्रीय वर्ण-कूट मानक यूनिकोड खूब लोकप्रिय हो रहा है और सभी प्रमुख वेबसाइटें जैसे गूगल, विकिपीडिया आदि इसे अपना चुकी हैं। यूनिकोड आधारित वेबसाइटों को देखने के लिये पाठक के पास सम्बन्धित फॉण्ट होने की अनिवार्यता भी नहीं है। अगर कोई वेबसाइट यूनिकोड में है तो उसे किसी भी यूनिकोड सक्षम कम्प्यूटर पर देखा जा सकता है। यूनिकोड की लोकप्रियता संसार भर में दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ती जा रही है तथा इसके साथ ही हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भी वेबसाइट, ब्लॉग, ऑनलाइन वेब आधारित औजारों/उपकरणों/सुविधाओं का प्रयोग धड़ाधड़ बढ़ता जा रहा है। ईमेल में सीधे हिन्दी में सम्प्रेषण किया जा रहा है। मोबाइल फोन पर भी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में संक्षिप्त सन्देश (SMS) तथा इंटरनेट संचार किया जाने लगा है।

हिंदी के प्रचार प्रसार में इंटरनेट की भूमिका

भूमंडलीकरण के कारण जनसंचार माध्यमों का दायरा व्यापक एवं विस्तृत हो गया है। नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में इंटरनेट, अधिकांश जनसमुदाय द्वारा बोली एवं उपयोग में लायी जाने वाली हिंदी को अनेक लोगों तक पहुँचाने का कार्य कर रहा है " इंटरनेट को हिंदी में महाजाल कहते हैं।" यह महाजाल इंटरनेट उपभोक्ताओं को एक दूसरे से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। वेब मीडिया के प्रति लोगों का आकर्षण दिनों दिन बड़ता जा रहा है, आज ये मनुष्य के जीवन मे प्रवेश कर उन्हें प्रभावित कर रहा है।

इंटरनेट और हिंदी भाषा

हिंदी भाषा में सर्वप्रथम हिंदी वेबसाइट, बेबुनियाद डॉट कॉम ने 1999 में इंटरनेट पर पहला कदम रखा। और अब जब 21 वर्षो का हिंदी का कालखंड इंटरनेट पर बीत चुका है तो जाहिर सी बात है कि इसका विस्तार भी हुआ। जिसके कारण विभिन्न वेबसाइट्स , ब्लॉग्स , सोशल मीडिया आदि अन्य के माध्यमों से अधिकांश जनसमुदाय तक हिंदी भाषा के पहुँचने का रास्ता आसान हो गया, जिस कारण इंटरनेट पर दिन प्रतिदिन हिंदी के प्रचार एवं प्रसार की गति तेज हो रही है।

हिंदी वेबसाइट्स

आज इंटरनेट पर हिंदी भाषा की अनेक वेबसाइट हैं जिनमें भाषा, साहित्य, पत्रकारिता ,संगठन आदि से संबंधित कुछ साहित्यिक या साहित्येत्तर हैं। साहित्यिक के अंतर्गत हम अनुभूति, अभिव्यक्ति, रचनाकार , हिंदी समय, हिंदी नेस्ट, कविता कोश, संवाद, लघुकथा आदि, वेबसाइट्स देख सकते हैं जिनपर प्रतिदिन स्तरीय साहित्य प्रदर्शित होता रहता है।

रचनाकार विश्व की पहली यूनिकोड हिंदी की सर्वाधिक प्रसारित लोकप्रिय ई-पत्रिका है और जिसके संपादक प्रसिद्ध ब्लॉगर रवि रतलामी हैं। इसके साथ साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय , वर्धा के अभिक्रम के अंतर्गत बनाई गई हिंदीसमयडॉटकॉम वेबसाइट पर तकरीबन 1000 रचनाकारों को हम पढ़ सकते हैं। इसके साथ साथ अधिकांश अखबार भी इंटरनेट पर आ चुके हैं जिनमें दैनिक जागरण, नवभारत टाईम्स(NBT) , हिंदुस्तान, अमर उजाला, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, देशबंधु आदि शामिल हैं। अब इंटरनेट पर प्रकाशित समाचार दुनिया के किसी भी कोने में बैठा इंटरनेट उपभोक्ता किसी भी समय पढ़ सकता है। यूनिकोड, मंगल जैसे

यूनिवर्सल फॉन्ट ने देवनागरी लिपि को कंप्यूटर पर, इंटरनेट द्वारा हिंदी भाषा के विकास के अनेक द्वार खोल दिए हैं।

हिंदी ब्लॉग्स (चिट्ठे)

आलोक कुमार के *नौ दो ग्यारह* नामक चिट्ठे से सन 2003 में हिंदी ब्लॉगिंग की यात्रा प्रारंभ हुई। आज हिंदी भाषा से संबंधित अनेक ब्लॉग्स इंटरनेट पर उपलब्ध हैं "आवश्यकता , उपयोगिता, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दुनिया के सेकेंडों में अपनी बात के जरिये जुड़ने वालो की बढ़ती संख्या को देखते हुए आज ब्लॉगिंग जैसे दूरगामी संचार, माध्यम का पांचवा स्तंभ माना जाने लगा है। कोई ऐसे वैकल्पिक तो कोई ऐसे नई मीडिया की संज्ञा से नवाजने लगा है " ,हिंदी भाषा में अजीत वडनेरकर का शब्दों का सफ़र, आकांक्षा यादव का शब्दशिखर , सुशील कुमार का उल्लूक टाइम्स, डॉ.रूपचंद शास्त्री का उच्चारण, प्रभात रंजन का जानकीपुल, रविशंकर श्रीवास्तव का रचनाकार, गोपाल मिश्रा का अच्छी खबर आदि ब्लॉगों को हम उदाहरण के रूप में ले सकते हैं।

रविचंद्र प्रभात के शब्दों में हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देने में हर उस चिट्ठाकार की महत्वपूर्ण भूमिका है जो बेहतर प्रस्तुतिकरण, गंभीर चिंतन, समसामयिक विषयों पर सूक्ष्म दृष्टि, सृजनात्मकता , समाज की कुसंगतियो पर प्रहार और साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से अपनी बात रखने में सफल हो रहे हैं। चिट्ठा लेखन और वाचन के लिए सबसे सुखद पहलू तो यह है कि हिंदी में बेहत्तर चिट्ठा लेखन की शुरुआत हो चुकी है जो कि हिंदी समाज के लिए शुभ संकेत हैं।

सोशल मीडिया में हिंदी

सोशल मीडिया के अंतर्गत व्हाट्सप्प,फेसबुक ,ट्विटर, ऑर्कुट, आदि का समावेश होता है। इनके माध्यम से सोशल मीडिया के कारण हिंदी का प्रचार एवं प्रसार अनेक पाठकों तक हो रहा है। सोशल मीडिया के कारण हिंदी का साहित्य, कबीर से लेकर अब तक के रचनाकारों तक एक साथ पढ़ने को उपलब्ध हो रहा है। आज हम देखते हैं कि मोबाइल प्रयोगकर्ताओं की संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है, जो आगे चलकर हिंदी के लिए उपयोगी सिद्ध होने वाली है।

सोशल मीडिया में हिंदी का इस्तेमाल विभिन्न क्षेत्र के लोग कर रहे हैं जिनमे अध्यापक,डॉक्टर , राजनेता, अभिनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, खिलाड़ी आदि शामिल हैं जो कि, हिंदी के हित की ही बात है।

इसके साथ सोशल मीडिया के अंतर्गत यूट्यूब का भी महत्वपूर्ण स्थान है।यूट्यूब एक साझा वेबसाइट है जहाँ उपयोगकर्ता वेबसाइट पर वीडियो देख सकता है और वीडियो क्लिप साझा भी कर सकता है। यूट्यूब के माध्यम से हम इंटरनेट पर हिंदी भाषा के साहित्यिक क्षेत्र , शैक्षिक, सामाजिक , राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र से संबंधित अनेकानेक वीडियो किसी भी समय देख सकते हैं, सुन सकते हैं।इसके साथ साथ विभिन्न न्यूज़ चैनलों के कार्यक्रम(यथा सोनी, ज़ी, नेशनल ज्योग्राफिकल, डिस्कवरी आदि)को किसी भी समय देख सकते हैं या सुन सकते हैं।

इंटरनेट पर हिंदी साहित्यिक सीमाओं को लांघकर अपना प्रचार प्रसार कर रही है वह कहानी, उपन्यास से आगे बढ़कर अनेकानेक साहित्यिक तथा साहित्येत्तर विधाओं में विश्व की अन्य भाषाओं से कदमताल कर रही है।

इंटरनेट पर हिंदी का दायरा ब्लॉग्स को लांघ चुका है। हिंदी अखबारों की वेबसाइट्स ने करोड़ों नए पाठकों को अपने साथ जोड़कर हिंदी को और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट पर हिंदी के बढ़ते चलन से माना जा रहा है कि अगले साल तक हिंदी में इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या अंग्रेजी में इसका उपयोग करने वालों से ज्यादा हो जाएगी। सर्च इंजन गूगल का मानना है कि हिंदी में इंटरनेट पर सामग्री पढ़ने वाले प्रति वर्ष 94 फीसदी बढ़ रहे हैं। जबकि अंग्रेजी में यह हर साल 17 फीसदी घट रही है। गूगल के अनुसार 2021 तक इंटरनेट पर 20.1 करोड़ लोग हिंदी का उपयोग करने लगेंगे। यह हिंदी के प्रचार-प्रसार व वैश्विक स्वीकार्यता का ही परिणाम है

हिन्दी के प्रचार और विस्तार में सोशल मीडिया की भूमिका

हिंदी आज एक ऐसी भाषा है,जो दुनिया में इतने बड़े स्तर पर बोली व समझी जाती है। मीडिया ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुनियाभर में आज भारतीय फिल्में व टेलीविजन कार्यक्रम देखे जाते हैं। इससे भी दुनिया में हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ है। सोशल मीडिया,इंटरनेट व मोबाइल के कारण आज युवा पीढ़ी इस भाषा का सबसे अधिक प्रयोग कर रही है। हिंदी आज देशभर में आम बोलचाल की भाषा है। आज अधिकतर लोग हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। आज यह भाषा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश को जोड़ने वाली भाषा है। हिंदी के विस्तार में मीडिया की अहम भूमिका है। हिंदी भाषा दुनियाभर में समझी-बोली जाती है। यह इस भाषा की ताकत को बताता है। भाषा लोगों को जोड़ने का काम करती है,और आपसी सौहार्द को बढ़ाती है। हिंदी पत्रकारिता में भाषायी चुनौतियाँ भी सामने रही हैं। सोशल मीडिया का असर बस नकारात्मक ही नहीं है। ट्विटर जैसे मंचों की शब्द सीमा ने अपनी बात को चुस्त और कम से कम शब्दों में कहने के अभ्यास को संभव बनाया है। सोशल मीडिया ने सार्वजनिक

अभिव्यक्ति और एक बड़े समुदाय तक निडर और बिना रोक-टोक तथा नियंत्रण के अपनी बात,अपनी सोच और अनुभव पहुंचाना संभव बनाकर करोड़ों लोगों को एक नई ताकत,छोटी-बड़ी बहसों में भागीदारी का नया स्वाद और हिम्मत दी है। इस नई ताकत ने सरकारों और शासकों को ज्यादा पारदर्शी,संवादमुखी और जवाबदेह बनाया है,जनता के मन और नब्ज को जानने का नया माध्यम दिया है। सोशल मीडिया की ताकत ने सरकारों को अपने फैसलों,नीतियों और व्यवहारों को बदलने पर भी मजबूर किया है,पर क्या इस मीडिया ने लोक-विमर्श को ज्यादा गंभीर,गहरा,व्यापक,उदार बनाया है ? क्या जब करोड़ों लोग एकसाथ इतना लिख-बोल रहे हैं तो इन मंचों पर सार्वजनिक विमर्श की गुणवत्ता बढ़ी है,स्तर बेहतर हुआ है ? इस पर दो टूक राय देना संभव नहीं,क्योंकि संसार में कुछ भी एकांगी,एक दिशात्मक नहीं होता।

जब इंटरनेट ने भारत में पांव पसारने शुरू किए तो यह आशंका व्यक्त की गई थी कि कम्प्यूटर के कारण देश में फिर से अंग्रेज़ी का बोलबाला हो जाएगा,किंतु यह धारणा निर्मूल साबित हुई है। आज हिंदी वेबसाइट तथा ब्लॉग न केवल धड़ल्ले से चले रहे हैं,बल्कि देश के साथ-साथ विदेशों के लोग भी इन पर सूचनाओं का आदान-प्रदान तथा बातचीत कर रहे हैं। इस प्रकार इंटरनेट भी हिंदी के प्रसार में सहायक होने लगा है।

हिन्दी को लेकर कुछ लोग यह शिकायत करते हैं कि मीडिया व इंटरनेट के कारण हिंदी भाषा विकृत हो रही है और इसका मूल स्वरूप नष्ट हो रहा हैं,किंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा एक बहती नदी है और जब उसका अधिक इस्तेमाल होगा तो उसके स्वरूप में कुछ-न-कुछ बदलाव अवश्य आएगा। वास्तव में यह बदलाव विकार नहीं,संस्कार है। अक्सर कहा जाता है कि मीडिया में इस्तेमाल होने वाली भाषा हिंदी नहीं 'हिंग्लिश' है। इसी तर्क़ के आधार पर देखा जाए तो आज अंग्रेज़ी में भी हिंदी का खूब समावेश हो चुका है। अंग्रेज़ी

मीडिया और विज्ञापनों में हिंदी मुहावरों,शब्दों और उक्तियों का खुलकर प्रयोग होता है। यदि मीडिया की भाषा परिनिष्ठित हिंदी ही होती,तो क्या इतने अधिक अहिंदी भाषी लोग रेडियो या टी.वी. के कार्यक्रमों और समाचारों में अपनी बात हिंदी में रख पाते ? हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए उसमें स्वच्छंदता लाना आवश्यक है। यह ऐतिहासिक सत्य है कि जब भी कोई भाषा पुराने तटबंधों को तोड़कर नये क्षेत्र में प्रवेश करती है तो शुद्धतावादी तत्व उससे चिंतित हो जाते हैं। सच तो यह है कि हिंदी इस समय स्वीकार्यता के राजमार्ग पर सरपट दौड़ रही है और हिंदी अश्वमेध के घोड़ों को रोक पाना किसी के बस में नहीं है। मीडिया इस दौड़ को और गतिशील बना रहा है। आज का सच यह है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रसार के लिए मीडिया की ज़रूरत है,उसी तरह मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी की आवश्यकता है।

हिंदी के विकास में वेब मीडिया का योगदान

आज के प्रौद्योगिकी के दौर में मीडिया एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरा है और उसमें भी न्यू मीडिया यानि वेब मीडिया के प्रति लोगों का आकर्षण प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है भूमंडलीकरण के दौर में मीडिया का दायरा काफ़ी विस्तृत हो चुका है, ऐसे में विभिन्न भाषाओँ का विकास भी वेब मीडिया के तहत ही हो रहा है . आज की स्थिति में वेब और भाषा एक दूसरे के अहम सहयोगी माने जा सकते हैं. भारत जैसे विशाल देश में जहाँ व्यापक क्षेत्र में हिंदी बोली जाती है वहां इसके विकास में वेब मीडिया के योगदान को नज़रंदाज़ नही किया जा सकता है. ये सच है कि वेब के असर से हिंदी के स्वरूप में इसके मूल स्वरूप से भिन्नता है लेकिन यही भिन्नता ही इस विकास की गाड़ी के पहियें हैं. एक विस्तृत दायरे के साथ हिंदी अपने आप में व्यापक है. वेब मीडिया के प्रयोगों के बावजूद हिंदी के अस्तित्व पर कोई संकट नही है. दूसरी भाषाओँ के कुछ शब्दों के प्रयोग से ही हिंदी वेब के लायक बनी

अन्यथा अपने मूल स्वरुप में हिंदी एक दायरे तक सीमित होकर रह जाती.

यूँ तो 80 के दशक में ही हिंदी को कंप्यूटर की भाषा बनाने का प्रयास शुरू हो चुका था परन्तु वेब के साथ हिंदी का प्रयोग 20वीं सदी के समाप्ति के बाद शुरू हुआ. सन 2000 में यूनिकोड के पदार्पण के बाद 2003 में सर्वप्रथम हिंदी में इन्टरनेट सर्च और ई मेल की सुविधा की शुरुआत हुई . हिंदी के विकास में यह एक मील का पत्थर साबित हुआ. 21 वीं सदी के पहले दशक में ही गूगल न्यूज़, गूगल ट्रांसलेट तथा ऑनलाइन फ़ोनेटिक टाइपिंग जैसे औजारों ने वेब की दुनिया में हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण सहायता की.

उपरोक्त सभी ऑनलाइन औजार यूँ तो प्रत्यक्ष से कोई बड़ी भूमिका में न रहें हों परन्तु हिंदी के समग्र विकास में इनकी सहायता से इंकार नही किया जा सकता है. भारत जैसे देश में जहाँ महज 10 प्रतिशत से भी कम लोग अंग्रेजी का ज्ञान रखते हैं, वहां हिंदी के इस स्वरूप की आवश्यकता बढ़ जाती है. हिंदी के इसी महत्व पर मशहूर विचारक सच्चिदानन्द सिन्हा ने लिखा है – " भाषा जो प्रतीकों का समुच्चय होती है, संस्कृतियों के संकलन और सम्प्रेषण का सबसे सरल माध्यम भी होती है. और सम्प्रेषण आम बोलचाल की भाषाओँ से भी होता है – बल्कि अधिक सशक्त रूप से". यहाँ सम्प्रेषण के एक और सशक्त माध्यम "वेब मीडिया" का भी उल्लेख किया जा सकता है. या फिर हम कह सकते हैं कि वेब मीडिया एक ऐसा गुरुकुल है जहाँ प्रत्येक भाषा एक संकाय की भांति प्रतीत होती है. इलेक्ट्रॉनिक संचार – माध्यम और कंप्यूटर आदि के उपयोग में हिंदी अपनी जगह बना ली है. इससे एक तरफ इन माध्यमों से हिंदी का प्रसार हो रहा है, तो दूसरी तरफ हिंदी का अपना बाज़ार भी बन रहा है. इससे हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका मजबूत हो रही है. कुछ इन्ही बातों को ध्यानमें रखकर पूर्व अमेरिकी

राष्ट्रपति ने कहा था- "यदि भारत को समझना है तो हिंदी सीखो". देबाशीष चक्रवर्ती के 'एग्रीगेटर' से शुरू हुआ हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास बहुत पुराना नही है. अलोक कुमार के 'नौ दो ग्यारह' नाम के हिंदी के पहले ब्लॉग से श्रीगणेश के बाद आज हजारों की संख्या में हिंदी ब्लॉग वेब में मौजूद हैं. अपनी अभिव्यक्ति को अपनी भाषा में प्रदर्शित करने का सुख वेब मीडिया में ब्लॉगिंग के माध्यम से प्राप्त होता है. आज जबकि वर्डप्रेस, इन्दिक्ज़ूमला जैसे ढेरों ऐसे मंच उपलब्ध हैं जहाँ हम अपनी बात बेहद स्पष्ट व विस्तृत रूप से रख सकते हैं. यहाँ स्पष्टता से मतलब भाषीय स्वत्रंतता से है. हिंदी भाषा में कही बात यदि अंग्रेजी अनुवाद में कही जाय तो यह निश्चित है कि इसकी स्पष्टता में कम से कम दस फीसदी की कमी जरूर आयेगी. हिंदी के विकास में ब्लॉगिंग ने निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इसका प्रमाण यह है कि हिंदी के कई ऐसे ब्लॉग हैं जो रोजाना १००० से भी ज्यादा व्यक्तियों द्वारा देखे जाते हैं और यह कोई सामान्य बात नही है . शैली तथा वैचारिक रूप से अलग अलग ये ब्लॉग अपनी भाषायी खुशबू को प्रतिदिन हजारों जनमानस तक पहुंचाते हैं. किसी भाषा के विकास व उत्थान के लिए इससे बेहतर क्या हो सकता है. हिंदी के इसी स्तिथि को हम मजरूह सुल्तानपुरी के इस शेर से भी जोड़ सकते हैं- "मनचले बुनेंगे अन रंगो-बू के पैराहन अब संवर के निकलेगा हुस्न कारखाने से"

वेब मीडिया के आने से पूर्व सभी कृतिकारों को अपनी बात आम जनमानस तक पहुँचाने में अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ता था. ढेरों प्रयास के बावजूद भी वे अपनी कृति को एक सीमित दायरे तक ही पंहुचा पाते थे. वेब मीडिया ने इन सभी सीमाओं को तोड़ा है. आज सभी लेखक गुमनामी की कालिमा को इस माध्यम के प्रकाश की सहायता से खत्म कर सकते हैं.

इन्टरनेट पर हिंदी में खोज आने के बाद हमारी मूल जिज्ञासा का जवाब हिंदी में ही पलक झपकते ही हमारे सामने होता है, और ये सब इसी लिए सम्भव हुआ है क्योंकि इंटरनेट के सागर में नित प्रतिदिन हिंदी ज्ञान स्वरूपी नदियाँ समाहित हो रही हैं. और इसी प्रक्रिया का परिणाम हिया कि आज भारत से बाहर सात समन्दर पार भी हिंदी सभाएं एवं गोष्ठियां, सम्मेलन, पुरस्कार समारोह आदि आयोजित किये जा रहे हैं. भारत की भाषायी स्तिथि और उसमे हिंदी के स्थान को देखने के बाद यह स्पष्ट है कि हिंदी आज भारतीय जनमानस के सम्पर्क की राष्ट्रीय भाषा है. संख्या की दृष्टि से दुनिया की इस तीसरी सबसे बड़ी भाषा के जानने वालों की यह विशाल जनसंख्या हिंदी के अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क का साक्षात्कार कराती है क्योंकि आज दुनिया के हर कोने में बसे भारतीय वेब मीडिया की सहायता से हिंदी को तवज्जो देना शुरू कर चुके हैं. उपर्युक्त तथ्यों और बातों के आधार पर ये कहा जा सकता है कि वेब मीडिया ने हिंदी समेत सभी भाषाओँ को एक सामान वैश्विक मंच प्रदान किया है. चूँकि हिंदी की अपनी विशेषताएं हैं इसलिए हिंदी अन्य भाषाओँ से तेज़ व सकारात्मक रूप से परिवर्तनशील यानि कि विकासशील है.

राजभाषा और प्रौद्योगिकी का क्षितिज

प्रौद्योगिकी का विकास भूमंडलीकरण का एक प्रभाव है। भारत देश भी प्रौद्योगिकी को उतनी ही तेजी और तन्मयता से अपना रहा है जिस तरह विश्व के अन्य उन्नत देश इसे स्वीकार कर रहे हैं। महज एक कंप्यूटर के द्वारा एक व्यक्ति अपनी लगभग सारी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकता है। वर्तमान में कंप्यूटर कथाओं में मशहूर अलादीन का चिराग हो गया है। यह स्थिति विश्व की एक समान्य प्रचलित स्थिति कही जा सकती है। इस उत्साहवर्धक स्थिति में दो स्थितियाँ कार्यरत हैं जिसमें प्रथम है उन्नत शहर और द्वितीय हैं विकास की ओर बढ़ाने को प्रयासरत कस्बे और गाँव। इन दो स्थितियों का यदि विश्लेषण किया जाये तो यह

तथ्य स्पष्ट होगा कि भारत के अधिकांश कस्बों और गाँव में प्रौद्योगिकी के लिए आवश्यक विद्युत आपूर्ति प्रायः बाधित रहती है परिणामस्वरूप प्रौद्योगिकी की उपयोगितामूलक प्रगति बाधित होती है। इसके अतिरिक्त कंप्यूटर के द्वारा अपने आवश्यक कार्यों के निपटान के बजाय जनसम्पर्क के द्वारा कार्य करना देश के सामान्य व्यक्ति को अधिक संतोषजनक लगता है। राजभाषा और प्रौद्योगिकी के क्षितिज निर्माण के दो प्रमुख कारण अति महत्वपूर्ण हैं।

वर्तमान में राजभाषा प्रौद्योगिकी में ना तो पूरी तरह प्रचलित है और ना ही पूर्णतया अप्रचलित है अतएव यह कह पाना कि विशेषकर राजभाषा कार्यान्यवन में प्रौद्योगिकी बाधक है, पूर्वाग्रह के सिवाय कुछ नहीं है। राजभाषा और प्रौद्योगिकी के क्षितिज निर्माण में सर्वप्रथम राजभाषा अधिकारियों और राजभाषा कार्यान्यवन से जुड़े कर्मियों में प्रौद्योगिकी की कम जानकारी बाधक है। प्रौद्योगिकी के द्वारा राजभाषा के कार्यों को संपादित करने की धीमी गति और अंग्रेजी के बिना कम्प्युटर पर कार्य करना कठिन है जैसी धारणाएँ कहीं न कहीं राजभाषा की गति को प्रभावित करती हैं। ऐसी सोचवाले अधिकांश राजभाषा कार्यान्यवन से जुड़े लोगों को इस तथ्य से भी अवगत होना चाहिए कि भाषा प्रौद्योगिकी में बाधक नहीं है बल्कि बाधक अपूर्ण सोच है। अपूर्ण सोच से सिंचित मानसिकता को स्वाभाविक मानसिकता में परिवर्तित करने के लिए हिन्दी, राजभाषा और प्रौद्योगिकी की अद्यतन प्रगति और उपलब्धियों कि जानकारी अत्यावश्यक है। इस प्रकार की जानकारियों के लिए महज अध्ययन पर ही निर्भर रहना परिणामदायी नहीं माना जाना चाहिए बल्कि इसके लिए स्वयं कार्य करना भी जरूरी है। राजभाषा कार्यान्यवन से जुड़े कितने प्रतिशत लोग राजभाषा का अपना सम्पूर्ण कार्य प्रौद्योगिकी की सहायता से करते हैं यह एक शोध का विषय है।

एशिया के देशों से यदि राजभाषा हिन्दी की तुलना करें तो यह स्थिति स्पष्ट होती है की चीनी, जापानी, कोरियन आदि राजभाषाएँ हिन्दी की तुलना में प्रयोग में कहीं आगे हैं। प्रौद्योगिकी में राजभाषा हिन्दी का अन्य विकसित और कतिपय विकासशील देशों से पीछे होने का प्रमुख कारण है राजभाषा में प्रौद्योगिकी का अधिक प्रयोग ना होना। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि प्रौद्योगिकी में राजभाषा के अधिकतम प्रयोग के लिए क्या करना चाहिए। प्रयोग एवं प्रयास की कोई सीमा नहीं होती है तथापि निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देकर प्रगति की जा सकती है. :-

1 राजभाषा विभाग को स्पष्ट दिशानिर्देश दिये जाएँ कि विभिन्न प्रकार की रिपोर्टें, राजभाषा प्रशिक्षण की सामग्री, विभिन्न बैठकों के कार्यवृत्त, सामान्य पत्राचार आदि को पूर्णतया प्रौद्योगिकी की सहायता से पूर्ण किया जाय। आवधिक अंतराल पर इसकी जांच की जाय और समीक्षा की जाय।

2 यूनिकोड प्रत्येक कम्प्युटर में सक्रिय किया जाय और देवनागरी लिपि में टंकण हेतु कर्मियों को प्रशिक्षित किया जाय और आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाय।

3 देवनागरी टायपिंग न जाननेवाले कर्मियों को उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं में से यथोचित सुविधा प्रदान कर यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि देवनागरी टायपिंग में उन्हें किसी प्रकार की असुविधा न हो अन्यथा इसका दूरगामी विपरीत परिणाम हो सकता है।

4 नवीन अथवा नवीनतम हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर सुविधाओं का उपयोग किया जाय।

5 मंगल फॉन्ट के अतिरिक्त उपलब्ध अन्य यूनिकोड फॉन्ट का भी प्रयोग किया जाय जिससे देवनागरी टाईपिंग और आकर्षक बन सके।

6 राजभाषा के कामकाज से सीधे जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी के विभिन्न सॉफ्टवेयर की न केवल जानकारियाँ प्रदान की जाय बल्कि उन सॉफ्टवेयर आदि का गहन प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाय।

7 राजभाषा विभाग प्रौद्योगिकी का उपयोग निरंतर कर रहा है, यह सुनिश्चित करने के लिए अन्य उपायों के साथ-साथ संबन्धित कार्यालय के आइ टी विभाग को निगरानी का दायित्व सौंपा जाय।

इस प्रकार के अन्य कई उपाय हैं जिनके प्रयोग से राजभाषा की प्रौद्योगिकी के संग एक बेहतरीन जुगलबंदी हो सकती है किन्तु इसके लिए सघन कार्रवाई और गहन अनुवर्ती कार्रवाई की आवश्यकता है अन्यथा यह केवल आंकड़ों तक ही सीमित रह जाएगा। यहाँ इस बात का उल्लेख करना भी आवश्यक है कि समान्यतया यह धारणा है कि कार्यालय में नव नियुक्त युवाकर्मी प्रौद्योगिकी से अत्यधिक जुड़े हुये हैं। यह सत्य है किन्तु यह नव युवाकर्मी राजभाषा को प्रौद्योगिकी से कितना जोड़ रहे हैं यह एक निगरानी और समीक्षा का विषय है। प्रौद्योगिकी में हिन्दी की उपलब्धियों और नए उत्पादों की चर्चा मात्र से राजभाषा की प्रगति नहीं हो सकती है बल्कि प्रत्येक कार्यालय का राजभाषा विभाग जब तक स्वयं अपना सम्पूर्ण कार्य प्रौद्योगिकी की सहायता से सम्पन्न नहीं करता है तब तक राजभाषा और प्रौद्योगिकी का क्षितिज एक भ्रम को यथार्थ का अमलीजामा पहनाता रहेगा।

राजभाषा और प्रौद्योगिकी के मध्य देवनागरी और रोमन एवं देवनागरी लिपि को लेकर एक जंग छिड़ी है। इंटरनेट, मोबाइल आदि उपकरणों के प्रयोक्ता तेज गति की और आसानीपूर्वक टाइप करनेवाले की बोर्ड की चाहत में निम्नलिखित उपायों को अपनाते हैं :-

(1) रोमन लिपि का की बोर्ड का उपयोग करते हुये हिन्दी को रोमन लिपि में लिखते हैं। इस प्रकार के उपयोगकर्ता यह मानते हैं कि इससे

संवाद और सम्प्रेषण तेज़ गति से होता है और रोमन लिपि में हिन्दी लिखना आसान भी है।

(2) रोमन की बोर्ड का उपयोग करते हुये हिन्दी को देवनागरी लिपि में लिखते हैं। इस प्रकार के उपयोगकर्ता यह मानते हैं कि इससे देवनागरी लिपि में स्पष्ट, सटीक और शुद्ध रूप से संवाद और सम्प्रेषण होता है। देवनागरी लिपि में हिन्दी लिखना वस्तुतः एक सुखद प्रक्रिया भी मानते हैं।

(3) देवनागरी की बोर्ड का उपयोग करते हुये देवनागरी लिपि में हिन्दी लिखते हैं। इस प्रकार के उपयोगकर्ता यह मानते हैं कि अपनी भाषा का शुद्ध रूप में उपयोग करना चाहिए और भूमंडलीकरण के दौर में नित सिमटती दुनिया में अपनी भाषा को प्रखर बनाए रखने के लिए सजग और सतर्क रहना चाहिए।

की बोर्ड देवनागरी का हो या रोमन का हो यह प्रश्न ही आधारहीन है। देवनागरी लिखने के लिए हिन्दी की बोर्ड का ही प्रचलन होना चाहिए परंतु यहाँ यह ध्यान देने कि बात है कि राजभाषा से जुड़े कितने लोग देवनागरी की बोर्ड के समर्थन में प्रयासरत रहते हैं? बैकों, कार्यालयों आदि में राजभाषा में कार्य करने के लिए विभिन्न उपलब्ध प्रणालियों द्वारा राजभाषा के कामकाज को

बढ़ाने के लिए स्वयं राजभाषा अधिकारी सुझाव देते हैं। यद्यपि थोड़े अभ्यास से देवनागरी की बोर्ड से आसानी से सफल संवाद और सम्प्रेषण किया जा सकता है किन्तु यह भी आवश्यक है कि देवनागरी की बोर्ड को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए प्रयास अनवरत जारी रहे।

यूनिकोड: तकनीक और भाषा का सेतु

देश-विदेश के लोगों के बीच की जिस दूरी को इंटरनेट ने कम किया था, विभिन्न भाषाओं की खाई ने उसे फिर से बढ़ा दिया। दुनियाभर की अलग-अलग भाषाएँ, अलग-अलग फॉन्ट और इनके लिए अलग-अलग सॉफ्टवेयर यानी ज्ञान व सूचना के महासागर के सामने होने के बाद भी 'निरक्षरता'।

अब कंप्यूटर पूरी तरह से 'स्वतंत्र' व 'स्वाधीन' हो गए हैं।यूनीकोड ने इंटरनेट को भी सही मायने में एक नई दिशा व गति दी है। अगर कोई वेबसाइट यूनिकोड पर आधारित है तो उसे संसार में कहीं भी आसानी से खोला जा सकता है और उसके 'टेक्स्ट' को अपने कंप्यूटर में मनचाही फाइल के रूप में 'सेव' और 'एडिट' भी किया जा सकता है। यह आजकल प्रचलित लगभग सभी तरह के सॉफ्टवेयर पर काम करने की सुविधा उपलब्ध कराता है। वेब जगत के लिए तो यह बहुत फायदेमंद है। कंप्यूटर (विशेष रूप से सर्वर) को विभिन्न प्रकार की 'प्रोग्रामिंग लैंग्वेज' और सॉफ्टवेयर के बीच तालमेल बैठाना होता है। ऐसे में यूनिकोड से काम बहुत आसान हो जाता है।

यूनिकोड ने हिंदी में ईमेल, चैटिंग, सर्चिंग, सर्फिंग आदि को भी आसान बना दिया है। गूगल, विकीपीडिया, एमएसएन आदि इसके उदाहरण हैं। वैदिक संस्कृत, मलयालम, कन्नड़, तमिल, बंगाली, गुरमुखी, गुजराती, उड़ीया आदि का भी इसके जरिए इंटरनेट के माध्यम से विश्वपटल तक पहुँचना संभव हो सका है। इससे भारतीय भाषाओं का दायरा और ज्यादा बढ़ेगा।

भारत सरकार ने भी विभिन्न फॉन्ट पर होने वाली दिक्कतों से बचने के लिए यूनिकोड प्रणाली को अपनाया हुआ है। दुनिया के ज्यादातर कंप्यूटर एमएस विंडोज पर चल रहे हैं और विंडोज-2000, विंडोज

एक्सपी, विंडोज विस्टा तथा विंडोज-7 में तो यूनिकोड फॉन्ट (मंगल) पहले से ही होता है। इसे अलग से डालने की जरूरत नहीं होती, बस इस व्यवस्था को 'एक्टिव' करना पड़ता है।

लाइनक्स व मैकिन्टोश भी इस राह पर हैं। इसका एक बड़ा फायदा यह है कि इस फॉन्ट पर बनी 'फाइल' को विश्व में कहीं भी आराम से खोला, पढ़ा व उस पर काम किया जा सकता है। पहले इसके लिए अलग से फॉन्ट भी भेजने पड़ते थे और कई ऐसे फॉन्ट भी होते हैं जो किसी खास तरह के सॉफ्टवेयर पर ही काम कर पाते हैं। इसकी मदद से आप अपने कंप्यूटर की तारीख, समय, फाइलों के नाम वगैरह भी हिन्दी में रख सकते हैं।

आगे चलकर इनसे दिक्कत यह आने लगी कि किसी एक फॉन्ट पद्धति पर तैयार की गई 'फाइल' दूसरे फॉन्ट पर खुलती ही नहीं थी। इससे हिन्दी या दूसरी प्रादेशिक भाषाओं पर काम करना बहुत मुश्किल होने लगा था। इसके अलावा इंटरनेट, ई-मेल और वेबसाइट के संबंध में भी इन विभिन्नताओं के कारण कई तरह की अड़चने आने लगी थी। इन सबका केवल एक ही हल था 'वैश्विक मानकीकरण' यानी 'यूनिकोड'। यूनिकोड ने कंप्यूटर को नए आयाम प्रदान किए हैं।

हिंदी भाषा चुनौतियां और समाधान

हिंदी भारतीय सभ्यता, संस्कृति और समाज की भाषा है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि इक्कीसवीं सदी में कोई भी भाषा ऐसी नहीं है, जिसको चुनौतियां का सामना नहीं करना पड़ रहा । हालांकि किसी भाषा के सामने चुनौतियां कम है और किसी के सामने ज्यादा हैं। आज हम सभी जानते हैं कि हिंदी अपनी पहचान बनाए रखने के लिए बहुत सारी मुश्किलों और चुनौतियों का सामना कर रही है। जिन पर खासतौर से ध्यान देने की जरूरत है।

21वीं सदी वास्तव में कंप्यूटर और इंटरनेट की सदी है। कंप्यूटर आज की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। क्योंकि समय के साथ-साथ शैक्षिक प्रणाली में भी परिवर्तन हुए हैं, और इस प्रणाली को डिजिटल प्रौद्योगिकी से जोड़ा गया है। नई कक्षा के छात्र इसकी मदद से जल्दी भाषा सीख सकते हैं। लेकिन भले ही अधिकांश घराने हिंदी शिक्षा के लिए पुराने ढ़र्रे पर रहे हैं, जबकि बच्चे आंखें खोलते ही मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर और टैबलेट के साथ खेलते दिखाई दे रहे हैं। यानी आंखें खोलते ही वह खुद को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के करीब पाता है। लेकिन होश संभालते हुए जो शिक्षा प्रणाली उनके सामने पेश की जाति है उनमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। जबकि आज के दौर में वही भाषाएं जिंदा रहेंगी जो अपने आप को बदलते हुए इलेक्ट्रॉनिक और तकनीकी पटल के साथ जुड़ने की क्षमता रखती हैं। किसी भी भाषा की तरक्की का दरोमदार उसके बोलने वालों के ऊपर होता है कि वह किस हद तक अपनी भाषा को बदलते हुए हालतों के साथ खुद को जोड़ते हैं।

जिन लोगों को हिंदी का दर्द है, वे थोड़ा नजर दौड़ाकर देखें कि हिंदी के अलावा किसी दूसरी भाषा की ऐसी हालात तो नहीं है। पंजाब में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के हजारों स्कूल हैं। जहाँ हिंदी विषय पढ़ाया जाता है। एक जमाना था जब हिंदी मीडियम स्कूलों की भरमार थी। अब सवाल यह है कि जब तक हिंदुस्तान की स्कूल प्रणाली में अगर पढ़ने का माध्यम हिंदी नहीं होगा, छात्रों को पहली भाषा के तौर पर हिंदी पढ़ने का मौका नहीं मिलेगा तो हिंदी का खोया हुआ रुतबा तो क्या हिंदुस्तान की क्षेत्र की बोली बन कर रह जाएगी।

21 वीं सदी में, अगर हमें वाकाई हिंदू से हमदर्दी होती, तो हम अपने बच्चों को हिंदी शिक्षा से वंचित नहीं करते। मैं यह नहीं कहता कि हिंदी

वाले अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर या पायलट और वैज्ञानिक मत बनाएं। जरूर बनाएं लेकिन साथ में हिंदी भी तो सिखानी चाहिए। क्योंकि अगर किसी राष्ट्र को गुलाम बनाना हो तो पहले उसकी भाषा खत्म की जाती है। उसकी जड़ें काटी जाती हैं। अगर हम खुद अपनी भाषा को तव्वज्जो नहीं देंगे तो अपनी पहचान खो देंगे और अपनी जड़ें अपने आप काटने के लिए मजबूर हो जाएंगे।

जहां तक रोजगार के की बात है, तो माता-पिता को यह डर सताता रहता है कि प्रतियोगिता के दौर में हमारे बच्चे उन बच्चों से पिछड़ जाएंगे जो आधुनिक शिक्षा ले रहे हैं। और उनके बच्चों को कोई रोजगार हासिल नहीं हो पाएगा। यह सिर्फ एक वहम है। हिंदी पढ़ने का मतलब यह नहीं है कि बच्चे किसी अन्य भाषा को नहीं पढ़ेंगे, और न ही इसका अर्थ है कि हिंदी पढ़ना रोजगार में सहायक नहीं होगा।

रोजगार की समस्या आज हर व्यक्ति को है। क्या कला और विज्ञान वर्ग के छात्र रोजगार के लिए भटक नहीं रहे हैं? फिर हम क्यों इस खौफ में अपनी भाषा छोड़ रहे हैं? हमें यह न भूलें चाहिए कि हिंदी हमारी भाषा है, और इस से काटकर हम इसकी पहचान खो देंगे क्योंकि भाषा किसी कौम और देश के जमीर की आवाज होती है, उसका मन और उसकी संस्कृति चेहरा होती है। हिंदी की नई नस्ल को यह एहसास दिलाया जाए कि भले ही हिंदी रोजगार दे या न दे, लेकिन वह हमारी विरासत और पहचान हैं, इसलिए हिंदी से उनका जज्बाती लगाव होना चाहिए। यदि हम रूसी और चीनियों की तरह अपनी भाषा के महत्व को समझ जाएं तो हम इस को मुहब्बत करेंगे और हमारी तरक्की के रास्ते में भी कोई बाधा नहीं आएगी।

हिंदी भाषा को जो सबसे बड़ा नुकसान हुआ वह यह कि हिंदी केवल हिंदूओं की भाषा नहीं थी, लेकिन सांप्रदायिक धार्मिक ताकतों ने इस का

खूब इस्तेमाल किया और भाषा की राजनीति करने वालों ने इसको धर्म से जोड़ दिया। हिंदी देवनागरी लिपि होने के कारण हिंदूओं की समझी जाने लगी। और उर्दू फारसी लिपि होने के कारण मुसलमानों की मानी जाने लगी। जबकि उर्दू और हिंदी दोनों भाषाएं सगी बहने हैं। एक आम अंदाजे के मुताबिक उर्दू में सत्तर फीसदी शब्द हिंदी भाषा के हैं। अरबी और फारसी के केवल बीस या तीस फीसदी शब्द हैं। इसी प्रकार लगभग एक तरह के मुहावरों व कहावतों का इस्तेमाल दोनों भाषाओं में समान होता है। दोनों ने एक दूसरे को प्रभावित किया है और एक दूसरे से प्रभावित हुई हैं। हर व्यक्ति यह भी अच्छी तरह से जानता है कि भाषाओं का कोई धर्म नहीं होता है। हिंदी से मुसलमान भी उतना ही प्यार करता है जितना गैर मुसलमान करते हैं।

अब, आम तौर पर यह माना जाने लगा है कि हिंदी पढ़ने से कुछ लाभ नहीं होगा। इन परिस्थितियों में, 21 वीं सदी में हिंदी के विकास की हालात कैसी होगी इस का अंदाजा लगना मुश्किल नहीं है। हमें हिंदी की इस सुरत-ए-हाल के समाधान के लिए और उसकी बेहतरी के लिए हमें कुछ अहम कदम उठाने होंगे।

हमें यह न भूलना चाहिए कि कोई भी शुभ काम अपने घर से ही शुरू करना होता है, इसलिए हमें अपने घरों में हिंदी का माहौल बनाना होगा ताकि हमारे बच्चे हिंदी में पीछे न रहें। उन्हें हिंदी भाषा सिखाएं, हिंदी भाषा सिखाएं और पढ़ाएं और हिंदी भाषा की शिक्षा दें। कम से कम एक अखबार और एक पत्रिका जरूर मंगवाएं। नियमित रूप से किताबें खरीदें और बच्चों की किताबें हिंदी में खरीदें और उन्हें उपहार देने की आदत डालें। यह भी हिंदी के विकास का एक प्रयास है।

हिंदी के विकास के लिए, हमें अपने हस्ताक्षर, दुकानों के फ्लेक्स बोर्ड, अपने विजिटिंग कार्ड, शादी के कार्ड इत्यादि में हिंदी का इस्तेमाल

करना चाहिए। क्योंकि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो आसानी से हर वर्ग को समझ आती है। हिंदी के विकास के लिए हमें सरकारी और गैर-सरकारी कार्यालयों में हिंदी को प्रोत्साहित करना होगा। हिंदी की किताबों को महत्व देना होगा जहां भी सुविधा मौजूद है, सरकारी कार्यालयों में प्रार्थना पत्र या दरख्सातें हिंदी में लिखें। हिंदी वालों को चाहिए कि वह अंग्रेजी के साथ हिंदी में भी अपना पता लिखें। अपने घरों, दफ्तरों पर नाम की तख्तियां हिंदी में लगाएं। कार्यालयों में हिंदी का उपयोग हो, बैंक आदि में पैसा निकलवाते या चैक देते वक्त हिंदी का इस्तेमाल करें, सभी बस स्टैंडों और बसों, रेलवे स्टेशनों, नगर निगमों, कार्यालयों, तहसीलों और स्वास्थ्य केंद्रों के अलावा अन्य सभी जगह बोर्ड हिंदी में होने चाहिए। इन सुझावों के अलावा अन्य और इस तरह के आम सुझावों पर ध्यान दिया जा सकता।

हिंदी शिक्षा के दायरे को फैलाने के लिए हमें उसे घर-घर पहुंचना चाहिए, हिंदी पढ़नी चाहिए, हिंदी पढ़नी चाहिए, हिंदी और हिंदी लिखनी चाहिए, एक आंदोलन के तौर पर लोगों से संपर्क करना चाहिए। वाट्स एप या फेसबुक पर हिंदी का प्रयोग करें। सरकारी स्तर पर हिंदी के विकास के लिए लैंगवेज-लैब बनाई जाए। हिंदी को सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के रोजगार से जोड़ना भी आवश्यक है ताकि नई पीढ़ी अपने भविष्य को रोशन कर सके। प्रिंट मीडिया या विज्ञापनदाता समूहों को भी हिंदी पर ध्यान देना चाहिए ताकि हिंदी को रोजगार से जोड़ा जा सके।

जिन विद्यालयों, कॉलेजों में हिंदी के छात्रों की संख्या कम हो रही है, उनके शिक्षकों को आस-पास के क्षेत्रों में हिंदी के लिए अभियान चलना चाहिए। आज के आईटी युग में, हमें यह भी आकलन करना चाहिए कि क्या प्राथमिक स्कूलों में दी जा रही शिक्षा वर्तमान आईटी के लिहाज से परिपूर्ण है या नहीं? इस लिए हिंदी के सलेबस को आईटी आधारित

बनाया जाना चाहिए। हिंदी सॉफ्ट वेयर के विकास में काम करने की आवश्यकता है । क्योंकि अगर वर्तमान तेजी के युग में वह इस में पीछे रह गई तो पिछड़ जाएगी। हिंदी के विकास में लगे हुए सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों को एक मंच पर आकर वर्ष में कम से कम एक बार हिंदी की चुनौतियों और मुश्किलों पर चर्चा करनी चाहिए, उनको हल करने की कोशिश करनी चाहिए। रिक्त पड़े हिंदी पदों को केंद्रीय व राज्यों सरकारों को तुरंत भरना चाहिए। बेहतर हिंदी शिक्षकों और उसके सेवकों को आवार्ड देना चाहिए।

उपसंहार

अंत में, हम कह सकते हैं कि 21वीं सदी में हिंदी की हालात को देखते हुए कुछ जिम्मेदारियां हमारी भी बनती हैं। क्योंकि हिंदी भाषा के विकास के लिए दूसरों की प्रतीक्षा करने या किसी दिव्य शक्ति की प्रतीक्षा करने के बजाय, आप जो भी कर सकते हैं, अकेले करें या समूह के आकार में करें। इन जिम्मेदारियों को लागू करना हमारा पहला कर्तव्य होना चाहिए। मुझे पूरी उम्मीद है कि हालात और बेहतर होंगे। इन्हीं अंधेरे से सूरज निकलेगा। और हिंदी को उसकी वास्तविक जगह मिलेगी।

पिछली सदियों के इंसान को यदि जिन्दा करके कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप, आईपोड जैसी न जाने कितनी ही चमत्कारी वस्तुएँ दिखा दी जाए तो बेचारा गश खाकर गिर पड़े. आज की पीढी इन चीजों के बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकती. ज्ञान के क्षेत्र में इन्सानों की सबसे बड़ी उपलब्धि इन्टरनेट की खोज है, इस युग में जो इन्टरनेट उपयोग नहीं करता, तो वह व्यावहारिक रूप से निरक्षर माना जाता हैं.आज पूरी दुनिया में इन्टरनेट का उपयोग हो रहा हैं, भले ही कुछ देशों में यह प्रयोग कम हैं और कुछ में ज्यादा. भारत की 8 % से भी कम आबादी

इन्टरनेट का उपयोग करती हैं. यह अनुपात विकसित देशों में 90% आबादी की तुलना मे काफी कम हैं. सूचना प्रोद्योगिकी की शुरुआत भले ही अमेरीका में हुई हो, फिर भी भारत की मदद के बिना यह आगे नहीं बढ़ सकती थी. गूगल के एक वरिष्ट अधिकारी की ये स्वीकारोक्ति काफी महत्वपूर्ण हैं की आने वाले कुछ वर्षों में भारत दुनिया के बड़े कंप्यूटर बाजारों में से एक होगा और इन्टरनेट पर जिन तीन भाषाओं का दबदबा होगा वे हैं- हिंदी, मेंडरिन और अंग्रेजी. इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती हैं कि आज भारत में 8 करोड़ लोग इन्टरनेट का उपयोग करते हैं. इस आधार पर हम अमेरिका, चीन और जापान के बाद चौथे नंबर पर हैं. जिस रफ़्तार से यह संख्या बढ़ रही हैं, वह दिन दूर नहीं जब भारत में इन्टरनेट उपयोगकर्ता विश्व में सबसे अधिक होंगे.

आमतौर पर यह धारणा हैं कि कंप्यूटरों का बुनियादी आधार अंग्रेजी हैं, यह धारणा सिरे से गलत हैं. कंप्यूटर कि भाषा अंको की भाषा है और अंको में भी केवल ० और 1. कोई भी तकनीक और मशीन उपभोक्ता के लिये होती हैं. इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती हैं की उससे कैसे उपभोक्ता के अनुरूप ढला जाए. भारत के सन्दर्भ में कहें, तो आईटी के इस्तेमाल को हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं के अनुरूप ढलना ही होगा. यह अपरिहार्य हैं, क्योंकि हमारे पास संख्या बल हैं. इसी के मद्देनजर सोफ्टवेयर की बड़ी कम्पनीयां अब नए बाजार के तलाश में सबसे पहले भारत का ही रुख करती हैं. ऐसा किसी उदारतावश नहीं, बल्कि व्यावसायिक बाध्यता के कारण संभव हुआ हैं. हमने तो अभी बस इन्टरनेट और मोबाइल तकनीकों का स्वाद चखा हैं और सम्पूर्ण विश्व के बाज़ार में हाहाकार मचा दिया.

इन्टरनेट पर हिंदी के पोर्टल अब व्यावसायिक तौर पर आत्मनिर्भर हो रहे हैं. कई दिग्गज आईटी कंपनियां चाहे वो याहू हो, गूगल हो या कोई और ही सब हिंदी अपना रहीं हैं. माइक्रोसॉफ्ट के डेस्कटॉप उत्पाद हिंदी

में उपलब्ध हैं. आई बी ऍम , सन-मैक्रो सिस्टम, ओरक्ल आदि ने भी हिंदी को अपनाना शुरू कर दिया हैं. इन्टरनेट एक्सप्लोरर, नेट्स्केप, मोज़िला, क्रोम आदि इन्टरनेट ब्राउज़र भी खुल कर हिंदी का समर्थन कर रहे हैं. आम कंप्यूटर उपभोक्ताओं के लिये कामकाज से लेकर डाटाबेस तक हिंदी में उपलब्ध हैं.

ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का नाम ले, उससे संबन्धित हिंदी वेबसाइट आपका ज्ञानवर्धन के लिये उपलब्ध हैं. आज यूनीकोड के आने से कंप्यूटर पर अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं पर काम करना बहुत ही आसान हो गया हैं. यह दिलचस्प संयोग हैं की इधर यूनीकोड इनकोडिंग सिस्टम ने हिंदी को अंग्रेजी के समान सक्षम बना दिया है और इसी समय भारतीय बाजार का जबरदस्त विस्तार हुआ हैं. अब भारत सरकार भी इस मुद्दे पर गंभीर दिखता हैं और डी.ओ.इ. इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आउट को कंप्यूटर के लिये अनिवार्य कर सकता है.

हमें यह गर्व करने का अधिकार तो हैं ही कि हमारे संख्या बल ने हिंदी भाषा को विश्व के मानचित्र पर अंकित कर दिया हैं. यह भी एक सत्य हैं कि किसी भी भाषा का विकास और प्रचार किसी प्रेरणा, प्रोत्साहन या दया का मोहताज नहीं, यह तो स्वतः विकास के राह पर आगे बढ़ता रहता हैं. आज प्रिंट हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, फिल्में हो या सीरियल्स, डिस्कवरी, जिओग्राफिक हो या हिस्ट्री या हो कार्टून सभी पर हिंदी कि तूती बोलती हैं. ये सभी तथ्य हमें हिंदी के उज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त करते है.

हिंदी के भविष्य कि इस उजली तस्वीर के बीच हमें हिंदी को प्रोद्योगिकी के अनुरूप ढालना हैं. कंप्यूटर पर केवल यूनीकोड को अपनाकर हम अर्ध मानकीकरण तक ही पहुच पाएंगे, जरुरत हैं यूनीकोड के साथ ही इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आउट को अपनाने कि ताकि पूर्ण मानकीकरण

सुनिश्चित किया जा सके. हिंदी साहित्य या समाचार आधारित वेबसाइट के अलावा तकनीक, विज्ञान, वाणिज्य आदि विषयों पर वेबसाइट तैयार करने की. उपयोगी अंग्रेज़ी साईट को हिंदी में तैयार करने की. इन सबके बीच अपनी भाषा की प्रकृति को बरकरार रखते हुए इसमें लचीलापन लाना होगा. आइये, प्रोद्योगिकी के इस युग में हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के बीच हम इसके प्रति सवेदनशील बने और खुद को इसकी प्रगति में भागीदार बनाएँ.

संचार माध्यमों में हिंदी का इंटरनेट के माध्यम से दिन प्रतिदिन प्रचार और प्रसार हो रहा है। मीडिया के इस युग मे हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में हिंदी की विभिन्न वेबसाइट्स, हिंदी ब्लॉग्स(चिट्ठे) , सोशल मीडिया आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी भाषा के युग मे आधुनिक समय मे प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया , विज्ञापन ,पत्रकारिता, और सिनेमा के साथ साथ इंटरनेट भी हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है और भविष्य में भी योगदान देता रहेगा इसमें दो राय नहीं ।

इंटरनेट पर हिंदी का दायरा बहुत तेज गति से लगातार बढ़ रहा है ।

देश की उन्नति में राष्ट्रभाषा का अहम योगदान होता है। राष्ट्रभाषा ही देश के नागरिकों को एकता के सूत्र में पिरोते हुए हमारे विचार व संवाद एक-दूसरे तक पहुंचाती है। इसके चलते हिंदी देशवासियों के बीच एक सेतु की तरह है। इस सेतु को मजबूत व सुविधाजनक बनाने की जरूरत है। इससे सभी इसका उपयोग कर सकेंगे और मातृभाषा का फैलाव होगा। मातृभाषा को सम्मान मिलने से देश का गौरव भी बढ़ेगा। दुनिया में हमारी अलग पहचान होगी व हम दूसरों के लिए खास महत्व रखेंगे।

आज़ादी का अमृत महोत्सव
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
"CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
Azadi Ka Amrit Mahotsav
1911 से
राष्ट्र की प्रगति
में भागीदार
मना रहे हैं
111
स्थापना दिवस
तकनीक नई
सिद्धांत वही
Sir Sorabji Pochkhanawala
Founder
CONTRIBUTING TO THE
NATION'S GROWTH
SINCE 1911
CELEBRATING
111
FOUNDATION DAY
TECHNOLOGY CHANGES,
VALUES ARE TIMELESS
सेन्ट मोबाइल ऐप का साथ है तो कभी भी कहीं भी बैंक है
क्यू आर कोड (एण्ड्राइड/आईओएस) को स्कैन करें
और ऐप अभी डाउनलोड करें
BANK ANYTIME ANYWHERE WITH CENT MOBILE APP
Scan the QR code (Android / iOS) and download the app now
For Play Store (Android Device)
For App Store (IOS Device)
Visit: www.centralbankofindia.co.in | Follow us on: | CentralBankofIndia | For loan give a missed call on : 922 390 1111